ले० जी० पी० श्रीवास्तव।

विलायती उल्लू

(अत्यन्त हास्यपूर्ण उपन्यास)

लेखक—

नोंक झोंक

नाकमें दम, भड़ाम-

सिंह शर्मा, मारमार-

कर हकीम, साहब बहादुर,

उलट-फेर, मरदानी औरत, दुमदार

आदमी, गंगाजमुनी, मीठी हँसी इत्यादिके रचयिता—

श्री जी० पी० श्रीवास्तव

बी० ए०, एल० बी०,

प्रकाशक—

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी

ज्ञानवापी, बनारस।

निवेदन

प्रथम संस्करण का

विलायती समाजमें झेपुओंका चरित्र बड़ा ही उपहास-जनक होता है और वहाँके हास्य-लेखक भी ऐसे चरित्रपर अपनी लेखनीकी कुछ-न-कुछ करामात अवश्य दिखाते हैं। जिनमें मैकज्ञी साहबका एक छोटा-सा अँग्रेजी लेख "The Bashful man" बड़ा मजेदार है और एक अमेरिकन लेखकका उपन्यास "The Blundrs of a Bashful man" भी अपने ढंगपर अच्छा हुआ है। हमारी भी इच्छा अपने पाठकोंके मनोरञ्जनार्थ ऐसे चरित्रकी लीलाएँ दिखानेकी थी। मगर हमारे समाजमें झेपुओंकी कलई खुलनेका न वैसा मौका होता है और न ऐसे चरित्र वैसी उपहासकी मूर्तियाँ बन सकते हैं। इसलिये हमें भी अपने इस उपन्यासके लिये विलायती समाजके चरित्रको लेकर उसका विकास उसीके अनुकूल घटनाओं द्वारा दिखाना पड़ा। हाँ इसकी नींव पक्की करनेके लिये शुरूमें पाँच अध्यायों तक अंग्रेजी सामग्रीसे कुछ घटनाओंकी सहायता भी ली गयी है; मगर उनका प्रदर्शन इस ढंगसे किया गया है ताकि हमारा हिन्दी-संसार उनका आनन्द पूरे तौरसे ले सके और आगे बाकी कुल अपने ही मसालेसे काम लिया है। आशा है, इस तरह यह

हिन्दीकी अपनी चीज होकर इसके द्वारा हमारे हिन्दी-संसारका कुछ मनोरञ्जन हो सकेगा; वर्ना कोरे अनुवादके बलपर तो आपका यह "विलायती-उल्लू" खाली चमगादड़ बनकर ही रह जाता; क्योंकि हास्यका मुख्य आनन्द उपन्यास तथा गल्पकी शैलीपर निर्भर करता है, जो प्रत्येक हास्य लेखककी अपनी होती है और वह विदेशी भाषामें अपने प्रभाव सहित कभी अनुवाद नहीं हो सकती। घटनाएं भी विशेषकर हास्यकी प्राय: ऐसी होती हैं, कि जो भिन्न-भिन्न देशोंमें भिन्न-भिन्न दृष्टिसे देखे जानेके कारण अनुवादमें अपना मजा बहुत कुछ खो बैठती हैं।

इसके लिखनेमें इस बातका भी ध्यान रखा गया है कि इसके प्रत्येक अध्यायसे एक-एक सम्पूर्ण गल्प बने और साथ ही सिल-सिलेवार सब मिलकर उपन्यासका भी काम दे। इसके बहुतसे अंश पत्रोंमें पहले "काठका उल्लू" के नामसे निकल चुके हैं। इस रचनाका पहले यही नाम रखनेका इरादा था; परन्तु इस बीचमें इन नामसे एक लेखककी एक दूसरी किताब छप गई। इसलिये इसका नाम बदलकर अब "विलायती उल्लू" रखना पड़ा।

गंगाश्रम, गोंडा
जनवरी १९३२

—जी० पी० श्रीवास्तव

विलायती उल्लू

डिनर

(क)

कोई किसीमें नाम पैदा करता है और कोई किसीमें। मगर मैंने खास झेंपमें नाम कर रखा है। कोई लड़नेमें अपनी बराबरी नहीं रखता, कोई इल्ममें, कोई हुनरमें, कोई मार-पीटमें, मगर मैं झेंपमें एकता हूँ। दावेसे कहता हूँ कि इसमें कोई मेरा पासंग भी नहीं पा सकता! रुस्तमने कुश्तीमें भले ही किसीको पटखना दिया होगा, लेकिन झेंपकी काट-छाँट ही और है। इसमें उनका दाव-पेंच एक नहीं काम आ सकता। इस अखाड़ेमें तो मैं ही हूँ। यह खुशकिस्मती अकेले मेरी ही कोशिशसे नहीं नसीब हुई, बल्कि ईश्वरने भी बड़ी मदद की है। क्योंकि उनके यहाँ जब लज्जा बँट रही थी तब मेरा ही हाथ सबसे ऊँचा और बड़ी देरतक फैला रह गया था। बस, वह भी चकमा खा

गये। कुछ तो अपनी भूलसे और कुछ मेरी लापरवाहीसे दुनियाभरका हिस्सा मुझीको दे बैठे। तभी तो जरा-जरासी बातमें सारे बदनका खून नाक ही पर धावा बोल देता है। हाथमें पैरमें बिना बुलाये एकदम चार-पाँच सौ डिगरीकी जूड़ी आ जाती है और मियाँ दिल अपनी चालकी तेजी अलग दिखाने लगते हैं। जो मुझे कोई उस वक्त टोक बैठे। ऐ! है! तब फिर देखिये तमाशा, हक्की-बक्की बन्द, क्या मजाल जो एक शब्द भी मुँहसे निकल जाय? चेहरेपर वह सिकुड़नें और वह हवाइयाँ उड़ती हैं और पाकिटों और बटनोंपर ऐसी जल्दी-जल्दी हाथ चलते हैं कि बेदाम कठपुतलीका नाच दिखाने लगता हूँ।

मेरी हालत यह, और 'फ्लोरा' के बाप मिस्टर फ्रेण्ड-लीके यहाँ डिनर! जिस वक्तसे निमन्त्रण आया है हौलदिल समाया हुआ है और मुसीबत यह कि पापा दो दिन पहले यहाँसे अम्दन टल गये ताकि इस डिनरमें मैं ही बुलाया जाऊँ। उनकी अनोखी समझमें मेरी झेंपकी भड़क दूर करनेका यही इलाज है कि मैं लोगोंसे बराबर मिलता जुलता रहूँ, बल्कि दावत, जलसा, नाच वगैरहमें जबरदस्ती घुसता फिरूँ और इसी ख्यालसे उन्होंने जिस तरहसे घोड़े निकाले जाते हैं उसी तरहसे मुझे सोसाइटीमें निकालनेकी बड़ी-बड़ी कोशिशें

भी कीं। मगर बेकार। इलाज ही गलत तो मेरा या मेरी बीमारीका क्या कसूर ? क्योंकि यह बीमारी तो कम्बख्त ऐसे ही मौकोंपर और भड़कती है।

निमन्त्रण पाकर कहाँतक बगलें झाँकता ? आखिर खोपड़ी और दिलके हुरपेटोंसे मंजूर करना ही पड़ा। क्योंकि मिस्टर फ्रेण्डली पापाके दोस्त ठहरे, उसपर 'फ्लोरा' के बाप भी हैं। पापाकी नाराजगीसे खोपड़ी पिलपिली हुई जा रही थी तो फ्लोराके बिगड़नेसे दिलका कचूमर निकल रहा था, हालां कि झेंपके मारे आजतक फ्लोरासे बोलनेकी मेरी हिम्मत नहीं पड़ी थी, फिर भी दिल ही दिल में उसे प्यार तो करता हूँ।

मगर ज्यों-ज्यों दावतका वक्त नजदीक आने लगा त्यों-त्यों मेरा दम फूलने लगा। हर सांसमें यही दुआ निकलती थी कि या ईश्वर, मुझे कोई छूतकी बीमारी हो जाय तो झट डाक्टरका सार्टिफिकेट भेजकर किसी तरह अपनी जान बचाऊँ। मगर अल्ला मियाँ भी इस वक्त बहरे हो गये। गरज-मन्दोंकी कोई सुनता है कि वही सुनते ? खैर, ठीक वक्त पर मैं मिस्टर फ्रेण्डलीके यहाँ डिनर खाने चल खड़ा हुआ। इतनी अक्लमन्दी की कि तीन घण्टे पहले ही ऐसे मौकेपर क्या करना चाहिये और कैसी-कैसी बातें करनेकी जरूरत है, सोसाइटीके

नियम सिखानेवाली किताबोंसे छांट-छांटकर बरजबान रट लिया।

ज्योंही मिस्टर फ्रेण्डलीके बँगलेकी फुलवारीमें पहुंचा त्योंही खाना खानेकी घण्टी खनखनाई। अब क्या था? देर हो गयी। बना बनाया सब मामला बिगड़ गया। हड़बड़ा कर जल्दीसे सरपर पाँव रखकर दौड़ा। मगर क्या कहूँ अपनी कम्बख्ती कि सामनेसे आफतका मारा एक माली खाद भरी टोकरी लिये लपका आ रहा था। भड़ाम-से टक्करकी आवाज हुई। अन्धेरेमें यह पता न चला कि हम दोनोंमें से कौन ऊपर हुआ और कौन नीचे, पर इतना मालूम है कि टोकरी सबके ऊपर विराज रही थी। मालीके मुँहसे चोर-चोरकी पुकार सुनकर सब एरा-बेरा, खानसामा-बानसामा, झाड़ू-बँहारू, लठिया-बठिया, बल्लम-बल्लमसे लैस हो टूट ही तो पड़े और दे दनादन दे दनादन जैसे कोई रूई धुने लगे अन्धाधुन्ध पीटने। मगर वाहरे! माली और टोकरी! क्या पक्की किलाबन्दीकी थी कि बन्देपर एक भी छड़ी न पड़ी। मौका पाते ही मैं एककी टांगोंके बीचसे दुम झाड़कर निकल भागा और सीधे बरामदेमें जाकर दम लिया। उधर सुनिये, नौकरोंकी पलटन अबतक उस खादवालेहीको चोर समझकर बाँधने

छांदनेमें बड़ी हिम्मत दिखा रही थी।

अभी मैं हांफता हुआ अपने कपड़ोंकी गर्द झाड़ ही रहा था कि आयाने बिना समझे बूझे कि मैं जानवर हूँ या भूत, लाइब्रे-रीका रास्ता बता दिया। दरवाजेपर ही मिस्टर फ्रेण्डलीसे मुठभेड़ हो गयी। बाल बाल बच गया, नहीं तो फुलवाड़ी-सी घटना यहांपर भी हो जाती। मगर संभलनेमें झिझककर जो पीछे हटा तो एकदम आयाके ऊपर फट पड़ा। वह करारा ठसका लगा कि वह चार-पांच पटखनियां खाती हुई एक सफे-दीकी नादमें लुढ़क गयी। मोटा-मोटा बदन उसीमें पैठ गया और ऐसा अटका कि जब तक नाद नहीं फोड़ी गयी तबतक वह सफेदीमें फूलती रही।

इन बखेड़ेमें मिसेज फ्रेण्डलीको सलाम करनेका ध्यान बिलकुल जाता रहा। याद आते ही कुर्सीपरसे चमककर उठ खड़ा हुआ। नया सीखा हुआ सलाम वह भी बिना रफ्तके, भला ऐसी घबड़ाहटमें कब काम दे सकता था? पैतरा बदलनेमें भूल हो ही गयी। मुंह बजाय उत्तरके दक्खिनकी ओर हो गया। करनेको सामना और कर गया पीठ और बांई टांग तासरा जगह लानेमें फ्रेण्डली साहबका पैर जो मेरे पीछे दुमका तरह डटे हुए थे, कुचल बैठा। मगर वाह री उनकी सहनशीलता! उंगलियां चाहे

भर्ती हो गयी हों, पर उन्होंने ज़बानसे उफ़! तक न की। मेरा तो दम सूख गया था। हाथ-पांव फूल गये थे। खैर! उनके बार-बार 'कुछ नहीं' 'कुछ नहीं' कहनेसे ज़रा जानमें जान आयी।)

(ख)

बातचीतकी धारामें मैं भी अटकता-फटकता बहावपर आ ही गया। रटी हुई बातें एकाध फेरफारकर ज़बानसे क्या निकल गयीं कि समझ लिया अब बाज़ी मार ली। अपनी ज़बांमर्दी देखकर तबियत फड़क उठी और अब मैं ज़रा अकड़कर इधर-उधर गर्दन घुमाने लगा। लाइब्रेरीमें अच्छी-अच्छी किताबें सजी हुई थी। सामने आलमारीमें ज़ोनाफनकी कई सुन्दरी जिल्दें देखकर मैं चकराया कि यह कौन-सी बला 'एनसाइक्लोपिडिया ब्रिटानिका' की तरह नयी पैदा हुई है। उचककर हाथ लपका ही बैठा। मुझे ऐसा करते हुए देखकर फ्रेण्डली जल्दीसे उठे और मेरी तरफ शायद इसलिये बढ़े कि खुद किताब निकालकर मुझे इस तकलीफ़से बचावें, मगर मैं भला उन्हें ऐसा करने कब देता? जबतक वह मेरे पास पहुंचे तबतक एक किताबका सिरा पकड़कर मैंने खींचा। एक-दो बार ज़ोर करनेसे जब न टसका तब कसके झटका दिया। पर हाय!

हाय! बजाय किताबके एक लकड़ीका ड्राज जो कम्बख्त रंगोन जिल्दोंकी शकलका बना हुआ था भड़भड़ाकर निकल आया और मेरी खोपड़ी तोड़ता-फोड़ता धड़ामसे मेजपर आ गिरा। उल्टी हुई दावातोंसे रोशनाईकी नदी बह चली। लोग मेरी तरफ दौड़ पड़े। मुझे कुछ न सूझा तो सर झुकाकर झट अपने रेशमी रूमालसे मेजपरकी रोशनाई साफ करने लगा। इतनेमें ही खाना खानेकी घण्टी घनघना उठी। लोगोंका ध्यान उधर बट गया। मिस्टर फ्रेण्डली भी मुझे दम-दिलासा देकर कि कुछ नुकसान नहीं हुआ और मुझे अपने साथ खानेके कमरेमें चलनेके लिये कहकर औरोंके पीछे चलते हुए।

अब जाना कि पहली घण्टी जिसने मुझे यकायक घबड़ा दिया था, वह सिर्फ यह बतानेके लिये थी कि डिनरमें बस अब आध घण्टेकी देर है। लोगोंसे पिछड़ जानेके कारण मैं खानेके कमरेमें पहुँचनेके बदले एक ऐसे कमरेमें घुस पड़ा, जहां बड़ी अम्मा यानी मिस्टर फ्रेण्डलीकी मां लुढ़कनेवाली कुर्सी—Rocking chair में धंसी हुई हाथमें दूधका भरा कटोरा लिये अपनी प्यारी बिल्ली पुसीको गोदमें बिठाये दूध पिला रही थी और नीचे टामी दुम हिला-हिलाकर बुढ़ियाके मौतकी दुआएं मांग रहा था। तुरन्त

ख्याल आया कि मैंने कुत्तेको प्यार तो किया ही नहीं, जो सोसाइटीके नियमोंमें एक खास नियम है। जीमें आया, यह भूल क्यों रह जाय ? लगे हाथों इसको सुधारता चलूं।

मगर टामी मेरे पहुँचते ही दुम दबाकर कुर्सीके नीचे दुबक गया। सिटी वीटी बजानेसे जब वह अखाड़ेमें नहीं आया, तब मैंने उसका पट्टा पकड़कर घसीटना चाहा। लेकिन हाय! हाय! उस कम्बख्तको न जाने कौन-सी शैतानी सवार हो गयी कि कुर्सीके नीचे उछल पड़ा और इस बेतुके ढंगसे कि कुर्सी दनसे उलट गयी और कलाबाजी खाकर दूर जा गिरी। बड़ी अम्माका हाल न पूछिये। जमीनपर चित, दोनों टांगें आसमानकी तरफ, चेहरेपर औंधा हुआ कटोरा ढकनेकी तरह जकड़ा हुआ और मुंह, गर्दन, बाल सब दूधसे लथपथ। फिर तो दूध चाटनेके लिये टामी और पुसीमें घोर युद्ध छिड़ गया। देखते-ही-देखते बड़ी अम्माकी शकल कुरुक्षेत्रका मजा देने लगी और नाक और बालोंको कम्बख्तोंने सोमनाथका फाटक समझ लिया था या शिकारियोंकी चाँदमारी कि उनपर ताबड़तोड़ दस बीस हमले तो हुए होंगे। मगर वाहरी बुढ़िया! ईश्वर जाने कुर्सी लुढ़कते ही ऐंठ गयी थी या बेहोश हो गयी थी की जरा मिनकीतक नहीं।

(ग)

मैं बदहवास आकर खाना खानेकी कुर्सीपर गिरा। मेरी गैरहाजिरीसे वहां कुछ हलचल तो मची हुई थी ही उसपर मेरी घबड़ाहट और उखड़ी-उखड़ी बातोंने और भी बेचैनी फैला दी। खैर! सब मेरे बारेमें पूछताछ कर ही रह गये। किसीने बुढ़ियाकी कोई खोज-खबर नहीं ली। शायद वह बुढ़ापेके कारण सबके साथ बैठकर खाना खुद ही नहीं पसन्द करती थी या उसके बेटे साहबने अपनी मांको इस सोसाइटीके लिये मुनासिब न समझा हो; क्योंकि वह जरा अन्धी भी थी।

अभी मेरे दिलके धड़कनमें कमी नहीं हुई थी कि कोई मेरी फैंसी वेस्ट कोटकी तारीफ कर बैठा। मैं उसे धन्यवाद देनेके लिये भड़ककर उठ खड़ा हुआ। तमीज सिखानेवाली किताबमें ऐसा ही लिखा हुआ था। मगर अररर! जलते हुए शोर्वेकी तश्तरी जिसे मैंने बिलकुल मेजके किनारे रख ली थी, खड़बड़ाकर मेरे ऊपर उलट पड़ी। जांघ जल उठी और बजाय धन्यवादके मेरे मुँहसे निकला—'उफ! उफ! धत्त तेरेकी!" सब छूरी कांटा छोड़कर मेरी तरफ छूटने

लगे। मैं बौखला गया और झटसे कह बैठा—"कुछ नहीं, कुछ नहीं! धन्यवाद! धन्यवाद! उफ! धन्यवाद!" लोग हँस पड़े और मैं घबड़ाकर जल्दीसे अपनी जगहपर बैठने लगा। मगर अररर! कुर्सी कमबख्त दगा दे गयी। उठनेमें इतना पीछे हट गयी थी कि बैठते वक्त जमीनतक इसका कहीं पता नहीं चला। मेरी खोपड़ी अलबत्ता उसकी सीटपर जाकर अटकी। यही गनीमत हुई कि हँसीकी आवाज उस वक्त इतने जोरोंसे गूँज उठी कि इस धम्मड़में किसीको मेरे गिरनेका ख्याल करना बहुत मुश्किल था।

मगर भड़कनेवाले मिजाजपर कौन भरोसा? जहाँ एक दफे भड़का, वहाँ फिर इसका सम्हालना गैरमुमकिन होता ही है। तभी तो कभी बोतल गिरी, कभी गिलास हाथसे छूटा, कभी कुत्तेकी दुमपर पैर पड़ा, गरज यह कि इसी तरह सैकड़ों परेशानियां एकबारगी फट पड़ीं और उनमें मैं इस बुरी तरह उलझा रहा कि मैंने अबतक एक दफे भी दिलकी खबर नहीं ली और इसीलिये मैं फजोराको उस वक्ततक देख नहीं सका, जबतक उसने अपना प्याला उठानेके लिये मुझसे खास तौरसे नहीं कहा। उसने भी मुझे ऐसे वक्त टोका, जब मेरे कांटेमें एक बड़ा-सा जलता हुआ समूचा आलू हिल रहा था। एक तो फजोराको यकायक अपने सामने पानेकी बदहवासी, उसपर

उसके हुकुमकी तामीलीकी परेशानी, मुझे कुछ न सूझा तो अपना हाथ खाली करनेके लिये आलूको गपसे मुँहके भीतर ठूँस लिया। गजब हो गया! न निगलते बन पड़ा न उगलते। हलक, जबान और तालूसे लेकर खोपड़ी तक झुलस गयी। आंखें निकल-सी पड़ीं। नाक धौंकनी-सी चलने लगी। बहुत कुछ जब्र सब्र और रोक-थाम करनेपर भी वह कम्बख्त मेरी इज्जतको खाकमें मिलानेवाला आलू मेरे मुँहसे उछल हो पड़ा। अब क्या था, दवाइयोंकी भरमार हो गयी। किसीने तेजकी प्याली बढ़ायी, किसीने पानी दिखाया और किसीने बताया कि एक घूँट हल्की ब्राण्डीका मुँहमें डालो।

आखिर सबको राय ब्राण्डीपर ही ते पायी। खानसामाने झट एक गिलास ब्राण्डी दी और मैंने भी आंख मूंदे उसे मुँहमें एक बारगी झोंक ली। अरे! बाप रे, जान निकल गयी। एक तो मुँहमें पहले ही फफोले निकल चुके थे, दूसरे उस पाजी खानसामाने ईश्वर जाने धोखेसे या बदमाशीसे ऐसी तेज ब्राण्डो दो कि मुँह एकदम ताव खाया हुआ तन्दूर हो गया।

दोनों हाथोंसे मुँह थाम लिया। नाक और उँगलियोंके बीचसे शराबका फौहारा छूटने लगा। आंखोंके सामने

अंधेरा छा गया। सुध-बुध जाती रही। चट जेबसे रूमाल निकाल वही रूमाल जो अबतक रोशनाईसे तरबतर थी मुँहका पसीना पोंछने लगा। मेरी इस कारवाईपर सबके सब नौकर चाकरतक हँस पड़े। मिस्टर फ्रेण्डली भी अपनी हँसी न रोक सके। बदनमें आग लग गयी। अब मिजाज काबूमें रखना गैरमुमकिन हो गया, मैं पिनपिनाकर उठा और होशकी गठरी पटक लैम्प, मेज, कुर्सी, गुलदस्ता-उलदस्ता गिराता-पटकता, तोड़ता-फोड़ता हुआ घर भागा। ऐसे डिनरकी ऐसी तैसी!

टी पार्टी

(क)

बुख़ार हो, जूड़ी हो, हैजा हो, प्लेग हो, दुनिया भरकी सब बीमारी एक बारगी हो, मगर भई झेंपकी बीमारी न हो। उन सबकी तो कुछ-न-कुछ दवाइयाँ हो सकती हैं, मगर इसकी नहीं। यह मर्ज़ हो लाइलाज है। मगर पापाको कौन समझावे? बैठे, बैठाये आज 'टी पार्टी' (चायपानीकी दावत) कर बैठे, मेरी झेंप मिटानेके लिये। भला इन बातोंसे कहीं मेरी झेंप दूर हो सकती है? यह तो सच पूछिये, आगमें घी छोड़ना है। सोते हुए बरोंको खोद-खोदकर और जगाना है; क्योंकि यहाँ तो मिजाजका रंग ही और है। आदमियोंकी गन्धतकसे घबड़ाता है और औरतोंकी परछाहींसे तो एकदम उखड़-पखड़कर मटिया मेट हो जाता है। यह सब कुछ जानते हुए भी पापाने एक दो नहीं, पूरी दर्जनभर औरतोंका न्योता दिया है। ईश्वर ही खैर करे!

पापाने बुलाकर मुझे अच्छी तरहसे समझा दिया कि देखो टाम, आज बहुतसी "लेडियाँ" (स्त्रियाँ) आयेंगी।

उनसे तुम्हारी जान-पहचान करायी जायगी। निहायत भलमनसाहतसे मिलना। खबरदार! कोई बेवकूफी न करना। वगैरह! वगैरह! वगैरह! मगर इधर तो लेडियोंके नामहीसे होश पैतरे हो गये। बात किस कम्बख्तकी समझमें आती?

पार्टीके जब पन्द्रह मिनट रह गये, तब पापा मुझे ढकेलके 'ड्राइङ्ग रूम' (बैठक) में बैठाल गये, ताकि मेहमानोंका मोहड़ा मुझहीको रोकना पड़े। मैंने अपने दिलको बहुतेरा कड़ा किया और खूब समझाया कि "मर्दका चोला पाके औरतोंसे शर्म!" छिः! मर्द भी कहीं झेंपते हैं? औरतें झेंपती हैं। हाँ टाम, आज इन लोगोंको दिखा दो कि मैं भी कुछ हूँ। इस तरहसे उठना, इस तरहसे हाथ मिलाना, यों गर्दन टेढ़ी करके बोलना·········

बाहर लड़कियोंकी सुरीली हंसी सुन पड़ी। सरसे पैरके नीचेसे जमीन निकल गयी। समझाना-बुझाना खाकमें मिल गया। घबड़ाहटके मारे दम निकलने लगा और मैं पागलकी तरह कमरेमें चारों तरफ दौड़ लगाता हुआ झट एक ऊँची आलमारीके नीचे घुस गया।

"अरे! यहाँ कोई भी नहीं।"

"मिस्टर टाम गाबुलको तो जरूर यहाँ होना चाहिये।"

"अजी, तुमने भी किसका नाम लिया ? मुझे तो उसकी शकल फूटी आँख नहीं भाती।"

"हाँ सचमुच ऐसा झेंपू मुँहचोर दुनियामें शायद ही कोई हो।"

"आदमी काहेको भड़कता हुआ जानवर है।"

"हाँ जी। नाक आस्मानकी ओर जा रही है, मुँह चुकन्दर-सा। ऐसी भी शकल भला किसीकी होती है ?"

अब तो मारे गुस्सेके मैं आपेसे बाहर हो गया और झल्लाकर अपना पैर पटक दिया।

"एँ ? यह क्या ? यह आवाज कैसी ? कोई कुत्ता होगा ?"

इतनेमें धड़धड़ाते हुए मेरे पापा घुस आये और आलमारीके पास खड़े होकर पूछा—"ऐं ? टाम कहाँ गया ?"

इसके जवाबमें मैंने चुपकेसे हाथ बढ़ाकर पापाकी टाँगमें इसलिये चिकोटी काटी कि वह समझ जायँ कि मैं बड़े मजेमें हूँ और वह मेरे बारेमें पूछताछ न करें।

मगर वाह री उनकी अक्ल ! बिचक उठे। लड़कियाँ पूछने लगीं—"क्या हुआ क्या ?"

मैंने झट दूसरी चिकोटी काटी कि अब भी खैरियत है, अक्लसे काम लें। फ़िर भी अफसोस ! वह इशारा न समझे और कूदकर अलग खड़े होकर बोले—"लाना तो मेरा डंडा

इसके नीचे कोई कुत्ता घुस गया है।"

बस, आफत हो गया। उन पाजी मिसोंने खेल बना लिया और अपनी-अपनी छतरियोंसे आलमारीके नीचे इस तरह कोंचना शुरू किया जैसे कोई सूअरका शिकार करे। इतनेमें पापा भी डंडा लेकर पिल पड़े। सबको हटाकर लगे अपनी जवांमर्दी दिखाने। फिर तो 'धत्त-धत्त' करते हुए उन्होंने—हाय! हाय!—वह डण्डोंके रेले और ऐसी-ऐसी फौजी ठोकरें लगायीं कि कहते अब भी पसलियाँ टूटती हैं। यहींतक नहीं, बल्कि आखीरमें उन्होंने ही मेरी टाँग पकड़कर निकाल बाहर किया और तब चोर समझकर कुछ और बहादुरी दिखायी।

"अरे! यह तो मिस्टर टाम गाबुल हैं।"

"ऐं—कौन? टाम क्यों बे यह तुझे क्या सूझी थी?"

छोकड़ियां हँसते-हँसते लोट पोट हो गयीं। मैं बिलबिलाकर वहाँसे किसी तरह लंगड़ाता हुआ भागा। उसी वक्त एक जहरकी शीशी खरीद लाया और एक खतमें लिखा।

पापा, मैं इस जिन्दगीसे घबड़ा उठा। मेरा मुँह चुकन्दर-सा है, नाक आसमानकी ओर जा रही है। मैं बड़ा झेंपू और मुँह चोर हूँ, बेवकूफ हूँ। बस, यही मेरी आखिरी बेवकूफी है। हमेशाके लिये सलाम। मेरी कब्रपर लिखा

दीजियेगा, कि झेंपकी बीमारीसे मरा। जरूर।

आपका—टाम

"इसको पापाके लिये" लिखनेके बाद जहर पीकर मैं अपनी चारपाईपर लेट गया।

(ख)

इस दफे मैं नहीं झेंपा, मेरी मौत झेंप गयी। मुझसे बेवकूफी नहीं हुई। दवा बेचनेवालेने बेवकूफी की। देनेको जहर और दे बैठा शरबत। फिर मौतको क्या गरज पड़ी थी जो अपने आप आती? हां, उसकी इन्तजारीमें नींद अलबत्ता आ गई और थकावटके मारे खूब गहरी। क्या मजेके खर्राटे भर रहा था। मगर न जाने किसने झकझोरकर मुझे चारपाईसे गिरा दिया। आँख खुली तो देखता क्या हूं कि तमाम घर भरमें कुहराम मचा हुआ है। कोई इधर चिल्ला रहा है; कोई उधर दौड़ रहा है। पापा एक हाथमें मेरा खत और जहरवाली शीशी लिये सरपर आसमान उठाये हुए हैं।

"दौड़ो जल्दी डाक्टरको बुलाओ, पानी गर्म करो, पानी। अरे! काई जलता हुआ कहवा बनाओ। हाय! हाय! टामने जहर खा लिया। देखो, देखो इसका दम निकल रहा है। इसे पकड़कर दौड़ाओ। किसी तरकीबसे कै कराओ कै। अरे! टाम, यह तूने क्या किया कम्बख्त?"

मुझे चार आदमियोंने पकड़कर कमरे भरमें खूब दौड़ाया। उसके बाद दूसरा गिरोह आया। उसने झटसे मुझे उल्टा टाँग दिया और लगा मेरा पेट दबा-दबाकर झटका देने। मैंने समझ लिया कि तब जान नहीं निकली थी तो अब जरूर निकल जायगी। मेरे मुँहमें कमानी लगा दी गयी कि बन्द न होने पावे। एकने झटसे घिसकर ताँबा पिला दिया। दूसरा दौड़ा-दौड़ा आया और धधकता हुआ कहवा मेरे मुँहमें उड़ेल गया। कुछ भीतर गया कुछ बाहर यों सारा मुँह भीतर बाहर झुलस गया।

डाक्टर सबसे बड़ा कसाई निकला। आते ही कम्बख्त मुझे लिटाकर मेरी छातीपर चढ़ बैठा और एक बड़ीसी रबड़की नली मेरे हलकमें ठूँस कर सीधे मेरे पेटमें पहुँचा दी। इसके बाद एक बाल्टी भर गर्म पानी मँगवाकर मेरे पेटमें भरने लगा, गोया मेरा पेट आदमीका पेट नहीं गुसलखानेका नाबदान था। बेहद छटपटाया, हाथ पैर मारे, चिल्लाया, जहाँतक बस चला मैंने सब कुछ किया। मगर उस हत्यारेने एक न मानी, बल्कि सब पानी भर कर अब उल्टा 'पम्प' करने लगा। जब उस बेवकूफ को यही करना था तो कम्बख्तने पहले पानी क्यों भरा था? उफ्! कलेजा निकल पड़ा। मुँहतक आँतें उलट पड़ीं। इस आफतमें सबसे बड़ी मुसीबत यह थी कि घर मर्द-औरतोंसे खचाखच भरा हुआ था और सभी उल्लूकी तरह आँखें फाड़-फाड़ कर मुझे घूर रहे थे।

मैं एकबारगी बड़े जोरसे चिल्ला उठा—"हाय! हाय! सब मुझे देख रहे हैं। अरे इन लोगोंको जल्दी बाहर करके दरवाजा बन्द कर दो, नहीं तो मुझसे मरते न बनेगा। मुझे बड़ी शर्म लग रही है।"

डाक्टरसाहबने सांस लेकर बड़ी सञ्जीदगीसे कहा—"मैंने आपके लड़केको बचा लिया। अब यह जी जायगा।"

"हर्गिज नहीं। डाक्टरकी ऐसी-तैसी। इसने मेरी पूरी जान निकाल डाली है। मैं जरूर मर जाऊँगा। अब जीना बेकार है।"

फिर भी पापाने उस शैतानको खाली धन्यवाद ही नहीं दिया, बल्कि लम्बी-चौड़ी फीस भी। इस अफसोससे मैं और मरा जा रहा हूँ।

प्रेम-प्रस्ताव

(क)

"नकटा जीये बुरा हाल।" बिलकुल गलत; क्योंकि वह मुझसे हजार गुना अच्छा है! नाकपर जरा रूमाल लगा लिया, बस सब ऐब गायब। मगर यहाँ तो सूरतपर पलस्तर भी कर दो, तब भी इसकी बौखलाहटका रंग छिप नहीं सकता। चेहरा क्या एक घूमता हुआ कन्दील है। गिरगिट भी इसकी रंग बदलनेवाली आदतके आगे झेंप गयी। शीशेके सामने पीला-नीला बरसाती मेढक है तो लोगों के सामने लाल-लाल आलू बुखारा। न जाने कहाँसे इतना खून आ जाता है कि मुँह एकदम टमाटर हो जाता है। इसीलिये आखिरमें हैरान होकर मैंने लोगोंसे मिलना-जुलना तक छोड़ दिया। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी। जब किसीके सामने निकलना ही न पड़े तो झेंपनेकी जरूरत कुछ भी नहीं।

मगर इस हालतमें भी तो चैन न था। (फलोराको देखने-के लिये तबियत बुरी तरह छटपटा रही थी। देखना तभी मुमकिन हो सकता था, जब उसके सामने जाता और

सामने आनेकी हिम्मत न थी—अपनी झेंपनेवाली आदतके मारे। कोई ऐसी तरकीब नहीं, जो मैं उसे छिपकर देख लिया करूं और वह मुझे देखने न पाये। यही सोचता हुआ मैं एक सुनसान नालेपर चुपके-चुपके मछलीका शिकार कर रहा था, क्योंकि अपने कमरेमें हरवक्त बन्द रहनेके बाद दुनियाकी नजरोंसे बची हुई मेरे लिये यही एक इतमिनानकी जगह थी।

इतनेमें एक सुरीली आवाज सुनाई पड़ी—"यही मि० टाम गाबुल हैं।" इसके बाद हँसीकी आवाज आयी भड़ककर पीछे देखा। इधर देखा, उधर देखा। जब कोई नहीं दिखाई पड़ा, तब मैंने कड़ककर कहा—"अच्छा, तो फिर? किसीको क्या?"

"माफ कीजिये। हमलोग टहलते-टहलते नालेके इस पार निकल आये और अब लौटनेका रास्ता भूल गये हैं। अगर तकलीफ न हो तो मिहरबानी करके बता दीजिये। अब पुल किस तरफ और कितनी दूर है?"

धत् तेरेकी! सब तरफ देखा था। मगर सामने देखा ही नहीं। ठीक मेरी नाककी सीधमें नालेके उस पार 'फ्लोरा' और एक और लेडी साहबा खड़ी मुस्कुराती हुई मुझसे रास्ता पूछ रही थीं।

एक तो औरतें, उसपर होश गुम करनेवाली उनकी मुस्कुराहट! आँखोंमें चकाचौंध छा गयी। घबराकर मैं टोपीके बदले चायकी हाँड़ी अपने सरपर रखने लगा।

"इतना परेशान होनेकी जरूरत नहीं है। आप सिर्फ रास्ता बता दीजिये।"

जी हाँ। 'गुड इवनिंग' एक नहीं दो। एक आपको और एक आपको। बहुत दूर है पुल, हाँ पुल—"

बीचहीमें दोनों हँस पड़ीं। भला इसमें कौन-सी हँसनेकी बात थी? मगर 'फ्लोरा' को मैं प्यार न करता होता, तो मैं उन-लोगोंकी इस बदतमीजीपर जरूर आग-बबूला हो जाता। फिर भी मेरे लिये अब कुछ कहना गैर मुमकिन हो गया और डगन-बगन वहीं छोड़, मैं इस पार नालेके किनारे-किनारे एक तरफ बड़ी तेजीसे चलने लगा।

"अरे कहाँ चले, सुनिये तो।"

"जी हाँ, इसी तरफ चले चलिये। उधर नजदीक ही नाला पतला है और उसको पार करनेके लिये उसपर पेड़का तना रखा हुआ है। पुल तो उधर है—बड़ी दूर।"

वाह रे मैं! इतनी बात न जाने कैसे इतनी सफाईसे कह गया कि खुद मुझीको ताज्जुब हुआ। इसी खुशीमें कलेजा बासों उछल पड़ा और चाल भी तो तेज होकर

हुल्का हो गयी। अगर वह लोग मुझे कदम-कदमपर रुकनेके लिये न कहती आतीं तो शायद मैं उस वक्त दौड़ने लगता। तब भी जब मैं इस तरफ उस पेड़के तनेके पास जाकर अड़ गया और ढाई सौ दफे लम्बी-लम्बी साँस लेकर अपने मिजाजको अच्छी तरह काबूमें कर चुका, तब कहीं यह दोनों अठलाती हुई उस पार वहाँ पहुँच सकीं।

फ्लोरा चिल्लाई—"ना ना, मैं इस परसे नहीं जाऊंगी। इसको देखते ही मेरा कलेजा काँपता है।"

उसकी सहेलीने झट लकड़ीपर खड़ी होकर कहा—"फजूल डरती हो। इसपर चलनेमें क्या है? आओ, चली आओ।"

सौ-सौ नखरोंके बाद डरती, झिझकती और साथ ही मुस्कुराती हुई भी फ्लोराने अपनी सहेलीके पीछे पेड़के तनेपर पैर रखा। मगर दोही कदमके बाद ठिठककर फिर चिल्लाई—"अरे! मुझे पकड़ लो, नहीं तो मैं फौरन गिर पड़ूंगी।"

अब मुझमें ताब कहाँ? मुहब्बतने यकायक वह जोर भरा कि मैं फ्लोराको सहारा देनेके लिये खटसे तनेके अधबदपर पहुँच गया। मगर बीचमें अड़ी हुई थी उसकी सहेली साहबा और जोशमें उस वक्त मुझे ख्याल न रहा कि मैं पानीपर

हूँ या जमीनपर। इसलिये फ्लोराका हाथ पकड़नेके लिये मैं उसके पास झट कतराके जाने लगा। मगर पैर बढ़ाते ही अररररर !

हाय! हाय! हंसीकी आवाजके साथ बड़े जोरोंसे छपाक्‌की आवाज हुई और मैं पानीके नीचे एकदम जमीनके भीतर घुस जानेके लिये कोई गड्‌ढा टटोलने लगा। क्योंकि मैं नालेमें ही नहीं, बल्कि सच तो यों है कि चुल्लूभर पानीमें भी ऐसा डूबा कि इन हंसती हुई छोकड़ियोंके सामने पानीसे अब निकलना मेरे लिये और भी पानी-पानी हो जाना था। क्यों साहब था न ?

(ख)

न तो मैंने कभी पानीमें डुबकी लगानेकी आदत डाल रखी थी और न घण्टों साँस रोकने ही को। इसलिये मेरी खोपड़ी बिलबिलाकर पानीसे बाहर निकल पड़ी। मगर तुरन्त ही गड़ापसे भीतर हो गई। इस अड़ाप-गड़ापसे दोनों हंसनेवालियोंका दम सूख गया। लगीं कफन फाड़के चिल्लाने—अरे! लोगो, दौड़ो-दौड़ो! बचाओ-बचाओ। मिस्टर टाम गाबुल डूब रहे हैं।"

इस तरावटमें भी मिजाज गर्म हो गया। पिनपिनाकर पानीके भीतर ही बोलना चाहा—'मिस्टर गाबुल डूब रहे

हैं तो आपकी बलासे। बेचारेको चैनसे डूबने क्यों नहीं देती ? सरपर खड़ी यह आफत क्यों मचा रही हैं ? मुझपर हँसनेके लिये दो आदमी क्या कम हैं ?"

मगर मेरे मुँहमें बार-बार पानी भर जानेसे मुँहसे एक शब्द भी न निकल सका। खैर ! जब कभी मेरा सर ऊपर निकलता था ! तब थोड़ा-थोड़ा करके मैं इतना कह सका—"नहीं-नहीं। मत बुलाइये। किसीको मत बुलाइये—हाँ, हाँ इतना शोर मत मचाइये। नहीं तो सचमुच लोग फट पड़ेंगे।"

"हाय ! हाय ! लोग न आयेंगे तो आप बचाये कैसे जायेंगे ?"

"इसकी जरूरत नहीं है।"

"क्यों ?"

"क्योंकि मैं डूब नहीं रहा हूँ। मैं मजेमें बैठा हूँ"

अररररर ! कहाँ वह दोनों अभी मारे घबराहटके मरी जा रही थीं, कहाँ यकायक अब इस जोरोंसे हँस पड़ीं, बल्कि हँसते-हँसते किनारेपर लोट-पोट हो गयीं कि मुझसे यह बेहूदापन देखा नहीं गया, इसलिये झटसे अपना मुंह पानीके भीतर छिपा लिया।

औरतोंका मिजाज ही तो। घड़ीमें कुछ और घड़ीमें

कुछ। इसलिये तो किताबोंमें लिखा है कि इनकी असलियतकी कभी थाह नहीं मिलती। इनकी यह रंगत देखकर मैंने दिलमें ठान लिया कि इन लोगोंकी मौजूदगीमें पानीसे निकलना तो अलग रहा, मैं सरतक न निकालूंगा। जब ये यहांसे चली जायंगी तभी चुपकेसे निकलकर घर भागूंगा। मगर ऐसी अड़ियल निकलीं कि इन्होंने टलनेका नामतक नहीं लिया और इधर पानीके भीतर कम्बख्त साँस दगा देने लगी। साँस लेनेके लिये आखिर जरासा सर निकालना ही पड़ा, वैसे ही न जाने किस बेवकूफने लकड़ीके तनेपर बैठकर मेरे बालोंको पकड़कर ऊपर खींचा और मेरे छटपटानेपर भी मुझे उसने किनारेपर ही ले जाकर दम लिया!

अब बताइये कौन बेवकूफ अपने चेहरे और कपड़ोंपर कीचड़की डेढ़ इंच मोटी पलस्तर लगाये। घर क्या जहन्नुममें भी जाना पसन्द करेगा? मगर मुझे इसी सूरतमें घर चलना पड़ा। जबर्दस्ती। जिस तरह हँकुएमें जानवर निकाले जाते हैं, उसी तरह यह लोग और कई आदमियोंके साथ जो उनकी चिल्लाहटपर वहाँ जमा हो चुके थे, मुझे मेरे मकान पहुँचाने ले चलीं। कहाँ इनको रास्ता बताने मैं आया था और कहां अब यही लोग मुझे रास्ता बताने

लगीं। यह अन्धेर तो देखिये। उस वक्त यह जी चाहता था कि जिस पाजीने मुझे पानीसे निकाला था उसको कच्चा चबा जाऊं, मगर आदमियोंके झुण्डमें अपनी कीचड़ भरी आँखोंसे उसको पहचानना मेरे लिये जरा मुश्किल था।

मैं कई दफे रास्तेमें बैठ भी गया, ताकि मेरे साथी आगे बढ़ जायें तो उनसे मुझे छुटकारा मिले। मगर न जाने इन बेहूदोंका मैंने क्या बिगाड़ा था कि इन लोगोंने किसी तरह से भी मेरा साथ नहीं छोड़ा ? इसलिये जब मेरा मकान दिखाई पड़ने लगा और मैंने ताड़ा कि लोग मुझे इस हुलियामें मेरी चचीके सामने खड़ा करके मुझे जलील करनेपर तुले ही हैं, क्योंकि इस सूरतमें मुझे कहीं भी ले जाकर खड़ा करना मुझे जलील करना था, तो मैं यकायक चौंके हुए घोड़ेकी तरह दुम उठाकर सरपट भागा और सीधे अपने गुसलखानेमें ही घुसकर दम लिया।

(ग)

मुझे अपने मकानमें घुसते वक्त किसीने देखा या नहीं इसकी मुझे खबर नहीं। क्योंकि मुझे तो नहा-धाकर जल्दीसे कपड़े बदलनेकी पड़ी थी, इसलिये यह भी मुझे पता नहीं कि मेरे पहुँचानेवाले दोस्त मेरे मकान तक आये या वहींसे

अपना-अपना मुंह लेकर लौट गये। हाँ, उन बेहूदोंके साथ फ्लोराको छोड़ देना ठीक न था। मगर इसके लिये मजबूरी थी।

खैर, नहा-धोकर जब मैं गुसलखानेसे निकला और कपड़े बदलकर गोल कमरेकी तरफ गया तो देखा कि फ्लोरा और उसकी सहेली दोनों मेरी अण्टी (चची) के साथ बैठी हुई खूब हंस-हंसकर बातें कर रही हैं। उसी वक्त खानसामा 'ट्रे' (एक बड़े थाल) में चाय पीनेका सामान लिये हुए बरामदेमें आता दिखाई पड़ा। मैं समझ गया कि यह खातिरदारी फ्लोराके लिये है। मौका चूकनेका नहीं था। मैंने दौड़कर खानसामासे थाल ले लिया और उसे खुद लेकर गोल कमरेमें चला ताकि फ्लोरा और उसकी सहेली मेरी इस सेवासे खुश होकर मेरी नालेमें गिरनेवाली बात भूल जायं। दिलमें मैं मनसूबे गाँठ रहा था कि अच्छा हुआ फ्लोरा मेरे घर आयी। अब अपनी मेहमानदारीसे उसपर अपनी भलमनसाहतका रंग अच्छी तरहसे जमा लूंगा, और उसके बाद मैं ही उसको उसके घर पहुँचाने जाऊंगा; क्योंकि वह रास्ता भूली हुई तो थी ही।

मगर हाय! हाय! चची मुझे देखते ही इस तरह हंस पड़ी कि मेरे दिलकी सारी मजबूती एक बारगी छू मन्तर हो

गयी उसपर इन दोनों युवतियोंका कनखियोंसे मुझे ताक कर मुस्कुरा देना और गजब ढा गया। मालूम होता था कि उस वक्त लोगोंमें मेरी ही बात हो रही थी और वह बात शायद मेरे कीचड़ भरे चेहरेके बारेमें रही होगी, क्योंकि मेरी शकल उस वक्त निहायत साफ-सुथरी भलेमानुसोंकोसी होनेपर भी वह लोग मुस्कुराकर बार-बार उसीको घूरती थीं। अब मेरी झेंप कहाँ रुकनेवाली थी? इस घूराघारीमें बारूदकी तरह भड़क उठी। मैं बौखला गया। कम्बख्तीके मारे उसी वक्त मेरे एक जूतेकी नोंक पुरानी दरीके एक छेंदमें फँस गयी और मैं चायका थाल लिये फ्लोरा और उसकी सहेलीपर भररर धड़ामसे फट पड़ा।

दूधका प्याला फ्लोराके गोदमें उलटा तो चायदानी उसकी सहेलीकी जांघोंपर लौट पड़ी और शक्करदानी छटककर चची साहबकी नाकपर लगी। उनका सारा चेहरा शक्करसे भर गया। किसीका साया फटा, किसीका 'फ्राक' नुचा, कोई गुस्सेमें पिनपिना उठी। गर्ज यह कि एक कुहराम-सा मच गया। ऐसे वक्त जमीनसे उठना मैंने मुनासिब नहीं समझा, इसलिए फर्शपर चुपचाप औंधा पड़ा ही रहा। वर्ना इस गुस्सेमें मेरी सूरत देखकर यह लोग और बमक उठतीं। फिर भी चची साहब मुझे हर तरहसे बेवकूफ

साबित करनेमें चूकी नहीं। कहने लगी कि टाम पैदाइशी बेवकूफ है। बेवकूफी करना इसकी घुट्टीमें पड़ा है। इसलिये इसका काम कभी बेवकूफीसे खाली नहीं होता। यहीं देखो, घड़ियालकी तरह जमीनपर किस तरह पड़ा है!

इतना सुनते ही मैं तिलमिलाकर उठ बैठा। वैसे ही फ्लोरा बोली—"अरे! सचमुच, मैं तो समझी थी कि शायद टांगमें मोच आ गयी, इसलिए पड़े हैं।"

— धत् तेरेकी! न उठता; वही अच्छा था। (अब तो मुझे भी विश्वास हो गया कि मेरी किस्मतमें बस बेवकूफी ही करना लिखा है। लाख अच्छेसे अच्छा काम करूँ, मगर उसपर बेव-कूफीका रङ्ग जरूर चढ़ जायगा, ऐसी जिन्दगीपर थुड़ी है। दुनियाकी नजरोंसे मैं गिरा हुआ था ही मगर अब फ्लोराकी निगाहोंमें भी जलील होकर मेरे लिये जीना बिल्कुल हराम हो गया। उस वक्त जिन्दगीसे एकबारगी ऐसी तबीयत उचटी कि यही जी चाहा कि इसी दम जाकर अपना जान दे दूँ। इसलिये 'अन्टी' से यह कहकर मैं वहाँसे चलता बना कि—'अंटी डियर, आप इन दोनोंको इनके घरका रास्ता बता दीजियेगा, मैं अस्तबलमें फाँसी लगाकर मरने जाता हूँ।" "क्या यह सच कहते हैं?" चलते-चलते फ्लोराका यह सवाल मेरे कानोंमें पड़ा।

इसका जवाब चची साहबा यों देने लगीं—"कोई ताज्जुब नहीं, यह ऐसा कर बैठे। क्योंकि अभी हालमें ही यह एक ऐसी ही आफत ढा चुका है।"

शायद यह लोग मेरे पुराने किस्सेमें उलझकर मेरा मौजूदा हाल कुछ देरके लिये भूल गयीं कि दस मिनटतक अस्तबलकी किसीने खबर नहीं ली। मगर तुरन्त ही वहाँ सब फट पड़ीं और आते ही चिल्ला उठीं; क्योंकि उस वक्त मैं अड़गड़पर खड़ा कड़ीसे लटकती हुई रस्सीका अपने गलेमें फन्दा लगाये कूदनेकी तैयारी कर रहा था।

मैंने चचीसे कहा कि "बस, अब ईश्वरका नाम लीजिये; आजसे सब बेवकूफियाँ खतम हुई जाती हैं। हाँ, मिस फ्लोरा फ्रेण्डलीसे कह दीजिये कि मैं उसको बहुत दिनोंसे बहुत-बहुत प्यार करता हूँ और अगर मैं जीता रहता तो उससे शादी करता।"

इतना कहते हुए लोगोंके हजार दोहाई मचानेपर भी आँखें मीचकर मैं दनसे अड़गड़परसे कूद पड़ा।

गला घुटनेके बदले तलवे झनझना उठे। मैं समझ गया कि यह झनझनाहट प्राण निकलनेकी है। मेरे प्राण तलवों द्वारा निकले हैं और मैं अच्छी तरहसे अब मर गया हूँ। यही सोचकर मैं चुपचाप दम साधे रहा। इतनमें मेरे कानों-

में यकायक बड़े ज़ोरोंकी आवाज़ सुनाई दी। काहेकी? हंसीकी।

मैंने गड़बड़ाकर आँखें खोल दीं। अब जाना कि न तो मैं मरा हूँ और न हवामें लटक रहा हूँ, बल्कि रस्सी बहुत बड़ी होनेके कारण मैं ज़मीनतक लट्ठकी तरह सीधा खड़ा हूँ। हत्तेरी किस्मतकी! मुझे फन्दा लगाते वक्त यह ख्याल ही नहीं हुआ कि रस्सी कितनी बड़ी है। इस तरह अपने गलेमें रस्सी डाले ज़मीनपर इस ख्यालमें चुपचाप खड़ा रहना कि मैं मुर्दा हूँ बड़ा बेढब हास्य दृश्य रहा होगा। तभी तो फ्लोरा, उसकी सहेली, चाची साहबा, सबकी सब हँसते-हँसते लोट-पोट हो गयीं। इस हँसीमें मेरी क्या हालत हुई होगी, समझनेकी बात है। मगर इतना सन्तोष मुझे ज़रूर है कि इस गड़बड़ाहटमें मेरे मुँहसे यह तो फूटा कि मैं फ्लोराको प्यार करता हूँ, वर्ना ऐसी बेहयाई भला कभी मुझसे स्वप्नमें भी हो सकती थी? हर्गिज़ नहीं।

———

पिकनिक

(क)

अपनी शादीकी फिक्र जितनी मुझको है उससे दूनी मेरे पापा और अण्टीको है। उतनी ही मामीको भी होती, मगर वह बेचारी तो अल्ला मियाँके घर थीं। फ्लोराके बापके पास अच्छी जायदाद है जो उनके मरनेपर फ्लोरा ही को मिलनेवाली है। इसलिये कुछ तो जायदादके लिये और कुछ इस ख्यालसे कि मेरी शादी हो जानेसे मेरी झेंपकी बदनामी मिट जायगी और मैं सोसाइटीमें एक अमीर कबीर और भलामानुस व्यक्ति समझा जाऊँगा। मेरे पापा और अण्टी दोनोंकी दिली ख्वाहिश है कि मैं जल्दीसे फ्लोरासे ब्याह कर लूं। चाहता तो मैं भी यही हूं, मगर यहां खाली चाहनेसे भला क्या हो सकता है? कुछ करतूत भी तो चाहिये। मगर मेरी झेंपनेवाली आदतके मारे मुझसे कुछ करते धरते बने तब तो? क्योंकि फ़ाँसीके तख्तेपर चढ़ना, कुएंमें कूदना, तोपके सामने खड़ा हो जाना यह सब मेरे लिये आसान है। मगर किसी लड़कीसे प्रेमपूर्वक शादीका प्रस्ताव करना—जिसके बिना हमारे समाजमें शादी हो ही

नहीं सकती—मुझ जैसे सुशील स्वभाव वालोंके लिये जिनको दुनिया कम्बख्त अपनी नासमझीसे झेंपू समझती है, गैर मुमकिन है। खैर! मुझसे यही एक जवाँमर्दी हो गयी कि मैंने फ्लोराके सामने किसी तरह अपने दिलका गुप्त प्रेम प्रकट तो कर दिया, वर्ना वह बेचारी जिन्दगी-भर इससे बेखबर रहती और इसकी खबर भी हमारे जान-पहचानवालोंमें इस जोरोंसे फैली कि सभी जान गये कि मैं फ्लोराका प्रेमी हूँ। पापाको जब मेरी जवाँमर्दीका हाल मालूम हुआ तो उनकी खुशीका क्या पूछना था? इस खुशीमें मेरी सब पिछली बेवकूफियाँ भूल गयीं और मुझे दूसरी बातोंके बहानोंपर शाबाशी देकर कहा—"इसमें कोई शक नहीं टाम, अगर तुम कोशिश करो, तो तुम भी दुनियामें किसी लायक हो सकते हो।"

मैंने दिलमें कहा कि "जी हाँ, इसमें क्या शक है? आदमीको सारी लियाकत (योग्यता) औरतोंको फुसलानेमें ही तो है। इसी गुणके न होने से तो मैं झेंपू मुंहचोर, नालायक सब कुछ समझा जाता हूँ।"

बात पतेकी है, क्योंकि शादीके लिये किसी युवतीकी प्रेम-प्रस्ताव करके राजी करना औरतको फुसलाना नहीं तो क्या है और पापाकी शाबाशीका मुख्य कारण भी बहानों-

की आड़में यही था कि मैं फ्लोराके सामने अपने प्रेमको किसी-न-किसी तरह प्रकट कर सका, जिससे उन्हें उम्मीद हो गयी कि अब चिड़िया मैं अपने विवाह-जालमें फँसा ले आऊँगा, मगर वह यह नहीं सोच सके कि मेरे प्रेमका प्रगट हो जाना घटनाचक्रके प्रभावसे हुआ, कुछ मेरी चिड़ीमारी हुनरके बलपर नहीं या मुमकिन है मैं ही धोखेमें हूँ। मेरे प्रेमने भीतर-ही-भीतर मुझमें यह काबिलियत पैदा कर दी हो जिसकी मुझे खबर न हुई हो। क्योंकि पापाने मुझे शाबाशी देनेके बाद जिस वक्त सौ रुपयेका इनाम भी दिया और कहा कि "मेसर्स हालवेके यहाँ आज नीलाम है। मैं वहाँ जा न सकूँगा। इसलिये टाम, तुम्हीं वहाँ जाकर कुछ कामकी चीजें खरीद लाओ।" तो उस वक्त अलबत्ता मेरा उत्साह इतना बढ़ा कि मुझे विश्वास हो चला कि मैं भी कुछ हूँ और दुनियामें कुछ कर सकता हूं। इसलिये रुपये लेकर अकड़ता हुआ मैं नीलामको रवाना हुआ।

रास्तेमें मुझे ख्याल पैदा हुआ कि अगर वहाँ 'मिसें और लेडियाँ' हुईं, तब तो सारी अकड़ भूल गई और मैं अपनी असलियतपर फिर आ गया। क्या बताऊँ, औरतोंके मारे मुझ ऐसे भलेमानुसोंका कहीं भी गुजारा नहीं। हिन्दू मुसलमानोंका समाज बड़ा अच्छा है कि वह अपनी औरतोंको पर्देमें बन्द

रखता है और पर्देके बाहर उनको मर्दोंके पास फटकने नहीं देता। इस तरह मुझ जैसे झेंपुओंकी कलई खुलने नहीं पाती; बल्कि यह लोक अपनी झेंपकी वजहसे और भी भलेमानुस समझे जाते हैं और इज्जतकी भी निगाहसे देखे जाते हैं। मगर अफसोस ! यह बात हमारे खिचड़ी-समाजमें कहाँ मुमकिन है ? यहाँ तो कदम-कदमपर औरतोंका सामना है। इनसे मुँह चुराओ तो झेंपू कहलाओ और मिलो तो कम-से-कम मेरा दिल तो बेवकूफ बन जानेके डरसे हमेशा धड़कता रहता है। यही सारी मुसीबतोंकी जड़ है। इसीसे मैं अदबदाकर अपने सरपर आफतपर आफत ढोता रहता हूँ। इसलिये अपनी कमजोरी का रंग बढ़ते देख एक दफा जीमें आया कि लौट चलूँ। मगर फिर सोचा कि लौटना पापाकी शाबाशियोंपर पानी फेरकर अपनेको सचमुच निकम्मा साबित कर देना है। इस उधेड़-बुनमें पड़ा मैं आखिर नीलाममें पहुँच ही गया।

न जाने किस चीजपर तीन रुपयेकी बोली, बोली जा रही थी, मुझे भीड़में पता न चल सका। मगर मैंने पहुँच-तेही दूरसे दस रुपयेकी आवाज लगा दी। सब लोग मुझे बिज्जूकी तरह घूरने लगे और युवतियाँ कम्बख्त खिल-खिलाकर हँस पड़ीं। बस, गजब हो गया। दिलकी सारी

मजबूती एकबारगी बिगड़ गयी। इसके बाद क्या हुआ, किस तरह मेरे सब रुपये खतम हो गये, मुझे जरा भी खबर नहीं। मगर लोग कहते हैं कि मैं मारे बौखलाहटके ऐसा अन्धा हो गया था कि मैं अपनी ही बोलीपर एक ही सांसमें दनादन बढ़ता जाता था और रुकता तब था जब मेरी सांस उखड़ जाती थी और कोई ऐसी चीज न थी, जिसपर मैं बोली बोलता न था।

छकड़ोंपर जब मेरे यहां पुरानी ईंटें, खपड़ैल, टूटे हुए दरवाजे, अगड़म-बगड़म दुनिया भरके कूड़ा-करकट जो नीलाममें मेरी बोलियोंपर खतम हुए थे, आये और उनके साथ डेढ़ हजार रुपयेका बिल भी आया, तब तो मेरे होश उड़ गये। पापाने हैरान होकर पूछा—"क्यों टाम, यह सब तुमने खरीदे हैं।"

मैंने निहायत सचाईसे जवाब दिया—"यह मुझसे न पूछिये, दूसरोंसे पूछ लीजिये।"

पापाने जितनी मुझे शाबाशी नहीं दी थी उससे चौगुनी पँचगुनी लानत फटकार और गालियाँ दीं। बिगड़कर कहने लगे कि "तुमने तो घरका दीवाला निकाल दिया। अब तुम जल्दीसे अपनी शादी करो नहीं तो मकान बेचना पड़ेगा। समझे?"

मैंने बहुत दबी हुई जबानमें बड़ी मुलायमियतसे जवाब दिया—"जी हां, समझा। मगर मेरी समझमें मकान बेचना ही ठीक है।"

पापा आग हो गये। बड़ी खैरियत हो गयी कि उसी वक्त मिस्टर फ्रेण्डलीका नौकर फ्जोराका एक खत लेकर आ पड़ा, नहीं तो उनका गुस्सा कै डिगरीतक चढ़ता, पता नहीं। मगर मेरी बदकिस्मती कि वह खत मेरे नाम था।

पापाका मिजाज एकाएक ठंढा पड़ गया और अण्टी इस ढंगसे मुस्कुरायी मानो वह मेरे प्रेमकी असफलतापर मुझे मुबारकबाद दे रही हैं। हँसकर आप-ही-आप बड़बड़ाने भी लगीं—"अहा! फ्जोराका क्या कहना है। बेचारी बड़ी नेक लड़की है और खूबसूरतीमें तो वह अपना जवाब नहीं रखती है।"

पापाने इसका समर्थन करते हुए कहा—"उसके पास जायदाद भी काफी है। वह आदमी सचमुच बड़ा खुशनसीब होगा जिसके साथ वह शादी करना पसन्द करेगी।"

चची बहुत इतमिनानसे बोलीं—"वह खुशनसीब आदमी हमारे टाम ही होंगे, क्योंकि इनका वह बहुत ख्याल करती है। इसका सबूत यह खत दे ही रहा है। क्यों टाम, है न यही बात?"

मैंने गड़बड़ाकर जवाब दिया—"यह बात नहीं है। उसने मुझसे पूछा है कि क्या तुम मुझे अपनी टमटमपर कल 'पिकनिक' (जंगल-भोजन) में ले चल सकते हो या नहीं मगर—"

चची बीचहीमें चिल्ला उठीं—"अब इससे बढ़कर वह तुममें अपनी दिलचस्पीका सबूत और क्या देती ? तुम अपनी खुशकिस्मतीकी तारीफ करो कि इसके लिये उसने तुमको लिखा।"

यहाँ 'पिकनिक' के नामहीसे जहाँ पचासों युवतियोंसे मुठभेड़ होनेका डर था, होश गुम हो रहे थे। इसलिये मैंने लड़खड़ाकर कहा—"मगर—मगर—मगर मैं 'पिकनिक' में जाना मुनासिब नहीं समझता।"

पापा बमक उठे—"नानसेन्स ! तुम्हें फ्लोराकी खातिर जाना चाहिये। किसी युवतीका हुक्म न मानना सख्त बदतमीजी है।"

चची—"बेशक ! खासकर बिन ब्याहोंके लिये।"

मुझे फ्लोराके पास 'पिकनिक' में जानेका स्वीकृति-पत्र भेजना पड़ा। अकड़नेका मौका ही न था।

(ख)

दिल तो फ्लोराके लिये छटपटा रहा था। सारी रात

मैं उसे पिकनिकमें अपने साथ ले जानेके लिए उसकी कमर-में हाथ डालकर 'प्रिये' 'प्रियतमे' कहते हुए टमटम पर बिठा लेनेका मन-ही-मन अपनी कल्पनामें अभ्यास करता रहा। मगर सुबह होते ही मेरे झेंपनेवाले स्वभावने मेरे तमाम मन्सूबोंपर ऐसी उल्टी झाड़ू फेरी कि मैं अपनी खुशीसे किसी तरहसे भी जानेके लिए तैयार न हो सका। बल्कि टमटमको तैयार देखते ही मैं जान चुरानेके लिए भागा-भागा फिरने लगा। मगर अफसोस! मेरे न जानेका एक भी बहाना काम न आया। और मैं जबरदस्ती अपनी टमटम पर लाद दिया गया।

मिस्टर फ्रेण्डलीके फाटकपर मेरा इन्तजार किया जा रहा था। वहाँ लोगोंका जमौड़ा देखते ही मेरे हाथोंके तोते उड़ गये। दिल इतने जोरोंसे धड़कने लगा कि किसी तरहसे भी मुझसे वहाँ रुका न गया। हाथका चाबुक उस वक्त आपसे आप घोड़ीकी पीठपर ऐसा पड़ गया कि वह हवा हो गयी। मगर बकरेकी माँ कबतक खैर मनावे? आखिर दो मीलका चक्कर काटकर मैं मिस्टर फ्रेण्डलीके बँगलेपर पहुँचा। मगर पिछवाड़े।

फ्लोरा टमटमकी आहट पाते ही दौड़ी और मैं उसको सलाम करनेके लिये हड़बड़ाकर उतरने लगा। मगर टांग

फँस गयी रासमें। इसलिए बजाय पैरके बल उतरनेके सरके बल उतरा। गाड़ीसे उतरनेका यह तरीका कितना ही नया और अनोखा हो तो हो मगर है बड़ा कष्टदायक। कोई साहब इसको अपनानेकी कोशिश न करें; क्योंकि इसमें खोपड़ी भिन्ना जाती है। हैट चकनाचूर हो जाता है और मत्थेपर दो गिल्टियाँ भी निकल आती हैं।

मैं अपनी चोटके दर्दको किसी तरह छिपाये हुए जल्दी-से एक कुर्सीपर बैठ गया। अब मालूम हुआ कि उसपर कलम और दावात रखी हुई थी। रोशनाईसे पतलून तर हो गया और कलमकी निब जाँघमें आध इञ्च घुस गयी। ऐसे वक्त कुर्सीपरसे उठना अपनेको और बेवकूफ बनाना था। इसीलिए लोगोंका ध्यान और तरफ बटानेकी खातिर मैंने जल्दीसे कुछ-न कुछ बात छेड़ देनेकी कोशिश की। मगर हाय! अफसोस उसीमें पकड़ गया। मेरा कहनेका इरादा था कि "आज, 'पिकनिक' के लिये दिन बड़ा अच्छा है। नये तालाब-पर शहरसे आठ मील दूर सचमुच इसका बड़ मजा आयेगा और मिस फ्लोरा फ्रेण्डलीके सम्मिलित होनेसे इसके आनन्द का फिर क्या कहना है?" मगर घबराहटमें मुँहसे निकला—"पिकनिकका बड़ा मजा करूँगा। आज दिन-रात, नहीं-नहीं रात नहीं, दिन हाँ दिन बड़ा—आ आह! अच्छा है—"

हाय ! हाय ! बातोंमें अपनी जांघका ख्याल न रहा ।

निब हिल गयी और जोरसे चुभने लगी। मैं उसके दर्दको छिपा न सका। लोग ताड़ गये और झट मैं कुर्सीपरसे जबर-दस्ती उठा दिया गया। ईश्वर जाने मेरे पतलूनकी कैसी हालत थी। उसको जांचनेका भला उस वक्त कहां मौका था ? मैं जल्दीसे टमटमकी तरफ लपका। सामने मिस्टर फ्रॅंडलीकी आया (नौकरानी) मिल गयी। उसीको मैं फ्लोराके धोखेमें अपने रटे हुए प्रेमपूर्ण शब्द 'प्रिये प्रियतमे' कहकर टमटमपर चढ़ानेके लिये घसीट बैठा।

अब यह दोहरी गलती मेरे लिए असहनीय हो गयी और मैं दुम झाड़कर वहाँसे भागा और दनसे टमटमपर कूद पड़ा। भाड़में गयी फ्लोरा और चूल्हेमें गया 'पिकनिक'। उस वक्त तो हथेली पर जान लेकर किसी तरह भागनेहीमें कुशलता थी। बस, सड़से चाबुक सड़काया और नौ दो ग्यारह हो गया। मगर अररररर ! अब जो जरा हवास ठिकाने हुए तो फ्लोराको पहलेसे ही अपनी बगलमें मौजूद पाया। हाय ! हाय ! अब 'पिकनिक' से बचनेकी कोई सूरत नजर नहीं आयी; नये तालाबपर चलना ही पड़ा।

(ग)

रास्तेमें फ्लोरासे बात करनेवालेकी ऐसी-तैसी। ऐसी

बौखलाहटमें किस मरदूदका दिमाग सही था जो उससे बात करता ? बल्कि यहाँ तो इस डरसे दिल और भी जोरोंसे धड़क रहा था कि कहीं वह मुझसे कुछ पूछ न बैठे। इसलिये रास्ते भर मैं अपने मुँहको इस तौरसे सिकोड़े रहा, जिससे मालूम हो कि मैं घोड़ी हाँकनेमें इतना परेशान हूँ कि इस वक्त किसीका कुछ बोलना ठीक नहीं है।

पिकनिकमें मुझे देखते ही लोग एकदम खिलखिलाकर हँस पड़े और जब मैंने उनकी तरफ अपनी पीठ की तो फिर हँसीका क्या पूछना था ? उस वक्त फज़ोरा भी हँसते-हँसते लोट गयी। यह पीठ पीछेकी हँसी कैसी बुरी होती है, उसी बेचारे-का दिल जानता है जो इसकी मुसीबतमें पड़ता है। खैर! मैं समझ गया कि मेरी सूरतमें कुछ न कुछ खराबी जरूर हो गयी है, इसलिये इस वक्त दिलका ख्याल करना ठीक न था। मैं दौड़कर तालाबकी ओर गया। क्योंकि शकल देखनेके लिये वहाँ शीशा कहाँ मिल सकता था ? और किनारेपर उकड़ू खड़ा होकर पानीमें अपना मुँह देखने लगा। मगर अफसोस! गर्दन बढ़ानेमें सरका बोझ आगे इतना बढ़ गया कि मेरे बदनका तौल बिगड़ गया और मैं छपाकसे पानीमें जा रहा।

किसी-किसी तरहसे मैं पानीसे तो निकाला गया मगर

बेकार, क्योंकि भींगे हुए कपड़ोंमें पिकनिकका मजा लेना बिलकुल गैरमुमकिन था। उसपर जाड़ेका दिन और ठण्ढो हवाके झोंके, कलेजातक ठिठुर गया। लोगोंने कहा जबतक तुम्हारे कपड़े सूख न जायँ तबतक तुम धूपमें बराबर दौड़ते रहो ताकि तुम्हारे बदनकी गर्मी कायम रहे, नहीं तो गठिया, इन्फ्लुएँजा, निमोनिया सब एक बारगी हो जायंगे। बाहरी तकदीर! यार लोग गुलछर्रे उड़ा रहे थे और मैं कम्बख्तीका मारा उनकी चारों तरफ लंगूरकी तरह दो घण्टेतक दौड़ लगाता रहा। फ्लालैनका सूट भींगकर सूखनेमें लगा हर तरफसे सिकुड़ने। ऐसा मालूम हो रहा था मानो मेरा बदन शिकंजेमें फँसा जा रहा है और बूट तो सूखकर एक दम लोहा हो गया।

ऐसे संकटकी घड़ीमें युवतियोंको छेड़ की सूझी। मेरी हँसी उड़ाने और मुझे चिढ़ानेके लिये अपनी-अपनी तश्तरी अदबदा कर मेरे सामने लाकर खाने लगीं। मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ। लपककर मैं भी एक तश्तरी उठा लाया और अपने खानेकी कमी पूरा करनेके ख्यालसे मैं जल्दी-जल्दी दोनों हाथोंसे खाने और अपने लुक्मोंको बे चबाये गटागट खड़ा निगलने लगा। ऐसा करनेमें नासपातीका एक बड़ा-सा टुकड़ा मेरे हलकमें अटक गया और कम्बख्तने वहाँ

ठूँचकर अपना आसन ऐसा जमाया कि खाँसने खूँसने झटकने-पटकनेपर भी इधर-उधर किसी तरफ टसकनेका नाम नहीं लिया। आँखोंमें आँसू भर आये, प्राण ऊबने-डूबने लगा, गलेमें घिग्घी बंध गयी। लड़कियाँ दौड़ पड़ीं। किसीने छाती सहलायी, किसीने पीठ मली, बड़ी मुश्किलमें जान पड़ गयी। गलेकी तकलीफसे मर ही रहा था और अब इतनी युवतियोंको अपने ऊपर चीलहकी तरह एकबारगी फट पड़ते देखकर मेरा और भी दम निकल गया। मैं मारे घबराहट, तकलीफ और परेशानी छटपटाने और हाथ-पैर फेंकने लगा। इस तरह एक दफा मेरे जूतेकी एड़ी फ्लोराके झालर में फँस गयी और उसका साया चरसे हो गया।

लड़कियोंकी चिल्लाहटसे मर्द लोग भी दौड़े। झटपट मेरा बूट खोल दिया गया और दो आदमी मेरा हाथ पकड़कर मुझसे दनादन उठा-बैठी कराने लगे। इसके बाद कुछ आदमियोंने बारी-बारीसे मेरे तलवे रगड़ने शुरू किये। तब जाकर मेरे गलेका अटका हुआ टुकड़ा बड़े नखरोंसे पाताल लोककी ओर सरका और मेरी जानमें जान आयी।

अब सर घुमाया तो देखा कि 'फ्लोरा' अपने फटे हुए आयेको देख रही है। मैं घबड़ाकर बोला—"कुछ परवाह

नहीं। आप उसको न देखिये। बुरी चीज है। मैं जल्दी ही आपको एक नया फ्राक भेंट करूंगा।"

यह कहके मैं उठ बैठा और 'पिकनिक' के नामपर हजारों गालियाँ देता टमटम-उमटम वहीं छोड़ घरको सरपट भागा। लोग पुकारते ही रह गये, मगर सुननेवालेको मैं कुछ कहता हूँ।)

———

प्रेम-भेंट

(क)

बड़ा बेवकूफ है। कौन ? मैं ? नहीं । मेरा बेरा। कम्बख्तसे पूछो जमीनकी तो बतावे आस्मानकी । उसपर वह रखता है डेढ़ हाथकी जबान जो जहाँ चली फिर रुकना जानती ही नहीं। उस वक्त वह ऐसी बेवकूफीकी बातें करने लगता है कि अच्छेसे अच्छे आदमीका मिजाज खराब हो जाय । इसीसे मैं उसके हाथ अपनी प्रेम भेंट फ्लोराके पास भेजना ठीक नहीं समझता और खुद लेकर जाना अच्छा नहीं मालूम होता। देनेका वचन देकर न देना और भी खराब है। क्योंकि 'पिकनिक' में मेरी गलतीसे जब 'फ्लोरा' का 'फ्राक' नुच गया तब उसके बदलेमें नया 'फ्राक' उसे भेंट करनेका मैं सबके सामने वादा कर बैठा। यही तो मुझसे जरा चूक हो गई। अगर इस तरह इसका ढिंढोरा न पीटे होता तो इस झगड़ेमें काहेको पड़ता । उसपर यह भी डर है कि कहीं वह इस बातसे दिलमें नाराज न हो गई हो। इसलिये अगर मैं इसे लेकर गया तब तो जरूर ही वह मुझे झिड़क देगी कि 'क्या मैं तुम्हारी मुहताज हूँ ?

ले जाओ अपनी चीज। नहीं लेती।" उस वक्त मैं क्या करूँगा ? चीज भी कोई ऐसी चाज नहीं, जो मेरे इस्तमालमें आये; क्योंकि कौन भलामानस जनानो पोशाक पहनना पसन्द करेगा ?

दर्जीको क्या कहूँ, उस बेवकूफने एकही दिनमें 'फ्राक' तैयार करके दे दिया और मेरा फटा हुआ पतलून अबतक मरम्मत करके नहीं दिया जिसे वह हफ्तों पहले ले गया था। अगर वह फ्राक बनानेमें भी उसी सुस्तीसे काम लेता तो मैं बादको सोच-समझकर इसका बनवाना जरूर रोक देता और भेंट देनेके लिये कोई और चीज सोचता, जिसमें नुकसानका बदला देनेका ऐब न होता। यों उसे वह सचमुच प्रेमोपहार समझकर अवश्य ले लेती। मगर दर्जी कम्बख्तने अपनी जल्दीबाजीसे मेरे लिए इसका भी मौका नहीं छोड़ा और चीज तैयार कर दी। अब इसे किसी-न-किसी तरह फ्लोराके पास भेजना ही पड़ा। अगर बेरा इसे देकर चुपचाप चला आवे तब तो खैरियत है। क्योंकि बेरासे वह अपना मिजाज दिखाना पसन्द नहीं करेगी। फिर तो जहाँ भेंट स्वीकार हुई तहाँ सारी परेशानी दूर हो गई; क्योंकि तब न उसमें वह गुस्सा रहेगा और न मुझे उसके पास जानेमें झिझक। मगर बेरा वहाँ जाय और अपनी जबान

बिलकुल बन्द रखे तब अलबत्ता यह काम बन सकता है। मुमकिन है, इनामके लालचमें ऐसा करे। खैर, इनामकी परवाह नहीं, दूँगा।

घण्टी बजाई। बेरा आया। मैंने उसे कहा—"तुम्हें एक जगह जाना होगा।"

बेरा—"सवारी या पैदल ?"

मैं—"बात तो सुनते नहीं और बीचमें ही टोकने लगते हो यह तुम्हारी बड़ी बुरी आदत है। मैं कहता हूँ तुम्हें एक जगह जाना है।"

बेरा—"मगर कहां यह तो बताइये।"

मैं—"पहले सुन तो लो।"

बेरा—"सुन लिया साहब ! मैं बेरा हूँ, मगर बहिरा नहीं हूँ।"

मैं—"अच्छा, तो तुम्हें एक जगह जाना होगा और—"

बेरा—"मगर कब ? आज, कल, परसों आखिर कब ?"

मैं—"फिर वही बात ?"

बेरा—"अरे ! आप भी जान गये ?"

मैं—"मैं क्या जान गया ?"

बेरा—"यही कि आप बार-बार वही बात कहते हैं।"

मैं—"बस चुप रहो। जो मैं कहता हूँ, उसे सुनो।"

बेरा—"बहुत अच्छा साहब !"

मैं—"अच्छा, तो जहां तुम्हें जाना होगा वहां भी इसी तरह तुम्हें चुप रहना पड़ेगा। समझे ? बोलो चुप रहोगे ?"

बेरा—"कैसे बोलूँ ? मैं तो चुप हूँ।"

मैं—"हां, इसी तरह वहां चुप रहना। 'फ्लोरा' या कोई भी तुमसे कुछ पूछे, तुम खबरदार कुछ न बोलना। अच्छा ?"

बेरा—"सुन रहा हूं, मगर जवाब नहीं दे सकता।"

मैं—"क्यों ?"

बेरा—"आपने ही तो बोलनेके लिये मना कर दिया। मैं क्या करूँ।"

मैं—"अरे ! बेवकूफ ! बेकार बकबक करनेको मना किया है। बातका ठीक और सीधा-सादा जवाब देनेके लिये नहीं। देखो, जैसा कहता हूँ अगर वैसा करोगे तो मैं तुम्हें इनाम दूँगा।"

बेरा—"हाँ, यह बात अलबत्ता बहुत ठीक और सीधी-सादी है और मेरी समझमें भी अच्छी तरहसे आ गयी। अब बताइये, क्या करूं।"

मैं—"दर्जी आज जो कपड़ा दे गया। उसे मेरे खतके साथ फ्लोराको देकर बिना वहां कुछ बोले-चाले चले आओ।"

बेरा—"दोनों बण्डल ?"

मैं—"दोनों कैसे ? अभी तो दूसरा उसीके पास है।"

बेरा—"नहीं वह भी दे गया। आप सो रहे थे।"

मैं—"अच्छा तो उसे तुम अपने इनाममें ले लो।"

बेरा—"बहुत अच्छा हुजूर! एक मिस बाबाको दे आऊं और एक मैं अपने इनाममें ले लूं और मैं वहाँ कुछ न बोलूं यही न ?"

मैं—"हां, और उसके साथ मेरा एक खत भी उन्हें देना जो उन्हें लिख देता हूँ।"

मैंने झट यह खत फ्लोराके नाम लिखकर बेराको दे दिया—

"प्यारी फ्लोरा,

आशा है यह मेरी प्रेम-भेंट तुम स्वीकार करोगी और इसे पहनकर मुझे कृतार्थ भी करोगी। मुझे हर तरह विश्वास है, यह पोशाक तुमपर खूब खिलेगा। यह तुम्हारे बदनकी तारीफ है।

तुम्हारा—

"टाम गाबुल"

(ख)

बेराको खत और भेंटके साथ भेजकर मैं बड़े-बड़े मन-

सूबे बांध रहा था। सोचता था, इस भेंट द्वारा मैं फ्लोराका और कृपापात्र बन जाऊँगा और तब ईश्वर चाहेगा तो उसके सामने जाकर उससे प्रेमालाप करनेकी मेरी बहुत कुछ हिम्मत पड़ने लगेगी। यह तो उसे मालुम ही है कि मैं उसे दिल-ही-दिल प्यार करता हूँ। बस यही कसर है कि यह प्रेम जरा दिलसे बाहर निकलकर भी कुछ अपनी करामात दिखावे, फिर तो चैन-ही-चैन है। इसीका इन्तजार पापा और अण्टीको है और इसीका इन्तजार घर बसानेके लिये मुझको भी है। क्योंकि हमारी-उसकी शादीके बीचमें यही एक रोड़ा हमारे सामाजिक नियमका अटका हुआ है! इसीलिये मैं बेराके लौटनेकी राह बड़ी बेचैनीसे देख रहा था।

मगर वह कम्बख्त लौटा भी तो हांफता-हांफता और दौड़ता हुआ और आते ही चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा—"गजब हो गया! गजब हो गया!"

मेरे होश उड़ गये। घबड़ाकर पूछा—"अरे! क्या हुआ?"

बेरा—"भाड़में गयी ऐसी नौकरी। मिहरबानी करके अपने पापासे कहिये कि मेरा हिसाब कर दें। मैंने मार खानेके लिये नौकरी नहीं की है।"

मैं—"क्यों झूठ बोलते हो? मैंने तुम्हें कब मारा।"

बेरा—"आपने नहीं मारा मगर दूसरोंसे तो मुझे पिटवानेका इन्तजाम कर दिया था ?"

मैं—"मैंने पिटवानेका इन्तजाम कर दिया था ?"

बेरा—"और नहीं तो क्या ? न जाने आपने खतमें क्या लिख दिया कि मिस बाबा उसे पढ़कर बण्डल खोलते ही आग-बबूला हो गयीं। लगी डाँट-डाँटके पूछताछ करने। मैंने साफ-साफ कह दिया कि टाम साहबने मुझे आपकी बातोंका जवाब देनेसे मना कर दिया है। मैं कुछ बोल नहीं सकता ! इसपर वह और बमक उठीं और पिनपिनाती हुई अपने पापाके पास दौड़ीं। बस, समझ गया कि अब मेरी खोपड़ी फूटी। इसलिये जैसे ही वह उधर बड़ा रूल लेकर निकले वैसे ही इधर बन्दा जान छोड़कर भागा। बाप रे बाप !"

इतनेमें ही फ्लोराके बाप मिस्टर फ्रेण्डली बकते-झकते कमरेमें घुस आये और आते ही एक छोटा-सा बंडल जो हाथमें लिये हुए थे, मेरी खोपड़ीपर पटक दिया। मैं घबड़ाकर उनका मुँह देखने लगा और वह मुझे लाल-लाल आँखोंसे घूरने लगे। हवास गुम हो गये। समझमें नहीं आया मामला क्या है ! बेरा पहले ही भाग खड़ा हुआ था और पापा भी उस वक्त घरपर नहीं थे जिससे मुझे कुछ तसल्ली होती। उसपर हजरत यमदूत-

की तरह इस तरह सामने खड़े थे कि उनके चंगुलसे निकल भागना भी गैरमुमकिन था। बड़े घपलेमें जान पड़ गयी। मैंने किसी तरह लड़खड़ाकर पूछा—"कहिये, कहिये बात क्या है?"

वह कड़ककर बोले—"मैं नहीं जानता था कि तुम इतने बेहूदे हो।"

मैं—"मैं बेहूदा हूँ?"

फ्रेण्डली—"बेशक! तुमने क्या सोचकर मेरी लड़कीको ऐसी चीज भेंट दी?"

मैं—"कौन-सी चीज?"

फ्रेण्डली—"बस, अब ज्यादा गुस्सा मत दिलाओ।"

मैं चुपकेसे बण्डल खोलता हुआ मिनमिनाया—"मालूम होता है उनके शायद यह छोटा या बड़ा हुआ।"

फ्रेण्डली—"तुम्हारा सर बस खबरदार! आजसे तुम फ्लोरासे मिलनेकी हिम्मत न करना।"

बण्डल खुलते ही मेरे हाथसे गिर पड़ा। अब मालूम हुआ के उस पाजी बेराने 'फ्राक' 'साया' तो इनाममें खुद रख लिया और मेरा फटा-पुराना पतलून फ्लोराको पहननेके लिये दे आया। उसपर खतमें मेरा यह अनुरोध कि "तुम इसे पहनकर मुझे कृतार्थ करोगी और तुम्हारे बदनकी बनावट ऐसी है कि यह पोशाक तुमपर खूब खिलेगी।" धत् तेरेकी! यह तो सचमुच

बड़ी बेवकूफी हुई। इस अपमानको भला कौन युवती सह सकती है ?")

मैंने गिड़गिड़ाकर कहा—"मिस्टर फ्रेण्डली, यह मेरा कसूर नहीं है। मैंने और ही चीज भेजी थी। मगर बेराने भूल या पाजीपनसे उसे रास्तेमें बदल दिया। मैं बिल्कुल बेगुनाह हूं। ईश्वरके लिये मुझे माफ कीजिये।"

मेरी मिन्नतों और कसमोंपर मिस्टर फ्रेण्डली कुछ धीमे पड़े और कुर्सीपर बैठकर सिगरेट पीनेके लिये दियासलाई ढूँढ़ने लगे। उस वक्त दियासलाई न उनके पास थी और न मेरे। आतशदानमें आग जल रही थी। मैं मारे खुशामदके जल्दीसे एक जलती हुई लकड़ी उठाकर उनके मुँहके पास ले गया। मगर भाग्यकी बलिहारीकी अंगारा लकड़ीसे टूटकर उनकी गोदमें टपक पड़ा। बेचारे चिल्लाके कुर्सीपर उछल पड़े। खैरियत हो गयी कि इस उछलनेमें वह जमीनपर औंधे गिरे जिससे उनके बदनके बोझसे अङ्गारा चूर-चूर होकर बुझ गया वर्ना गजब हो जाता। किसी तरह उनको मैंने उठाकर बैठाया। एक तो उनकी तोंद वैसे ही भारी थी, उसपर आगकी गर्मी जो पहुंची और जमीनका करारा धक्का लगा तो वह एकदम धौंकनीकी तरह साँस छोड़ने लगी। उनकी यह हालत देखकर मैं घबड़ा गया। तुरन्त दौड़कर मैंने आलमारीसे एक शराबकी बोतल निकाली और झट उसे

एक गिलासमें उड़ेलकर उन्हें दिया और कहा—"लीजिये इसे पी जाइये। अभी आपकी तबीयत ठीक हुई जाती है बड़ी हल्की शराब है। इसमें सोडा मिलानेकी कोई जरूरत नहीं है।"

मिस्टर फ्रेण्डली शायद प्यासे बहुत थे। इसलिये आँख बन्द करके इक साँसमें जहांतक उनसे पीते बन पड़ा उसे पी गये। मगर तुरन्त ही उनके हाथसे गिलास छूट गया और जो कुछ उसमें बचा था वह सब उन्हींके कपड़ोंपर गिर पड़ा। वैसे ही मेरे पापा वहाँ आये और आते ही बोल उठे—"हल्लो मिस्टर फ्रेण्डली! भई वाह! खूब स्वांग बनाया है। क्या आप भी हिन्दुस्तानियोंकी तरह होली खेलते हैं?"

काटो तो मेरे बदनमें खून नहीं। सरपर पाँव रखकर वहांसे भागा। क्योंकि अब याद आया कि वह शराबकी बोतल न थी बल्कि सचमुच लाल रोशनाईकी बोतल थी।

———

प्रेम-मिलन

(क)

बाप-बेटी दोनों मुझसे नाराज़ हैं। खैर ! बापकी नाराजगीका मुझे उतना गम नहीं है, मगर बेटी साहबाकी बदली हुई निगाह तो कलेजेको पार करती हुई दिलमें पहुँ-चकर एक अजीब बदहज़मी मचाये हुए है। कम्बख्त एक घड़ी भी तो चैन नहीं लेने देती। रह-रहकर यही ख्याल हुरपेटा करता है कि "हाय! 'फ्लोरा' नाराज़ हो गयी ?" उसपर मेरे पापा साहबका बार-बार मुझसे यह पूछना कि "तुमने अपने कसूरोंकी माँफी मांगकर उन लोगोंको मना लिया या नहीं" और भी जान खाये हुए है। मिस्टर-फ्रेण्डली तो पुरुष-जातिके हैं। उन्हें मैं किसी तरह मना सकता हूँ ? मगर उनकी पुत्री साहबा मिस 'फ्लोरा' तो बदकिस्मतीसे स्त्रीलिङ्ग ठहरीं। इस कम्बख्तीको मैं क्या करूँ ? औरतों-का नाम सुनते ही यहाँ कलेजेमें मरोड़ और दिलमें ऐसी ऐंठन पैदा होती है कि मेरे हवास गुम हो जाते हैं। उसपर 'फ्लोरा' के सामने तो मेरी नानी ही मर जाती है, क्योंकि

उसे मैं प्यार करता हूँ। जब वह सौ कोसकी दूरीपर रहती है तो उसे सैकड़ों बातें कहनेके मनसूबे करता हूँ। मगर जब वह पास आती है तो मेरी एकदम घिग्घी बंध जाती है। ऐसी आफतमें मैं भला उसे किस तरह मना सकता हूँ ?

आखिर पापाने एक दिन आकर मुझसे कहा कि 'मैं आज मिस्टर फ्रेण्डलीके यहाँ गया था और उनसे जाकर कहा कि 'टाम' अपनी गलतीपर बहुत पछताता है, यहाँतक कि आपलोगोंसे मुँह दिखानेमें भी शरमाता है। जबतक कि आप उसे न बुलायेंगे तबतक यहाँ आनेकी कभी हिम्मत नहीं पड़ सकती। इसी तरह मैंने उनके तुम्हारे लिये बहुत कुछ कहा और अब वे लोग तुमसे नाराज नहीं हैं।'

मैंने दबी जबानमें पूछा—"क्या फ्लोरा भी ?"

पापा—"हां, वह भी।"

मैंने दिल-ही-दिल पापाको इस कुरमीके लिये धन्यवाद दिया और मन-ही-मन फूला न समाया। मगर जैसे ही उन्होंने कहा कि 'देखो, आज नील कोठीमें गार्डन-पार्टी (उद्यान-भोज) है। तुम तो वहां जाओगे ही। मगर अपने साथ फ्लोराको भी ले लेना, क्योंकि मिस्टर फ्रेण्डली-

की 'साइडर-कार' अभीतक मरम्मत होकर नहीं आयी है। इस-लिए वह अपनी मोटर साइकिलपर वहाँ अकेले ही आयेंगे।" मेरी जान निकल गयी। मैं बेतरह घबड़ा उठा कि फ्लोरासे मुठ-भेड़ हुई तो कहीं फिर न मुझसे कोई बेवकूफी हो जाये।

'गार्डन-पार्टी साढ़े पाँच बजे शामको थी और मैं बारह ही बजेसे 'प्रेम सिखानेवाली पुस्तक' के प्रेम-मिलन नामक अध्यायको बरजबान रटने लगा, ताकि फ्लोराके सामने किसी तरह कण्ठ तो फूटे।

(ख)

ठीक साढ़े चार बजे मैं टमटम लेकर 'फ्लोरा' के घर पहुँच गया। क्योंकि नील-कोठी वहाँसे चार मीलपर थी। मेरी प्यारी खूब बनी-ठनी थी। बड़े तपाकसे मिली। मैं अभी मिलनेकी प्रथम बदहवासी दूर ही कर रहा था कि इतनेमें वह बोल उठी कि 'आओ, अन्दर चलके बैठें, अभी तो देर है और हमारे पापा भी नहीं हैं।" गजब हो गया। यहाँ पुरुष-जातिका एक सहारा था, वह भी कम्बख्त साथ ले आता। तब कुछ तो दिलमें ढाढ़स होता। हाय! हाय! अब क्या करूँ? अकेला मकान और मैं अकेले, वह

भी किसके सामने! जिसको मैं दिलमें कसके प्यार करता हूँ? अब यहाँ मेरी बेवकूफीको कौन सम्हालेगा?

मैं घबड़ाहटके समुन्दरमें ऊब-डूब रहा था। मुझे याद नहीं कि "फ्लोरा" मुझसे क्या कहती थी और मैं क्या जवाब देता था। जहाँतक मेरा ख्याल पहुँचता है मेरी जबान जब खुलती थी तो मुँहसे यही निकलता था कि देर हो रही है! जल्दी चलो, आखिर उसने एक दफे झल्लाकर कहा कि "अच्छा, चलो भी।"

मैं झटसे कमरेके बाहर हो गया और दनसे उचकके टमटमपर हो रहा। 'फ्लोरा, भी साथ बैठ गयी। मगर टमटमके पीछे पुरुष जातिका साईस मौजूद था, इसलिए पहलेसे अब मेरी घबराहट बहुत कुछ कम हो गयी और अब प्रेमकी रटी हुई बातें सब एक एक करके याद आने लगीं, मगर बेकार! क्योंकि 'फ्लोरा' से मिलते समय उसका चुम्बन नहीं किया था और पुस्तकमें लिखा था कि पहुंचते ही पहले चुम्बन लेना चाहिये। उसके बाद यह सब बातें कहीं। मगर उस कम्बख्त किताबमें यह कहीं नहीं लिखा था कि अगर मिलते वक्त घबराहटमें चुम्बन लेना भूल जाय तब कौन-कौनसी बातें कहनी चाहिये। इसलिये अब चुप रहनेके सिवाय मैं करता तो क्या करता?

'फ्लोरा' ने कई दफे रास्तेमें मुझसे पूछ-ताछ की, मगर मैं बहरा बना हुआ दूसरी तरफ ताककर यह बला टाल देता था ।

जब दूसरे मीलपर पहुँचा तो 'फ्लोरा' का रूमाल उसके हाथसे उड़कर सड़कपर जा गिरा । वैसे ही मैंने रास खींची । वाह रे मैं ! एक काम तो मैंने अक्लमन्दीका किया । मैं दिलमें अभी यही सोच-सोचकर खुश हो रहा था कि मेरी प्यारो मेरी इस मुस्तैदीपर दिलमें जरूर ही खुश हुई होगी कि इतनेमें हो 'फ्लोरा' रूमाल उठानेके लिये खुद ही उतरने लगो । मेरे हाथमें रास थी, इसलिये मैं तो उसे छोड़ नहीं सकता था । मगर साईसको तो झट उतरकर रूमाल उठा देना चाहिये था । उसकी तरफ जो घूमकर देखा तो मालुम हुआ कि वह ऊँघ रहा है । बस, मेरे बदनमें आग ही तो लग गयी । जीमें आया कि कम्बख्तके चपत लगाऊँ और इसी इरादेसे मैंने अपना हाथ भी उठाया । मगर हाय ! हाय ! हाथके साथ रास भी उठ गई । घोड़ी चल पड़ी । उस वक्त फ्लोराका एक पैर पावदानपर और दूसरा पैर अभी सड़कपर ही लटक रहा था । यह बड़ी खैरियत हो गयी कि वह पहयोंके नीचे नहीं गिरी, बल्कि लुढ़कती हुई सड़कके नीचे खन्दकमें जा गिरी । इस तरह उसकी जान बच जानेकी

मुझे बड़ी खुशी हुई और इस खुशीको इस वक्त जाहिर कर देना ही मुनासिब समझा। इसलिये मैं बड़े जोरोंसे चिल्ला उठा— "मुबारक हो।"

फिर भी घोड़ीकी यह बेतुकी हरकत मुझे बुरी लगी; क्योंकि कम-से-कम उसे तो समझना चाहिये कि किसीके उतरते या चढ़ते वक्त एकदम चल देना मुनासिब नहीं है। अगर ऐसे वक्त इसको तम्बीह न की जायगी तो इसकी यह आदत बादको फिर किसी तरहसे छूट नहीं सकती। इसलिये चाबुक निकाल मैं घोड़ीपर जुट गया और उसपर सड़ासड़ आठ-दस चाबुक कसकसके झाड़ दिये। मगर गजब हो गया! क्योंकि जब होश जरा ठिकाने हुए तब मालूम हुआ कि 'फ्लोरा' को तो वहीं खन्दकमें बिलकुल औंधी बनी हुई छोड़कर मेरी गाड़ी नील कोठीको भी पारकर गयी।

(ग)

मैं नील कोठीसे दो मील आगे एक पेड़के नीचे बैठकर अपनी कम्बख्तीपर आँसू बहाने लगा। क्या करता? रास खींचते-खींचते मेरे हाथ छिल गये। घोड़ीके गलफड़ कट गये मगर वह रुकी ही नहीं। बड़ी मुशकिलोंसे बहुत पुच-कारने-चुचकारनेपर इसने दम भी लिया तो नील-कोठीसे पूरे एक कोसपर। लीजिये, हमारी 'गार्डन-पार्टी' तो भाड़में

गयी। उसपर एक फिक्र यह सवार हुई कि फ्लोरा इस दफे फिर नाराज हो गयी होगी। इसमें मेरा कसूर ही क्या था? वह रूमाल उठानेके लिये खुद क्यों उतरी?

मगर वह अपना कसूर न देखेगी। बल्कि उल्टा दोष मुझीपर देगी। इसलिये इसके लिये पहले ही से तैयार रहना ज्यादा अच्छा है। यह तो मानी हुई बात है कि जबानसे मैं उसके सामने कुछ कह न सकूंगा। इसलिये अपनी डायरीसे पन्ने फाड़कर उसपर 'फाउण्टेनपेन' से लिखने लगा।

घण्टे भर तक यही कार्रवाई जारी रही और डायरीके सभी पन्ने खतम हो गये। मगर पढ़नेपर मुझे अपनी ही बातें खुद बुरी मालूम हुईं। इसलिये मैंने सब नोचकर फेंक दिया। इधर शामकी अंधियाली भी शुरू हो चली और कागज भी टुकड़े-टुकड़े हो गये। अब क्या करता? डायरी उलटने-पलटनेपर उसमें एक सादा पन्ना दिखाई दिया। उसको झट उसमेंसे निकाल लिया और उसपर फिर लिखना शुरू किया। मगर एक तो कागज छोटा और उसपर शामकी अंधियाली। मैं इतना ही लिख सका—

"मेरी प्यारी, प्राणोंकी प्यारी, दिलकी रानी, चाहतकी पुतली, कलेजेका टुकड़ा, दिलदार, दिलवर, दिलदारा, सनम, जानमन, प्रेमकी देवी, मेरे पूजनेकी मूर्ति······"

बस, इतने ही सिरनामोंमें कम्बख्त कागज भर गया और मतलबकी बात एक न लिख पाया। क्या करता ? उसे जेबमें रख टमटमपर सवार हो, घरकी तरफ चला; क्योंकि गार्डन-पार्टीमें तो अब उल्लू बोलता होगा। वहाँ जाना बेकार था।

जब मैं मिस्टर फ्रेण्डलीके मकानके पास पहुँचा तो अंधियाली घनी हो गयी थी। फिर भी मैंने दूरहीसे भाप लिया कि 'फ्लोरा' अपने फाटकके सामनेवाली सड़कपर अकेली टहल रही है। मैं पचास कदम पीछे ही चुपकेसे टमटमसे उतर पड़ा और तलवोंके बल चलता हुआ उसकी तरफ बढ़ा, क्योंकि मैं जानता था कि अगर मेरी आहट पाकर मेरी तरफ ताक देगी तो फिर मेरी बदहवासी शुरू हो जायगी और तब मैं 'प्रेम-मिलन' का सारा 'प्रोग्राम' भूल जाऊंगा; इसलिये उसके पास पहुँचते ही मैंने उसके पीछेसे लपककर एकाएक उसे चिमटा लिया और उसकी कनपटी तड़ाकसे चूम ली; क्योंकि उसके आगे मेरा मुँह पहुँच ही नहीं सका था। वह बड़े जोरसे चीख उठी। मैंने झटसे अपनी जेबसे वह प्रेम-पत्र निकाल उसके हाथमें ठूंसकर अपने मकानकी तरफ पैदल ही सरपट दौड़ा। शाबाश! जिन्दगीमें एक काम तो मरदानगीका किया।

(घ)

मैं अपने मकानपर 'प्रेम' सिखानेवाली पुस्तकसे फ्लोराके साथ अपने मिलनको घटनाका मिलान कर करके-दिल-ही दिल फूला नहीं समाता था। यद्यपि उससे मिलते समय पुस्तकके अनुसार मैं उसे प्यारी या प्राणको प्यारी कुछ न कह सका तो भी प्रेमकी तीन दर्जन उपाधियाँ तो लिखकर उसके हाथमें दे दी। बात वही हुई, चाहे नाक इधरसे पकड़ो या उधरसे। उन्हें पढ़कर फ्लोरा पार्टीमें न पहुँच सकनेका रंज जरूर ही भूल जायेगी और मैं भी तो वहाँ नहीं जा सका।

इसमें मुझे अब जरा भी शक नहीं रहा कि यह प्रेमोपाधियाँ फ्लोराके रंजको ही दूर न करेंगी, बल्कि उसे बहुत ही खुश भी करेंगी और अब वह जरूर ही समझेगी कि 'टाम बेवकूफ नहीं है।' इस ख्यालसे मेरी खुशीका ठिकाना न रहा।

मैं अपने आनन्दमें इतना मस्त हुआ कि दरवाजा भेड़ कर कमरेमें नाचने लगा। अभी मैं नाच ही रहा था कि इतनेमें दरवाजा भड़भड़ाकर खुला और मि० फ्रेण्डली लाल आंखें किये और पैर पटकते हुए घुस आये। न तो सलाम न बन्दगी और आते ही हजरतने एक हाथसे मेरा कान पकड़ा और दूसरेसे लालटेन उठा लिया और मुझे इसी तरह बाहर ले चले।

मुझे उनकी इस बेतुकी कार्रवाईपर बड़ा गुस्सा मालूम हुआ।

मगर क्या करता ? प्रेमिकाओंके बाप हमेशा पाजी ही होते हैं। यह बात उस पुस्तकमें साफ-साफ नहीं लिखी है; मगर गौर करनेसे इसका पता चल जाता है। इसलिये मि० फ्रेडली भला अपनी हरमजदगी दिखानेसे कैसे बाज आ सकते थे ? यही सोचकर मैंने कुछ बोलना फजूल समझा।

उन्होंने बाहर सड़कपर ले आकर एक पालकी गाड़ीमें, मेरा सर ठूँस दिया। उसमें मैंने देखा कि 'फ्लोरा' हाथमें, सरमें और टांगमें पट्टी बाँधे हुए कराह रही है। मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ कि अभी तो यह टहल रही थी और इतनी ही देरमें इसके हाथ-पैर कैसे टूट गये। मैंने घबराकर पूछा कि "अरे ! यह आपको क्या हुआ ?"

वह कुछ भी न बोली; बल्कि आंख उठाकर मेरी तरफ देखना भी गवारा नहीं किया। मगर उसका पाजी बाप किटकिटा कर कहका—"हरामजादे ! खुद ही इसको जानसे मारकर सड़ककी खाईमें डाल गया और खुद ही अब अनजान बनकर हाल पूछता है। अगर इत्तफाकसे मैं मौकेपर पहुंचकर इसे सीधे अस्पताल न ले जाता तो यह तो मर चुकी थी। वहींसे आ रहा हूँ।"

इतना कहते हुए मुझे एक करारा झापड़ मारकर उन्होंने अपनी हरमजदगी नंबर २ दिखलायी। मैं अभी अपनी खोपड़ी सहला

ही रहा था कि इतनेमें मेरी टमटमपर मिसेज और मिस्टर 'टेनी' पहुंचे। दोनों बूढ़े-बूढ़ी उसपरसे उतरकर मेरी तरफ शिकारी कुत्तेकी तरह झपटे और दोनों तरफसे मेरे दोनों कान पकड़कर दनादन झटका देने लगे। मैं बड़े चक्करमें पड़ गया कि इन कम्बख्तोंको सूझा क्या है। दोनों पचास बरसके ऊपर हो चुके हैं और अब भी इन गदहोंमें लड़कपनकी बदमाशी भरी है। मिस्टर फ्रेण्डलीको इन बूढ़ोंकी यह कार्रवाई बहुत पसन्द आई। क्यों न आती, वह मेरी प्रेमिकाके बाप ही ठहरे। तभी तो उन्होंने इन लोगोंको और मेरे ऊपर यह कहकर लुढ़का दिया कि "इसे खूब मारो। यह हरामजादा इसी काबिल है।"

इतना सहारा पाते ही बूढ़ा ताकतमें एकदम जवान हो गया वह कस—कसके मेरा कान उखाड़ता हुआ कड़ककर बोला—"इस सूअरके बच्चेको मैं कच्चा चबा जाऊंगा। इसने हमारी बीबीको बदनीयतसे चूमकर उसकी इज्जत बिगाड़ी है।"

अब बुढ़िया भी उमक पड़ी। जेबसे कागज निकालकर बड़े तावसे बोली—"यहींतक नहीं, बल्कि इस कमीनेने यह प्रेमपत्र खुद अपने हाथसे मुझे दिया है। यह देखिये।"

'फ्लोरा' गाड़ीके भीतर अबतक चुप रही। मगर इस वक्त वह बोल उठी—"सबसे पहले उसे मैं देखूंगी।"

धत् तेरेकी! अब तो मुझसे वहाँ खड़ा नहीं रहा गया। जान

छुड़ाकर भागा। पापा भी कम्बख्तीके मारे न जाने कहाँसे इधर ही आ रहे थे और मुझसे टकराकर मेरे रास्तेमें चारों-खाने चित्त गिर पड़े। मैं जल्दीमें था। इसलिये उनके पेटपर पाँव रखता हुआ साफ निकल गया। क्या करता? उस वक्त मुझे अपनी जान प्यारी थी या पापाकी तोंद? आप ही बताएँ।

बाल-डैंस

(क)

गजब खुदाका ऐसा अन्धेर ! इतना जुल्म ! ऐसी बेरहमी ! ऐसी जल्लादी ! उफ़ ! कहते आँखोंसे डेढ़ पाव आँसू निकल पड़ते हैं। जबान टुकड़े-टुकड़े हुई जा रही है। मगर उस कस्साइन, हत्यारिन, विश्वासघातिन 'फ्लोरा' का मेरे सरपर यह आफत ढाते जरा भी कलेजा न पसीजा ? अगर वह मुझसे रूठ ही गयी थी, तो मुझे कान पकड़कर उठाती-बैठाती, डांटती-डपटती या चाहे दो-चार गालियाँ दे लेती। चलिये उसके दिमागकी गर्मी हल्की पड़ जाती। अगर वह यह नहीं कर सकती थी तो कम-से-कम यह तो करती कि मुझे पत्र द्वारा बतला देती कि मैं तुमसे बिगड़ी हुई हूँ। मैं फौरन अपने पापाके हाथ-पैर जोड़ता और वह बेचारे जाकर उसके बापसे मिल-जुलकर उखड़ा खेल फिर जमा देते, क्योंकि मैं ऐसे मामलोंमें गदहा हूँ तो हूँ, मगर वह तो नहीं हैं। बल्कि वह तो इस फनमें उस्ताद हैं। कई दफे वह ऐसे ही गाढ़े वक्तमें काम आकर इस हुनरमें अपनी एकताईका सबूत भी दे चुके हैं और इन्होंने ही तो उसके बाप मिस्टर फ्रेण्डलीसे दोस्ती करके मेरे लिए 'फ्लोरा' के साथ शादी

करनेका रास्ता आसान कर दिया था। मगर उस जालिमको मेरे पापाके ऊपर भी दया न आयी और ऐसा पाजीपन कर बैठी। उफ! डूब मरनेकी बात है। मगर ईश्वर जाने किसके लिये—उसके लिये, मेरे लिये या पापाके लिये।

मैंने तो वह प्रेम-पत्र उसीके लिए लिखा था। अगर मैंने उसे भूलसे मिसेज 'टेनी' को दे दिया तो इसमें मेरा कसूर ही क्या था? अन्धेरेमें मैंने उस बुढ़ियाको ही 'फ्लोरा' समझा। इसके लिये मैं सजा भी काफी पा चुका था। फिर उसे इस तरह बिगड़नेकी भला कौन सी वजह रह गयी थी, जो उसने जल-कर सिर्फ मुझे जलानेके लिये मुझे धत्ता बताकर चट दूसरेसे अपनी शादी कर ली। उस जालिमने यह तनिक नहीं सोचा कि इसकी खबर पाते ही मेरे पापा मुझपर कितनी आफतें ढावेंगे, क्योंकि इसकी नींव उन्हींकी डाली हुई थी। उन्हींकी दिली मन्शा यह थी कि मैं 'फ्लोरा' के ही साथ शादी करूँ। इसीलिए वह इस मामलेमें मेरी बिगड़ी कदम-कदमपर बनाते थे। मगर अब तो इस बेदर्दने इसका मौका-ही छीन लिया। अब वह बेचारे मेरी भूल क्या सुधारें अपना सर? हाय! हाय! इस बुढ़ापेमें उनकी सारी कोशिशों और उम्मीदोंपर उस दगाबाजने उल्टी झाड़ू फेर दी। इसलिये 'फ्लोरा' के पराई हो जानेका मुझे अपने लिए उतना ही

गम नहीं है, जितना पापाके लिये। मगर अब मैं कर ही क्या सकता हूँ ?

मुझे अपने लिये भी गम है। यह कैसे कहूँ कि नहीं है। क्योंकि मुफ्तमें मेरी इतनी मुहब्बत बरबाद गयी। जब 'कोर्टशिप' करते-करते मैं प्रेमके अंद्धड़में पहुँचा तो उस पाजीने मेरी तकदीरकी किश्ती ही उलट दी। अब इस औंधी हुई हालतमें अन्य किसीसे मैं किस तरह प्रेम कर सकता हूँ ? प्रेम पाठ फिर नये सिरेसे क, ख, ग, घ से शुरू करना पड़ेगा। जो अब मेरे बापके लिये भी नहीं हो सकता क्योंकि इतनी ताब और इतना वक्त कहां है ? जबतक गिरते-पड़ते 'फेल-पास' हो किसी तरह मर मरकर नये प्रेम पाठके अन्ततक पहुँचूँगा, तबतक तो मेरी जवानी ही खतम हो जायेगी। मगर अफसोस ! उस नासमझने इन बातोंपर जरा भी गौर नहीं किया और मुझे अधूरे ही पाठमें धत्ता बताया। यह खबर नहीं कि इससे मेरी क्या दशा होगी। "अधजल गगरी छलकत जाय।" और "नीम हकीम खतरे जान।" ऐसे-ऐसे मसले सैकड़ों हैं और सभीको मालूम हैं। फिर भी उसने जान-बूझकर मेरी 'सांप छछून्दर की 'गति' कर दी। उस नादानने यह भी नहीं सोचा कि मेरा यह अधूरा पाठ अब भला किस तरह पूरा हो सकता

है उसका पति दूरसे मुझे देखते ही डण्डा लेकर मारने दौड़ेगा कि नहीं? उसपर मुसीबत यह है कि उस जोरूके चौकीदारने दो 'बुलडाग' पहलेसे ही पाल रक्खे हैं। यह किलाबन्दी उसने मेरे ही लिये की होगी, मगर नाहक क्योंकि मेरे तो यों ही 'फ्लोरा' के सामने जाते होश गुम हो जाते हैं।

इस आफतमें यही एक बड़ा संतोष है कि पापा महाने भरसे बाहर गये हुए हैं, वरना उसकी इस बदमाशीका कसूर मुझीपर लगाते और फिर मेरी पीठ और खोपड़ी दोनों ही अपने कर्मोंको रोतीं। मगर अब इनकी क्या हालत होगी, मैं नहीं जानता। क्योंकि वह आज ही आनेवाले हैं और इस मनहूस शादीकी खबर उन्होंने पहले सुन ली होगी।

(ख)

पापा आये तो सही, मगर इस दफे बड़े भलेमानुस निकले; क्योंकि वह मुझसे बहुत ही थोड़ी बातचीत करके रह गये।

उन्होंने कहा—"टाम, तुम अगर औरत होते तो बहुत अच्छा था।"

मैंने दबी जबानमें जवाब दिया—"भला ऐसी तकदीर

मेरी कहां थी ? मगर अब भी मैं किसी तरकीबसे औरत बनाया जा सकूं, तो वह मुझे हजार बार मंजूर है। क्योंकि तब मेरी एक भी बेवकूफी मेरी नहीं कही जा सकती, सब दूसरोंके ही मत्थे मढ़ी जाती।"

वह चौंककर बोले—"यह क्या ? कहीं मर्द भी तरकीबों से औरत बनाया जा सकता है ?"

मैंने दृढ़ता-पूर्वक उत्तर दिया—"जब मुर्गी अण्डा देते-देते उकताकर अकसर मुर्गा बन जाती है, उसी तरह हालमें ही एक औरत मर्द बन गयी है, यह बातें मैंने अपनी आंखोंसे अखबारमें पढ़ी है, तब मर्द भी जरूर औरत बन सकते हैं। बशर्ते कि वह तरकीब मालूम हो। वही तो मैं मुद्दतोंसे ढूंढ़ रहा हूं।"

पापा—"बस, चुप भी रहो। ऐसे बेवकूफ न होते तो आज दिन मुझे तुम्हारी वजहसे इस तरह शर्मिन्दगी क्यों उठानी पड़ती ?"

मैं—"शर्मिन्दगी ?"

पापा—"बेशक, शर्मिन्दगी। तुझे छोड़कर मिस फ्रेण्डली दूसरेसे शादी कर लें, यह क्या कम जिल्लतकी बात है ? जा, चुल्लू भर पानीमें डूब मर। तेरी बेवकूफियोंने ही उसे ऐसा करनेके लिये मजबूर किया ! अब अपने कर्मोंपर हाथ धर कर

दो। तूने खाली उसे ही नहीं खोया ; बल्कि उसके साथ दौलत और इज्जत दोनों पर लात मारी। अब तुझे कौन पूछेगा ? अब जन्मभर तू बिनब्याहा रहा।"

मैं—"इसके लिये मैं क्या करूँ ? ईश्वरने औरतें भले-मानुषोंके लिये बनाया नहीं है। तभी तो वह लोग बद-माशोंको ज्यादा पसन्द करती हैं और उन्हींको यह मिलती भी हैं।"

पापा फुफकार कर उठ खड़े हुए और कमरेमें कोल्हूके बैलकी तरह चक्कर लगाने लगे। फिर बीचमें खड़े होकर पादरी-की तरह व्याख्यान झाड़ना आरम्भ किया।

पापा—"बिनब्याहोंकी 'सोसाइटी' में कुछ भी पूछ नहीं होती। न ये लोग बड़े-बड़े जलसोंमें उस आवभगतके साथ बुलाये जाते हैं और न उनकी कहीं वैसी इज्जत होती है। बेऔरतका मर्द 'सोसाइटी' में बेदुमका जानवर समझा जाता है। उसपर तुम ठहरे परले सिरेके बेवकूफ। तुम्हें लोग योंही ओछी नजरोंसे देखते हैं और हमेशा यों ही देखेंगे। अगर तुम्हारी 'सोसाइटी' में कभी कुछ भी इज्जत होगी तो तुम्हारी वजहसे नहीं, बल्कि तुम्हारी बीबीकी वजहसे। इसलिये मैं चाहता था कि तुम शादी करते। किसी तरह गदहेसे आदमी तो समझे जाते।"

मैं—"मैं कब कहता हूँ कि मैं शादी नहीं करना चाहता था? उसी दगाबाजने तो दगाबाजी की और आप भी यहाँ नहीं थे। ऐसी हालतमें मैं भला अकेले क्या कर सकता था? अच्छा, अगर आप कोशिश करके फ्लोराको किसी तरहसे तिलाक दिलवा दें तो फिर मैं भी उनसे शादी करके दिखा दूं। अबकी मैं चूकूंगा नहीं। चाहे जो हो, पक्का वादा करता हूँ पापा, पक्का वादा।"

पापा आगबबूला हो गये। पिनपिनाकर बोले—"तुम्हारे लिये वह अब तिलाक देने जायगी? अगर तुम इसी लायक होते तो भला वह दूसरेसे शादी करती? अब उसकी उम्मीद कैसी? क्या दुनिया लड़कियोंसे एकदम खाली हो गयी है? मिस नैन्सी, मिस जोन्स, मिस स्मिथ, मिस मिलर न जाने ऐसी कितनी ही लड़कियाँ इसी शहरमें शादी करनेके लिये तैयार बैठी हुई हैं। अगर तू जरा भी कोशिश करे तो जिस किसीसे शादी कर सकता है।"

मैं—"मैं तो कर सकता हूँ। मगर उनमेंसे कौन मेरे साथ शादी कर सकती है; मुझे यह तो नहीं मालूम।"

पापा—"मालूम करनेसे मालूम होगा कि योंही हाथपर हाथ धरे घरमें बैठे रहनेसे मालूम होगा?"

मैं—"अच्छा, तो फिर आप इन लोगोंकी एक फेहरिस्त

बना दीजिये और उनके पास खत भेजनेके लिये एक मजमून भी बना दीजिये। बस, मैं सबसे एक-एक खत लिखकर पूछे लेता हूँ।"

पापा—"धत् तेरे बेवकूफकी! शादीकी बातचीत कहीं इस तरहकी जाती है? मुहब्बतका सौदा भला इस तरह परखा और पटाया जाता है? सोसाइटीमें रहने और लोगोंसे मिलने-जुलनेके तरीके सिखाते-सिखाते मैं मर मिटा, मगर फिर भी तू उल्लूका उल्लू ही रहा। अफसोस! अब क्या करूँ?"

मैं कुछ कहने ही वाला था कि उन्होंने मुझे घुड़ककर चुप कर दिया और अपनी जबानका चरखा फिर चलना शुरू किया—"बस बको मत, मेरी बात गौरसे सुनो। कल 'युनियन क्लब' में बड़ी धूमधामसे 'बाल-डैन्स' नाच है। ऐसा शानदार नाच यहाँ दस बरसोंसे नहीं हुआ है। इस मुहब्बतके बाजारमें लोग दूर-दूरसे दिलोंकी दूकान लगाने आवेंगे, क्योंकि नाचमें यही होता है। इसलिये कल तू भी वहाँ जाकर अपनी तकदीर आजमा। मगर खबरदार, वहाँ कोई बेवकूफी न कर बैठना, वरना हमेशाके लिये नक्कू हो जाओगे और कहीं भी मुँह दिखाने लायक न रहोगे। समझे?"

(ग)

नाचनेमें मैं जरा भी नहीं घबड़ाता। खूब सीखा है। बापाने शिक्षक रखकर इसकी शिक्षा मुझे दिलवायी है। क्योंकि वह कहते हैं कि इस हुनरके जाननेवालोंका 'सोसाइटी' में बड़ा आदर होता है और लेडियां तो उनपर जान देती हैं। मगर इन बातोंकी सच्चाई जांचनेका कभी तकदीरने मौका ही न दिया। क्योंकि लड़कियोंमें सिर्फ 'फ्लोरा' ही एक ऐसी थी, जिससे मुझसे दिली दोस्ती पैदा हो गयी थी। मगर वह भी दूर-ही-दूर की। इसलिये जब उसके साथ नहीं नाच सका तो दूसरी किसीके साथ नाचनेका भला कहांसे कलेजा लाता? यहाँ तो औरतके सामने जाते ही मारे घबड़ाहटके हाथ पाँव फूल जाते हैं तो इन लोगोंसे सीनेसे सीना मिलाकर नाचना मेरे लिये भई सीधे मौतके मुँहमें जानेसे कम नहीं है। फिर इसके लिये मैं किस तरह हिम्मत कर सकता था? मगर अब नहीं। ऐसी कम हिम्मती और बुजदिलीपर लात मारूँगा और ऐसा लाजवाब नाच नाचूंगा कि और तो और ही है फ्लोरा भी दांतों तले उंगली दबायेगी और पछतायेगी। क्योंकि इस हुनरमें मुझे कमाल तो है ही। तब डर किस बातका?

मगर मुद्दतोंसे इसका अभ्यास छूटा हुआ है और

बिना मश्क किये सैकड़ों आदमियोंके बीचमें नाचना भी ठीक नहीं। मुमकिन है कि कोई भद्दी गलती हो जाय और मैं घबड़ा जाऊँ, इसलिये मैंने पापासे कहा कि जरा मास्टरको बुलवाकर मुझे Foxtrot और Watz (भिन्न प्रकारके नाच) के कदमोंका मश्क करा दीजिये। मगर वह इसके लिये खुद ही तैयार हो गये और वह चट ग्रामोफोनमें 'बैण्ड' का 'रिकार्ड' लगाकर मेरे साथ नाचने लगे और इसी तरह उन्हें रातभर नाचना पड़ा, क्योंकि मैं उन्हें अखाड़ेसे निकलने ही नहीं देता था। जहां जरा वे सरकते, तहाँ मैं "एक दफा और" कहके चिपक जाता था। ताकि उन्हें यकीन हो जाय कि मैं 'क्लब' में अपनी कामयाबीके लिये किस तरह जी तोड़ तैयारी कर रहा हूँ और असलियत भी यही थी कि चाहे जो हो, अब जान रहते फिर कभी अपनेको बेवकूफ बननेका मौका ही न दूंगा।

आखिर पापा पसीने-पसीने हो गये। मारे थकावटके उनके पैर लड़खड़ाने लगे। एक कदम भी चलना उनके लिये दूभर हो गया। मगर उनकी मिहनत बरबाद नहीं गयी। वह मेरा लोहा मान गये। शाबाशी देकर उन्हें कहना पड़ा कि "शाबाश टाम, शाबाश! तुम नाचनेमें कमाल करते हो। अब मुझे यकीन हो गया कि क्लबमें तुम जरूर नाम करोगे।

तुम्हारे साथ नाचनेमें 'लेडियाँ' अपनी खुशकिस्मती समझेंगी और अब तुम्हारी शादी हो जानेमें मुझे कोई अन्देशा नहीं रह गया।"

(घ)

नाच-घरका हाल बिजलीके लम्पोंसे जगमगा रहा था। सैकड़ों जेन्टिलमैन और लेडियाँ आपसमें कबूतरोंकी तरह गुटर-गूं गुटर-गूं कर रहे थे। चुहल और छेड़छाड़का बाजार हर तरफ गर्म था। शोखीकी सुरीली हंसी चारों ओर गूंज रही थीं। मगर मेरे चेहरेपर हवाइयाँ उड़ रही थीं। इतनी औरतोंका जमघट देखते ही मेरे दिलमें बदहवासीका तूफान उठने लगा था। उसपर पापाने और गजब ढा दिया। वे मुझे कठपुतलीकी तरह घसीट-घसीट कर औरत मर्द सबोंसे मुझे हाथ मिलवा मिलवा कर परिचित कराने लगे। बस, मेरा दम एकदम सूख गया। सभी नौजवान अपने साथ नाचनेके लिये लेडियोंमें अपनी संगिनी चुन रहे थे। मगर मैं ज्यों-का-त्यों अपनी जगहपर अड़ा खड़ा था। खैरियत यही थी कि आँखें खुली हुई थीं सही, मगर मुझे कुछ दिखाई नहीं पड़ता था। मगर अफसोस! मेरे पापा ही इस जगह मेरे दुश्मन हो गये। उन्होंने मुझे भलेमानुसोंकी तरह खड़ा भी नहीं रहने दिया। वह

बार-बार मुझे खोद-खोदकर मेरे कानोंमें न जाने क्या-क्या कहने लगे। एक दफे झल्लाकर बोले—"अरे! कम्बख्त किसीसे नाचनेके लिये कहेगा भी या योंही काठके उल्लूकी तरह खड़ा रहेगा।

खैरियत हो गयी। बैंड बज उठा और साथ ही दस जोड़े अखाड़ेमें थिरकने लगे। इसलिये उनकी बात और किसीने नहीं सुनी। उन्होंने फिर वही बात मेरे कानमें मुँह लगाकर दुहरायी। इस दफा उनका कहना मेरी समझमें जरूर आया। मगर मैं तो जन्म भर नाचा अपने शिक्षकके साथ या पापाके साथ। इसलिये अब और किसीसे अपने साथ नाचनेके लिये यहाँ किस तरह कह सकता था? उन्होंने फिर हुरपेटा। उस वक्त दूसरोंका नाच देखकर मुझमें भी नाचनेका शौक पैदा हो गया था। बस, चट अपने पापाकी ही कमरमें हाथ डालकर मैं अखाड़ेमें थिरकने लगा। पापा मुझे ढकेलकर भीड़में गायब हो गये। लोग बड़े जोरोंसे हंस पड़े। मैं जल भुनके और भी खाक हो गया। मैं समझ गया कि शायद इन लोगोंने यह जानकर कि मैं नाचना नहीं जानता हूँ, इसीलिये मेरी हँसी उड़ाई है। अगर पापा ऐन मौकेपर दगा न दे जाते तो मैं दिखला देता कि मैं इस हुनरमें किसीसे कम नहीं हूँ।

पहला नाच खतम हो गया। मगर बैण्डकी आवाज मेरे कानोंमें ज्यों-की-त्यों गूंज रही थी। नाचनेवाले भी अब मेरे पास आ आकर हंसीमें शामिल होने लगे। हंसीके बढ़ते ही मेरी घबराहट भी चौगुनी बढ़ चली। मैं मारे गुस्सेके अन्धा हो गया। सबसे ज्यादा गुस्सा इस बातका था कि पापाने अगर बेवकूफी की तो की उसपर मुझे ऐसी आफतमें डालकर अकेले क्यों छोड़ गये। जीमें आया बड़े जोरसे पापाको पुकारूं। मगर मुंहसे आवाज ही न निकली। उस वक्त अगर जमीन फट जाती तो मैं बड़ी खुशीसे उसमें समा जाता और फिर निकलनेका नाम न लेता। क्योंकि यह हंसी मेरे कलेजेमें तीरकी तरह चुभ रही थी। आखिर यह जलन कहाँ तक सम्हालता? इसलिये दिल कड़ा करके जीमें ठान लिया कि अब इन लोगोंको अपने नाचका हुनर दिखा दूंगा। चाहे जो हो। तभी यह हंसी, वाह वाहमें बदलेगी और मैं इस मुसीबतसे छुटकारा पाऊँगा। मगर फिर बड़ी मुश्किल पड़ी कि इसके लिये अपनी संगनी बननेको किससे और कैसे कहूं। क्योंकि युवतियोंको देखते ही मेरी जबान तालूसे सट जाती है और हाथ-पैरमें लकवा मार देता है। यह कसूर मेरी आँखोंका है। अगर मैं इन लोगोंको न देख सकूं तो मेरी हालत कभी ऐसी न

हो। इसलिये अपनी घबड़ाहटको रोके रखनेका यही उपाय सूझा कि अपनी आंख बन्द किये किसी 'लेडी' से संगिनी बननेको कहूँ और झट उसकी कमरमें हाथ डालकर नाचने लग जाऊँ।

बैण्ड बजने लगा। दूसरे नाचके लिये युवक अपनी-अपनी संगिनी युवतियोंको लेकर अखाड़ेकी तरफ लपके। मैंने आंखें फाड़कर चारों तरफ देखा तो सभी 'लेडियां' बझीं हुई मालूम हुईं सिर्फ एक ही युवती फुटटैल दिखाई पड़ी, जो एक खानसामाके हाथमें चायका प्याला दे रही थी, मगर उसकी तरफ भी एक 'जेण्टिलमैन' को बढ़ते देखा। समय चूकनेका नहीं था, इसलिये झट आंखें बन्द कर मैं उस 'लेडी' की तरफ दौड़ा ताकि उस युवकके पहुँचनेके पहले मैं इसे झपट ले जाऊँ। मैंने जाते ही उसकी कमरमें हाथ डाल दिया और नाचकी फुदक फुदकता हुआ उसे अखाड़ेकी तरफ ढकेलने लगा। बड़े जोरोंका हल्ला हुआ। समझमें नहीं आया कि क्यों। मगर वह इससे घबरा गयी और अखाड़ेमें पहुँचते-पहुँचते वह गिर पड़ी। मेरा हाथ कसा हुआ था। इसीलिये कि पापाकी तरह कहीं यह भी न भाग खड़ी हो; क्योंकि दूधका जला मट्ठा फूंक-फूंककर पीता है, जल्दीमें अपने हाथका बन्धन

ढीला न कर सका। इसलिये मैं भी उसके ऊपर अररर धड़ाम हो गया। उसके बाद मेरी पीठपर यकायक दुरमुठ चलने लगा। जब मैंने आंखें खोलीं तो देखा कि पापा अपनी फौजी ठोकरोंसे मेरा सत्कार कर रहे हैं और मैं खानसामा-को अपने नीचे लिये पड़ा हूं। धत् तेरी तकदीरकी !

———

परदेश-यात्रा

न बाबा; कानोंपर हाथ धरता हूँ। अब जो कोई परदेशमें किसीके यहाँ मुझे ठहरनेको कहे, उसकी ऐसी-तैसी। पेड़के नीचे पड़ रहना मुझे लाख बार मंजूर है, मगर किसीके घरपर सोना मेरे बापको भी अब गवारा नहीं हो सकता। एक तो मुफ्तमें घरवालेका एहसान अपने सरपर लादो, दूसरे रात भर जो दिल-पर गुजरता है उसका हाल बस दिल ही जानता है। याद आते ही कलेजा दहल उठता है।

अव्वल तो मकानवाले ऐसे अक्लके दुश्मन होते हैं कि मेह-मानके कमरेमें अपने घरका नकशा कभी नहीं टाँगते, उसपर मुसीबत यह कि सूर्य भी रातको अपना मुँह छिपा लेता है जिससे पता ही नहीं चलता कि पूर्व किधर है और पश्चिम किधर। ऐसी आफतमें अगर मैं मिस नेलीके बाप मिस्टर पार्कके मकानमें जरा भटक गया तो मेरा क्या कसूर? मकान भी मकानकी तरह हो तो खैर, मगर वह मकान काहेको। कम्बख्त भूलभुलैयेसे भी बत्तर है। ईश्वर न करे फिर कभी किसी भलेमानुषको उसमें जानेकी नौबत आये।

मुझे उनके यहाँ जानकर रहनेकी कोई खास जरूरत न थी! मगर क्या करूँ, कम्बख्त पड़ोसियों और जान-पहचानवालोंको जिन बेहूदोंने 'बालडैन्स' में किसी युवतीके बदले एक खानसामाके साथ मेरे नाचनेकी जरा सी भूलपर ऐसी हँसी उड़ायी कि मेरा घरपर रहना मुश्किल हो गया, इसलिये भागकर परदेश आया और एक होटलमें ठहर गया। वहीं नेली अकसर चाय पीने आया करती थी। देखनेमें सीधी-सादी और बड़ी भोली थी। सबसे बड़ी खूबी उसमें यह थी कि कभी वह आंख उठाकर देखती न थी, इसीसे मुझे उसकी ओर घूरनेमें खास मजा आता था, क्योंकि आंख मिलते ही हमेशाकी तरह बौखला जानेका यहाँ कुछ डर न था। नेलीकी इस आदतने मुझे दो-चार ही दिनोंमें उसके बहुत कुछ नजदीक पहुँचा दिया और मैं चुपके-चुपके उसे प्यार करने लगा।

इस बीचमें कभी उससे बातचीतकी नौबत नहीं आयी। क्योंकि मैं सैकड़ों कोशिशें करनेपर भी औरतोंसे बात नहीं कर पाता। और वह भी किसीसे बोलना कम पसन्द करती थी, जैसा मैं था वैसी ही वह निकली। इसीसे दिल ही दिल दिलकी पटरी बैठ गयी और मैंने समझ लिया कि अगर ईश्वरने मेरे लिये कोई औरत बनायी है तो बस

इसीको। इसलिये इसके साथ प्रेम करनेमें कोई बेवकूफी नहीं हो सकती। मेरे टूटे हुए दिलको एक सहारेकी जरूरत भी थी और मुझे मुद्दतोंसे एक बीवीकी जरूरत थी ही। बस, दिलमें ठान लिया कि मैं शादी करूंगा तो इसीसे। खैर, शादी करना तो आसान नहीं है। अगर यह अपने वशकी बात होती तो न जाने अबतक कितनी दफा अपना ब्याह कर लेता। मगर मुश्किल तो यह है कि यहाँ औरत-को भी तो अपनी बीबी बनानेके लिये राजी करना पड़ता है। यही मुसीबत है। और यही अड़चन इस मामलेमें आ पड़ी। मगर खैरियत इतनी थी कि इस लड़कीकी चितवनों-पर—जिनसे मेरा दिमाग भड़कता है—मेरे आगे पलकों-का पर्दा पड़ा रहता था। इसीसे मेरी अक्ल जरा ठिकाने रही और मैं बहुत ठीक-ठीक अपना कदम बढ़ाता गया, यहाँतक कि मैंने कुछ ही दिनोंमें नेलाकी एक बुढ़िया फूफू मिसेज केटलीसे, जो कभी-कभी उसके साथ होटलमें आती थी, जान पहचान कर ली। खुद छेड़के उससे बोलता था और इसके पास बैठकर बड़ी देरतक इधर-उधरकी बातें करता था, ताकि यह जान-पहचान बढ़ती जाय और उसकी संगतिमें रहते-रहते नेलीसे भी बातचीत करनेकी हिम्मत पड़ने लगे। इस दोस्तीकी बुनियाद मैंने खाली सूखी बातोंपर

ही नहीं डाली; बल्कि बुढ़िया जब कभी अकेली आती थी तो इसके चाय पीनेका दाम अकसर मैं ही दे दिया करता था।

मिसेज केटली खाली बूढ़ी ही नहीं थी, बल्कि इनकी सूरत भी कुछ अजीब काट-छाँटकी थी, यह मुझे किसी तरहसे भी औरत नहीं मालूम होती थी। तभी तो मेरे लिये इनसे बेधड़क हँसना-बोलना या इनकी खातिर करना कोई बड़ी बात न थी।

आखिर इस जान-पहचानका नतीजा निकला और बुढ़िया एक दिन बातें करती हुई मुझे अपने मकान ले गयी। वहाँ मि० पार्कसे मुलाकात हुई। बातों-बातोंमें मालूम हुआ कि मि० 'पार्क' किरायेपर अपने यहाँ मिहमान भी ठहराते हैं। शायद इसीलिये बुढ़िया मुझे वहां ले गयी हो। खैर, थोड़ी ही देरकी बात-चीतमें मि० पार्कने कहा कि आप होटलमें नाहक पड़े हैं। यहीं आ जाइये। यहां हर चीजका सुभीता है और खर्च भी कम; क्योंकि होटलवाले तो बस कम्बल ओढ़ाकर लूटना ही जानते हैं।

मैं दूसरे ही दिन मय सामानके मि० पार्कके यहाँ आ धमका। कुछ खर्चकी कमीके ख्यालसे नहीं, बल्कि सच पूछिये तो नेकीसे मुहब्बत करनेमें सहूलियतके लिये। गो

कि उसके आगे मैं इतना नहीं बौखलाता जितना और औरतोंके सामने, फिर भी उससे बातचीत करते अभी हिचक तो मालूम होती ही थी और यह हिचकिचाहट उसके साथ रहते ही रहते दूर हो सकती थी।

मुझे एक अच्छा-खासा सजा-सजाया कमरा दिया गया। मेरा सामान ठीक तौरसे उसमें रख दिया गया। रातका खाना भी बड़े मजेसे समाप्त हुआ, क्योंकि खानेकी मेजपर कोई नौजवान औरतें न थीं। घर भरमें सिर्फ एक नेला ही जवान थी। वह उस दिन अपनी मांके साथ कहीं अलग निमन्त्रित थी। अबतक ईश्वरकी कृपासे कोई बात बेतुकी नहीं हुई। मगर जब बिजलीकी बत्तियाँ गुल हो गयीं और मैं बिस्तरेपर गया तभीसे मेरी मुसीबतें शुरू हुईं;

उस दिन पानी बरस जानेके कारण बलाकी सर्दी थी। कम्बलके नीचे सिकुड़े पड़े रहनेपर भी दांत कटकटा रहे थे। सोनेकी लाखों कोशिशें कीं, मगर जाड़ेके मारे नींद नहीं पड़ी। ऐसे वक्त शादीके मनसूबों पर भी कम्बख्त पाला पड़ गया था, वरना इसीसे दिलमें कुछ गर्माहट पहुँचती।

ऐसे ही वक्त खयाल आया कि मैं अपनी तालियोंका गुच्छा गुसलखानेमें छोड़ आया हूँ। फिर तो जिस तरह नाईके ख्यालसे हजामत खुजलाने लगती है, उसी तरह गुसलखानेकी यादसे

एक छोटी-सी शंका भी उत्पन्न हो गयी जो कम्बख्त जाड़ेकी रातमें अकसर हुआ करती है।

यह और मुसीबत हुई। आधी रातको सर्दीमें उठना कोई मामूली बात न थी। मगर उठना ही पड़ा। कम्बलके नीचेसे निकलते ही कलेजा हिल गया। द्वार खोला तो हवाका झोंका ऐसा लगा कि सारा बदन मानों कट-सा गया।

रात बिल्कुल अन्धेरी थी। मकान भरमें अन्धेरा छाया हुआ था। जिस घरमें बिजली बत्तियाँ लगी होती हैं, वहाँ यही हाल होता है। किफायतकी वजहसे सिर्फ जरूरत हीके वक्त लोग रोशनी करते हैं। गिरता पड़ता और टटोलता हुआ मैं गुसलखानेमें पहुँच गया और दीवारोंपर लम्प जलानेकी बटन टटोलने लगा। मगर धोखेमें हाथ शायद पानीके नलके पेंचपर पड़ गया और नहाने-वाला फव्वारा मेरे सर पर बड़े जोरसे खुल गया।

उफ! जान निकल गयी। पानीकी बौछारोंने यकायक मुझे ऐसा बौखला दिया कि मुझे उस वक्त कुछ करते धरते न बन पड़ा। इस घबराहटमें अपनी जगहपर जरूर कुछ घूम भी गया हूँगा, क्योंकि नल बन्द करनेके लिये फिर वह पेंच ढूंढ़नेसे न मिला। इतनी देरतक उस गजबकी सर्दीमें फव्वारेके नीचे खड़े रहनेसे मेरी क्या हालत हुई होगी, यह सोचते ही अब भी जूड़ी आ जाती है। मेरे कपड़े क्या, बल्कि उनके नीचे बदनकी खाल

तक ऐसी तर-बतर हो गयी, जो कई दिनोंतक लगातार धूपमें सुखानेसे कहीं सूख सकती। मुझे तो ख्याल था कि मेरे हाथ-पाँव जम गये और मैं वहीं ठंढा हो गया। मगर न जाने कैसे मैं वहाँसे जिन्दा निकल भागा यही ताज्जुब है।

इतना मुझे याद था कि गुसलखाने जाते वक्त मेरा कमरा दाहिने हाथकी तरफ था। इसलिए लौटते वक्त भी ठीक अपने दाहिने ही हाथकी तरफ वाले कमरेमें मैं घुसा, ताकि गलती न हो और लम्प जलानेके लिये जल्दीसे दीवारपर बिजलीका बटन दबाया। रोशनी तो न हुई मगर कमरेमें भर्राइटकी आवाजके साथ एकाएक सर्द हवाकी आँधी सी चलने लगी। भींगे हुए कपड़ोंपर यह हवाके झोंके जलेपर नमकका काम करने लगे। भागकर किधर बचता? कमरे भरमें हवा ही हवा फैली हुई थी। इतनेमें कोई पलङ्गपर बिलबिला उठा—"अरे यह बिजलीके पंखे कैसे खुल गये?" अब जाना कि यह तो मिस्टर पार्कका कमरा है। मैं उलटे पैर वहाँसे खिसका।

मारे सर्दीके दम निकलने लगा। भींगे हुए कपड़े बदनपर अब किसी तरहसे भी बरदाश्त नहीं होते थे। इस ठंढकमें मेरी अक्ल भी ठंडी हो गयी थी। पता नहीं चलता था कि मेरा कमरा कौन सा है। दो-एक दरवाजोंपर हाथ लगाया। मगर वे बन्द मिले। आखिर एक दरवाजा मेरे छूते ही खुल गया। समझ गया

कि यही मेरा कमरा है, क्योंकि मैं उसे खुला हुआ छोड़कर गया था। मैंने डरके मारे इस दफा लम्प जलानेकी कोशिश नहीं की, ताकि फिर न पंखे चलने लगें। अपने बदनपरके भीगे कपड़े उतारकर फेंके और टटोलता हुआ पलङ्कपे पहुँचा और जल्दीसे उसपर उचककर कम्बलके नीचे अपना प्राण बचाना चाहा। वैसे ही उसपर कोई चौंककर चिल्ला उठा—"कौन है?"

गजब हो गया! यह तो उसी बुढ़ियाकी आवाज थी, जिसको मैं अकसर होटलमें चाय पिलाता था। सुनते ही होश गुम हो गये। काटो तो बदनमें लोहू नहीं।

❀ ❀ ❀ ❀

दुनियाकी अक्लपर पत्थर पड़े! किसीने भी यह ठीक ठीक समझनेकी कोशिश नहीं की कि मिस्टर पार्कके घरमें किसपर शर्मनाक हमला हुआ है—बुढ़ियापर या मुझपर; हालां कि मेरे बदनकी हड्डियाँ चिल्ला-चिल्लाकर कह रही थी कि जैसा शर्मनाक बर्ताव मेरे साथ हुआ है, वैसा दुनियामें कोई अपने मेहमानके साथ कर नहीं सकता। घरपर बुलाकर इस तरहसे पेश आना और उलटे मुझीपर मुकदमा भी दायर कर देना भला किसीने कभी सुना हो? फिर भी मेरी एक न सुनी गई। नेलीका क्या कहूँ। दिलमें अच्छी तरह जानती थी कि उसीको प्यार करता हूँ और उसीकी खातिर बुढ़ियासे बात-चीत करता था; मगर वह भी

अदालतमें आकर उलट गयी और दुनियाका साथ दे बैठी। कहने लगी कि "शर्मनाक हमला मेरी फूफीपर जान बूझकर हुआ है। क्योंकि यह बदमाश—यानी मैं—उनपर बुरी तरह लट्टू था। उन्हींसे घुल-घुलकर बातें करता था और कभी-कभी अपने दामसे उन्हें चाय भी पिला देता था। मैं अकसर उनके साथ थी, मगर यह मुझसे कभी नहीं बोला। जब बोलता था तब उन्हींसे।" इसकी तसदीक कम्बख्त होटलवालोंने भी कर दी और तारीफ है अदालतके औंधो समझ की कि इस बातको ठीक मान गया और मुझपर पाँच सौ रुपयेका जुर्माना ठोंक दिया। इतना ही नहीं, बल्कि अपने फैसलेमें यह भी लिख दिया कि यह आदमी मामूली उल्लू नहीं एकदम विलायती उल्लू है। यह आखिर किस सबूतके बिरते पर ? मगर अदालत तो अदालत है, कोई क्या करे !

———

सफरो प्रेमिका

(क)

मालूम होता है, ईश्वरने मेरे लिये स्त्री बनायी ही नहीं। तभी तो जहाँ डोरे डालता हूं, वहीं हत्थेसे मैं उखड़ जाता हूँ। चोर, बदमाश, डाकू, लुच्चे, उठाईगीरे, सभीको औरतें मिल जाती हैं। एक-से-एक 'फर्स्ट क्लास' और दर्जनों। मगर मुझे लाख सर पटकने पर भी एक नहीं मिलती—महज मेरी भलमनसाहतकी वजहसे, क्योंकि मैं इन्हें बेहूदोंकी तरह घूर नहीं सकता। बदमाशोंकी तरह फुसला नहीं सकता। चालबाजोंकी तरह नाकों चने चबवा नहीं सकता अत्याचारियोंकी तरह अत्याचार नहीं कर सकता और इन लोगोंको तो यही सब पसन्द है तो मैं क्या करूँ? तभी तो मेरी दाल नहीं गलती। दिलमें मैं इन्हें कितना ही पूजूं। अकेले मैं इनके लिये कितना ही सर पीटूँ और छटपटाऊँ, मगर यह लोग मुझपर नहीं पसीज सकतीं। उसपर कम्बख्ती यह कि मैं अपनी भलमनसाहतके कारण इनकी नजरोंमें उल्लूही नहीं बलिक एकदम विलायती उल्लू हूँ।

सैकड़ों प्रेम करनेवाली पुस्तकें पढ़ डाली। पापाने भी न जाने किन-किन ढङ्गोंसे घुमा-फिराकर इन लोगोंसे मिलने-जुलने, 'लेडियों' की 'सोसाइटी' में अपना आदर करानेकी तरकीबें बताई थीं। मगर सब बेकार हुईं; क्योंकि मेरी भलमनसाहतके कारण कोई भी दांव पेंच काम नहीं आता। कुत्तेकी दुम कितनी ही सीधी करो, फिर भी टेढ़ी ही रहती है। यही हाल मेरी शराफतका है। इसे कोई चाहे शर्म, झेंप, दब्बूपन या मेरा बौड़मपन कहे। मगर मेरी यह आदत किसी तरह भी दूर नहीं हो सकती और न मैं किसी उपायसे औरत फँसानेके लिये बेहया और बदमाश बनाया जा सकता हूँ।

दुनियाकी नजरोंमें कामयाब आदमी वही होता है, जो दुनियाको उल्लू बनाता है। उसी तरहसे औरतोंकी भी औंधी समझमें वही पुरुष आदर पाने योग्य है, जो इन्हें अच्छी तरहसे उल्लू बनावे। इसी वजहसे मैं इनकी निगाहोंमें महा तुच्छ हूँ; क्योंकि मैं इन्हें उल्लू नहीं बना सकता; बल्कि उल्टे इनके सामने मैं ही उल्लू बन जाता हूँ। अगर डगनमें खाली चारा ही हो और उसके भीतर कांटया न हो तो मछली कहीं फँस सकती है? और यहाँ अल्ला मियाँने मेरे मिजाजमें भलमनसाहतका चारा तो दिया; मगर बदमाशीकी कंटिया देना

एकदम भूल ही गये। तब भला कोई औरत मेरे हत्थे चढ़े तो क्योंकर चढ़े ? आप ही बताइये।

ईश्वरने जब मुझे ऐसा दब्बू, मुँहचोर और झेंपू दिल दिया था, तब उन्हें चाहिये था कि मुझे किसी हिन्दूके घर पैदा करते, जहां हर किस्मके मर्दों का निर्वाह हो जाता है। वहाँ मुझ जैसे कमहिम्मत ही नहीं, बल्कि अनखे और निकम्मे तक भी बिना हाथ-पैर हिलाये मजेसे अपने बुजुर्गों की बदौलत जोरूवाले तो बन जाते हैं। मगर यहाँ तो मामला उल्टा है। खुद ही कुआं खोदो, तब कहीं पानी मिले। उसपर सब बातें औरतोंकी ही मर्जीपर। और मुसीबत यह, कि चार पैरका जानवर बांधा-छांदा और फँसाया जा सकता है, दो पैरवाला नहीं। फिर औरतकी जात ? लाहौलबिलाकूवत ! ऐसी अजीब, ऐसी बेतुकी, ऐसी डांवाडोल तबीयतकी और ऐसी आफत की कि कहे कुछ, करे कुछ, ताके इधर, देखे उधर, आंखोंमें आंसू, ओठोंपर हँसी और ऐसे बेढब जीवको रिझा, फुसला, डरा, धमका कर अपनी शादीके जालमें ला फंसाना बापरे बाप ! मुझ जैसे भलेमानुसोंके मानका नहीं है। यह तो मैं जानता हूँ कि मैं अपने बिरतेपर किसी भी औरतको अपनी बना नहीं सकता, मगर क्या करूँ, इस कम्बख्त जवानीको, जो इन लोगोंके सामने

तो चूं नहीं करती, मगर अकेलेमें बहुत दिक करती है। झूठ नहीं, बिल्कुल सच। न एतबार पड़े, तो कवियोंके हाथपर गंगाजल, बाइबिल या कुरान धराके पूछ लीजिये। ये लोग भी सब इसी 'जेण्डर' के होते हैं, वरना एकान्तमें बैठे-बैठे कविता लिखनेके लिये इनके दिलोंमें इतने बलबले कैसे पैदा हो सकते हैं? बस, इसी लिये मैं इनकी लालसा भी त्याग नहीं पता। अब इन्हीं लोगोंके हाथमें मेरी तकदीर है। इनमेंसे अगर कोई ऐसी दयावान हो जो मेरी भलमनसाहतपर ठट्ठा न मारे और मेरे दिल और जवानीके दुखड़ेको दूरसे ही भांपकर मुझे जबरदस्ती पादरीके पास भगा ले जाये और चट मुझसे शादी कर ले। तब शायद मुझे जारूका मुँह देखना नसीब हो तो हो। मगर औरतोंके पाजी, गड़बड़ और अड़ियल दिलोंमें इतनी दया कहां? यही तो रोना है।

मैं इसी तरह अपने कर्मोंपर आँसू बहाता हुआ सेकेण्ड क्लासके एक वर्थपर लेटे-लेटे गाड़ीकी घरघराहटके तालपर खर्राटें भरने लगा।

(ख)

आखिर अल्ला मियाँको मुझपर दया आई और स्वप्नमें मेरे लिये छांटकर जिन्नतकी एक हूर भेजी। बड़ी रूपवती

मगर भलीमानुष। मैं उसकी गोदमें अपना सर रखे हुए बड़े मजेकी बातें कर रहा था। यह बात स्वप्नमें थी कैसे मुमकिन हो गई मुझे खुद ही ताज्जुब है; क्योंकि झेंपनेवाली आदत तो मुझे ख्यालमें भी ऐसा नहीं करने दे सकती थी। खैर कुछ भी हो मगर इस वक्तकी अपनी हालत देखकर मुझे विश्वास हो गया कि अगर ऐसे ही दस बीस सपने ताबड़तोड़ देखनेको मिल जायँ तो औरतोंसे मेरी शर्माने-वाली आदत जरूर छूट जाय। क्योंकि इस वक्त मैं सरसे पाँवतक बिलकुल मर्द हो रहा था और झूठ नहीं सचमुच। जरा भी दब्बूपन पास नहीं फटकता था। कभी वह मेरे गलेमें हाथ डालती थी और कभी मैं। कभी वह चुम्बन लेती थी और कभी मैं। यहीं तक नहीं; बल्कि प्रेमकी लच्छेदार बातें भी मैं कहता जाता था। पुस्तकोंसे रटी हुईं नहीं, खास अपने दिलकी गढ़ी हुई। और क्या? यह मैं शुरूमें ही जान गया कि यह स्वप्न है, वरना इतनी देरतक मेरी यह मर्दानियत बिना किसी झिझकके इस बेबाकीके साथ लाख कोशिश करनेपर भी कहीं कायम रह सकती थी? हर्गिज नहीं।

मगर भई, चाहे हूर हो या परी। होती तो है वह औरत ही। और औरतकी जात बस दूरहीसे हाथ जोड़नेके लायक

है ; क्योंकि यह लोग दिलमें खाली आग लगाना जानती हैं, बुझाना नहीं। जहाँ देखा कि दिलमें काफी गर्माहट पहुँच गयी बस वैसे ही तो बिचक जाती हैं। फिर लाख सर पटकिये पास नहीं फटकने की। चाहे कोई मरे या जीये, इनकी बलासे। आखिर इनका यह कौनसा पाजीपन है? जब इनको यही करना होता है तो मर्दोंके दिलोंपर अपनी मुहब्बतकी चिनगारी क्यों फेंकती हैं? भूसेपर अंगारा गिरेगा तो वह खामखाह जलेगा। यह इनको पहले ही समझ लेना चाहिये। मगर नहीं समझतीं। वही हाल है कि आग लगाकर जमालो अलग खड़ी हुई और दूरहीसे अपनी कारिस्तानका तमाशा देख रही है। बस, इसीमें इनको मजा आता है और यहाँ जान साँसतमें पड़ जाती है और दिलका तो एकदम कचूमर ही निकल जाता है। इस बातका तजुर्बा मुझे उसी दिन हुआ, क्योंकि जब मेरी मुहब्बतने ज्यादा जोर मारा तब यही जी चाहा कि उसे खींचकर कलेजेके भीतर बैठा लूँ। वैसे ही वह भागनेके लिये सरकी और मैं उसे पकड़नेके लिये उचका। मगर उफ! बाप रे बाप! बड़े जोरोंकी चोट लगी। सारा बदन घूँस गया। आँख खुल गयी। मालूम हुआ कि इस मुहब्बतकी उचकफांदमें मैं बेंचपरसे नीचे लुढ़क पड़ा हूँ। उसका तो नखरा हुआ और यहाँ खोपड़ी

फूट गयी। नींद हराम हुई। वह मजेदार स्वप्न गया जिसमें मैं जिन्दगी भर जागना ही नहीं चाहता था। सब बहार चौपट हो गई और मेरी मर्दानियत हाय! हाय! मिलकर फिर छिन गयी। सबसे ज्यादा इसीका अफसोस है। इतनी मुसीबतें नाहक ही तो फट पड़ीं और सब उसीके जरासे पाजीपनसे।

मैं गाड़ीकी फर्शपर औंधा पड़ा हुआ अभी अपनी खोपड़ी सहला ही रहा था कि दो नर्म-नर्म हाथोंने मुझे सहारा देकर ऊपर उठाना चाहा। उस वक्त जान पड़ा कि मेरे सामने एक 'लेडी' का ढांचा खड़ा है। दिलमें यकायक बड़े जोरोंकी घबड़ाहट पैदा हुई। मगर यह ख्याल आते ही कि शायद मैं अब तक स्वप्न हीमें हूँ और यह स्वप्नवाली परी ही खड़ी है मेरी बदहवासी दूर हुई और मैं फिर उसी रंगमें आ गया। उस वक्त मैं आधा उठकर फिर मुँहके बल लेट गया और यह कहता हुआ कि "अरे जालिम! देख खोपड़ी भी फूट गयी, अब तो रहम कर। क्यों नाहक सताती है?" मैंने तड़ाकसे अपना सर उसके जूतोंपर रखना चाहा। मगर अफसोस निशाना गलत हो गया। उसी वक्त कम्बख्त गाड़ीने भी ऐसा झटका दिया कि मेरी नाक फर्शहीपर पिच्ची हो गयी।

गाड़ीकी घरघराहटमें उसने मेरी बात सुनी या नहीं यह तो मुझे नहीं मालुम। क्योंकि उसको भी आवाज मुझे सुनाई नहीं देती थी। मगर वह कुछ कहती जरूर थी। उसके कदमोंका मतवालापन साफ बता रहा था कि मानो नाचती हुई वह वेंचपर गिर पड़ी। ऐसी हालतमें मुंह बिना चीखे, चिल्लाये, गाये या हंसे नहीं रहता। यह मैंने कई दफे आजमाया है। जब जाना कि वह बैठ गयी तब मैं भी कांखकूंख कर नाक सहलाता हुआ उठा। देखा कि वह परी अपने मुंहपर रूमाल लगाये हंसते हंसते बेसुध हुई जा रही है। मुझे गुस्सा तो बहुत चढ़ा, मगर यह मौका छोड़नेवाला नहीं था। इसलिये मैं झट उसकी बगलमें बैठ गया और उसे खींचकर अपनी गोदमें बिठाल लिया। मगर चुम्बन करनेके लिये सर बढ़ाया तो मेरा मुंह बालिश्त भरकी दूरी ही पर माड़सा खुलकर अड़ गया! और मेरी आँखें निकल पड़ीं। क्योंकि अब मालुम हुआ कि यह स्वप्न नहीं है और न वह यह स्वप्नवाली स्त्री ही है। हाय! हाय! अब न निगलते बन पड़ा और न उगलते।

(ग)

मगर भई औरत बड़ो हिकमती और करतबी जीव होती हैं। अगर यह चाहे तो एक उल्लूको भी बुलबुल बना

दे सकती है। इसमें शक नहीं है। तभी तो मैं अब आंखें निकाले और मुंह बाये झेंप, झिझक, घबराहट, डर और दब्बूपनके ठीक बीचोबीचमें जाकर अटक गया था तब उसीने मेरा चुम्बन लेकर मेरी जान बचाई, वरना उस वक्त मेरी पैदाइशी झेंपका बौड़मपन मुझे इतने जोरोंसे हुरपेटने लगा था कि बस यही जी चाहता था कि खिड़कीके रास्ते दनसे गाड़ीसे कूद पड़ूं। क्योंकि और कहीं भागनेका ठिकाना न था। बड़ी खैर हो गई कि उसकी इस कार्रवाईने मेरी पहिली भड़क दूर कर दी। फिर तो मिजाजका टट्टू आपसे आप ठीक रास्तेपर आ गया। अब जाना कि मुश्किल बस झिझककी पहिली ही टट्टीके फांदनेमें होती है। जहां यह पार हुई तहाँ मैदान अपना हो ही जाता है ? उसपर सहूलियत यह हो गई कि स्वप्नमें इसके आगेका रास्ता बहुत दूरतक देख आया था। इसलिये मैंने उसके मुंहसे अपना मुंह हटाया ही नहीं और एक सांसमें आँख बन्द करके लगातार पुच, पुच, पुच दर्जनों चुम्बन लेने लगा। यह बड़ी अक्लमन्दीका, ताकि मुंहसे मुंह मिला होनेके कारण उसकी सूरत दिखाई न पड़े वरना इस भड़कनेवाले मिजाजका क्या ठीक ? न जाने कब दगा दे जाय। मगर इस तरह साँस रोके कबतक चूमता ?

आखिर दम उखड़ गया और सांस लेनेके लिये मेरा मुंह हुक्का-सा खुल गया। उस वक्त न जाने उसकी या मेरी मुहब्बतने या दोनोंने मिलकर कुल ऐसा गवड़चौथ मचाया कि उसकी समूची नाक मेरे मुंहमें घुस गयी। मगर बड़ी खैरियत हो गयी कि ऐन मौकेपर वह आपसे दग उठी। वरना उसकी खैरियत न थी; क्योंकि अगर वह उस वक्त यकायक छींक न पड़ती तो मेरे मुंहसे उसकी नाकका सही साबूत निकलना गैरमुमकिन हो जाता।

यह तो मुझे याद नहीं कि मुझसे उससे क्या बातें हुईं, मगर इतना दावेसे कह सकता हूँ कि जो कुछ भी बातचीत हुई होगी वह बहुत ठीक और बहुत ही प्रेमभरी हुई होगी। तभी तो हम दोनोंमें उसी जगह शादी पक्की हो गई। ईश्वर जाने इसके लिये उसने मुझे राजी किया या मैंने उसे। खैर कुछ भी हो। दोनों तरफ थी आग बराबर लगी हुई या शायद ईश्वरने यही एक अकेली औरत मेरी खास जोरूगिरीके लिये बनाई हो तभी इसकी नौबत इतनी आसानीसे आ गई। यहीं तक नहीं, बल्कि यह भी तय हो गया कि गाड़ी-परसे उतरते ही सीधे गिरजामें जाकर पहले शादी कर लें तब और कोई बात हो, क्योंकि उसने कहा था कि जिस वक्त वह इस डिब्बेमें चढ़ी थी वह उसी वक्त मुझे

सोते देखकर मुझपर आशिक हो गयी थी और अब विरह वेदना उसके लिये असह्य है। मैंने भी ताल ठोंककर जवाब दिया कि—"प्यारी, इधर भी वही हाल। मैं तो स्वप्नमें ही तुमपर मर मिटा। न एतबार पड़े तो मेरी खोपड़ी टटोलकर देख लो अबतक गुल्ला निकला हुआ है।" वाहरे मैं! मेरी इस बातकी कद्र आप तब कर सकेंगे जब आप दुनियाभरको किताबोंमें ढूंढ़े और इसे न पायें तभी आपको विश्वास हो सकता है कि यह किसी लेखककी लेखनीसे निकली हुई नहीं, बल्कि खास मेरे दिलकी उगली हुई बात है।

जिन पाजियोंने मेरी झेंपकी बाबत इस बातकी हँसी उड़ा रखी थी कि 'टाम' ऐसा झंपू है कि उसकी कभी शादी नहीं हो सकती, उन्हींके लिये मैं दिलमें ठाने हुए था कि अब परदेशसे मकान तभी वापस जाऊँगा, जब कहीं न कहीं मुझे कोई जोरू मिल जायेगी। ताकि घरपर हंसनेवालोंको दिखा दूँ कि मैं झेंपू नहीं हूँ, बल्कि मर्द हूँ और औरत फँसानेकी काबिलियत रखता हूँ। मगर अफसोस! सोची हुई बात कभी नहीं होती। इसीलिए मुद्दतों भटकने और सैकड़ों कोशिशें करनेपर भी कोई हत्थे नहीं चढ़ी हर जगह ठोकर ही खाना बदा था, तब आखिर आज झख

मारकर मकान अकेले वापस आ रहा था कि रास्तेमें यह मिल गई। क्यों न हो, ईश्वर जब देते हैं तब छप्पर फाड़कर। देखिये, मेरे लिये कैसी लाजवाब कुंवारी जोरू न जाने कहांसे यकायक टपका दी, जिसको पहलेसे जरा भी सुन-गुन न थी और तारीफ यह कि दृष्टि पड़ते ही आपसमें प्रेम हो गया और शादीके लिये मैंने उसे राजी भी कर लिया, काबिलियत चाहिये। लोग बरसों एड़ियाँ रगड़ते हैं और फिर भी अक्सर अन्तमें अपना-सा मुँह लेकर रह जाते हैं। मगर जब मैं आज गाड़ीसे उतरते ही इससे ब्याह करूँगा, वैसे ही तो हँसनेवालोंकी नानी मर जायेगी, तब सबके कलेजोंके फफोले फूटेंगे। यही सोचकर एक स्टेशनपर उतर कर मैंने अपने पापाको चुपकेसे तार दिया कि—"पापा मैं आ रहा हूँ। उससे आज ही साढ़े पांच बजे बड़े गिरिजा-घरमें अपनी शादी करूँगा। आप निमंत्रण देकर सभी जान-पहचान वालोंको बड़े गिरजाघरमें जमा कीजिये, ताकि शादी धूम-धामसे हो और सब जानें कि मैं झेंपू या बुद्धू नहीं हूं।"

(घ)

आपसमें प्रेमका दाना बदलौवल होनेके साथ ही हम

लोग भावी पति और भावी पत्नी तो हो ही चुके थे, इसलिये प्रणय सम्बन्धीकी रीतिके अनुसार गाड़ीसे उतरते वक्त मुझे मिस साहबाका असबाब खुद अपने हाथमें ले लेना पड़ा और बदलेमें अपना 'पर्स' यानी रुपयोंका थैला उन्हें दे दिया। क्योंकि मेरा बिस्तर और ट्रंक किसी लेडीके सरपर लादा नहीं जा सकता था और प्रेमीके होते हुए प्रेमिका बैग कुलीको दिया नहीं जा सकता था। सौभाग्यसे उनके पास चमड़ेका सिर्फ एक मझोला बैग था। भारी काफी था। मगर मारे मुहब्बतके वह मुझे फूस-सा मालूम होता था। उसपर ताकीद भी उनकी थी कि इसको खूब होशियारीसे तुम खुद लेकर आना जबतक मैं बाहर जाकर गाड़ी ठीक करती हूं।

कुलीके सरपर अपना असबाब लदवानेमें मुझे योंही कुछ देर हो गई थी उसपर फाटकपर टिकट कलक्टरने मुझे अलग रोक लिया। क्योंकि मेरा टिकट तो डेढ़ सौ रुपयोंके नोटोंके साथ 'पर्स' में था और वह था मिस साहबा-के पास। बड़े घपलेमें पड़ गया। लाख मैंने कहा कि टिकट मेरा मेरी भावी पत्नीके पास है। मुझे बाहर जाने दो। मैं अभी उनसे लाकर देता हूं। मगर उस कम्बख्तने एक न सुनी। मुझे डेढ़ घण्टे उसने नाहक ही वहां अटका

रखा। सब मुसाफिर उतरकर मजेसे अपने मकान भी पहुंच चुके थे, मगर मैं उस हुज्जतोसे बहस ही करनेमें लगा था। रुपये पैसे भी पर्स ही में थे, वरना दुबारा महसूल देकर छुटकारा पा जाता। उधर शादीका वक्त भी करीब आ गया था। क्योंकि साढ़े पाँच बजे शादी थी और तीन बजे गाड़ीसे उतरा था। मगर तू-तू मैं-मैं में साढ़े चार स्टेशन ही पर बज गये। आखिर मैं स्टेशन-मास्टरके पास लाया गया। मैंने जाते ही उनसे गिड़गिड़ाकर कहा कि "साहब, बड़ी मुश्किलसे तो आज मेरी शादी ठहरी है और यह हिन्दुस्तानी बदमाश मेरा सारा वक्त यहीं खराब कराके उसे हुश करा देना चाहता है। मुझे वक्तपर किसी तरह गिरजाघर पहुंचने दीजिये मैं खाली टिकट ही नहीं, बल्कि उसके साथ दूना महसूल और शादीका 'चेक' भी अभी भेज दूँगा। न एतबार हो तो मेरे पापाका पता भी लिखकर जमानतमें मेरा असबाब यहीं रोक लीजिये। मगर यह बैग मैं अपने प्राणोंसे अलग नहीं कर सकता; क्योंकि यह मेरी भावी पत्नीका है। इसलिये इसको साथ ही लेता जाऊँगा।

स्टेशन-मास्टरके दिलमें मेरी बात पैठ गयी। जैसा मैंने कहा था वैसा ही उन्होंने किया। मैं अपने पापाका पता

लिखकर और अपना असबाब वहीं छोड़कर मिस साहबाका 'बैग' लिये कटघरेसे किसी तरह बाहर हुआ। कम्बख्त एक भी सवारी वहाँ दिखाई न पड़ी। गाड़ीका वक्त ही न था। तब सवारी भला किसके लिये इन्तजार करती? मिस साहबा भी न मिलीं। शायद मेरा इन्तजार करते-करते उकताकर चली गयी थीं; क्योंकि उनको भी शादीके लिये बनना-सँवरना था। इसलिये मुझको बैग लादे सीधे गिरजाघर पैदल ही भागना पड़ा। इतना वक्त ही न था कि मकान जाकर जरा कपड़ा तो बदल लेता। रास्तेमें भी कोई खाली तांगा या गाड़ी न दिखाई पड़ी।

पाँच बजके बीस मिनटपर हाँफता-काँपता गिरता-पड़ता बदहवास गिरजा-घर पहुँचा। चारों तरफसे मुबारकबादी और शाबाशी पाते-पाते मेरा नाकमें दम हो गया। मालूम होता था कि सारा शहर आज गिरजेके हातेमें फट पड़ा है। बैंड भी बज रहा था। पापा निहायत ठाट-बाटसे इधर-उधर फुदक रहे थे। वह मुझे देखते ही बिगड़कर बोले—

"कम्बख्त, क्या इसी पोशाकमें शादी करेगा? कम-से-कम दो-चार घण्टे तो पहले आता।"

मैं—"पापा, बोलिये मत। पहले शादी हो लेने दीजिये, बादको एक-से-एक बढ़िया कपड़े पहन लूँगा। शादी मुझे

करनी है, कुछ मेरे कपड़ोंको नहीं। मैं अपनी भावी पत्नीको झूठ-मूठ बन सँवर कर धोखा देना नहीं चाहता। जैसा हूँ, बस वैसा ही मैं अपनेको उसकी खिदमतमें पेश करूंगा।"

वाहरे मैं! खुद अपनी बातोंपर फड़क उठा। क्यों न हो। रमणीका सच्चा प्रेम गदहेको आदमी और आदमीको देवता बना देता है। तभी तो मुझपर इतनी लियाकत फट पड़ी। ऐसा सबूत मिल जानेपर मुझे पक्का विश्वास हो गया कि वह मुझे सच्चे दिलसे चाहती है और यह उसीका असर है कि मैं इतनी काबि-लियत छांट रहा हूँ।

साढ़े पांच बज गये। पादरी साहब चबूतरेपर मेरा जोड़ा मिलानेके लिये खड़े हो गये। मैं अपने सुख-स्वप्नमें लाखों मन्सूबे बांध रहा था कि आज रातको अहाहाहा! कैसे-कैसे स्वर्गीय आनन्द लूटूँगा। मुद्दतोंकी मुरझाई हुई कली आज खिलेगी इतनेमें पापाने घबराकर पूछा—"मगर दुलहिन कहां है?"

मैं—"पापा घबराइये नहीं। आती ही होगी देखिये, यह लाइन डोरी मैं अपने साथ लेता आया हूँ। यह उन्हींका बैग है।"

पापा—"मगर वक्त तो हो गया।"

मैं—"यहांकी घड़ी तेज होगी।"

पापा—"नहीं, घड़ी बिलकुल ठीक है ?"

मैं—"अच्छा, तो दस-पांच मिनटकी देर ही सही। ठाट-बाटसे सखी-सहेलियोंके संग आनेमें कुछ देर हो ही जाती है।"

ज्यों-ज्यों देर होने लगी, त्यों-त्यों मुस्कुराहट चारों तरफ फैलने लगी। मगर मैंने भी दिलमें कहा कि "अच्छा, हँसे जाओ। अभी तुम सब अपनी-अपनी नानीके नामपर रोवेगे तब जानोगे।'

छ: बज गये। पादरी साहब बिगड़कर चबूतरेसे उतर आये। सब लोगोंने मुझे घेर लिया और तानाभरी बातोंके फव्वारे छूटने लगे। फिर भी मेरी हिम्मत न टूटी, क्योंकि मैं जानता था कि प्यारी मुझे बड़े जोरोंसे प्यार करती है। वह आयेगी जरूर। आखिर पापासे न रहा गया। उन्होंने उकताकर पूछा कि दुलहि-नका नाम क्या है ? कहाँ रहती है ? ताकि आदमी भेजकर उसका हाल दरयाफ्त किया जाये।

मैंने जवाब दिया—"उसका नाम बड़ा प्यारा है। मगर इस वक्त याद नहीं पड़ता। पता-ठिकाना जाननेकी मुझे जरूरत ही न थी। इसलिये उनसे पूछा ही नहीं।"

सब लोगोंकी राय पड़ी कि उनका बैग खोला जाय। शायद उसके अन्दर उनका "कार्ड" हो। उनसे उनका पता मिल जाय।

मैंने बहुत कोशिश की कि मेरी प्यारीकी आज्ञा बिना हर्गिज उनका बैग न खोला जाय। मगर लोगोंने न माना। आखिर एक कान्सटेबल बुलाकर उनके बैगका ताला तोड़ा गया ताकि बादको किसीको कहनेका मौका न मिले कि उनकी चीज उनकी गैरहाजिरी में कुछ गायब कर दी गई है। मगर बैग खुलते ही सब लोग एक बारगी चिल्ला उठे। मैंने भी आँखें फाड़कर देखा तो मालूम हुआ कि उसके भीतर आदमीका एक मरा हुआ बच्चा है और उसके साथ कागजका एक टुकड़ा भी है, जिसपर सिर्फ इतना ही लिखा था कि—"इस मुसीबतसे छुटकारा दिलानेके लिये कोशिश: धन्यवाद !"

कान्सटेबलने मुझे वहीं गिरफ्तार कर लिया। सब लोग उछलते-कूदते टोपी उछालते थपोड़ियाँ पीटते हँसते-गाते अपने-अपने घर रवाना हुए और मैं तो रोता-कलपता सर धुनता हवालातकी तरफ चला। कितने दिनोंके बाद और कैसे वहाँसे छुटा, मुझे नहीं मालूम। पापासे पूछ लीजिये; क्योंकि मैं तो सिर्फ यही दिन-रात सोचा करता था कि—"वाह री ! मेरी कुआरी प्रेमिका, आखिर तुम भी औरत ही तो निकली न ? विवाहकी फाँसी तो मेरे गलेमें न डाली, मगर कम्बख्तीकी कच्ची फाँसी दे गई, हाय !"

———

ठुमकटी हथिनी

(क)

आखिर एक दिन प्रेमपत्रोंकी वह नायाब किताब हाथ लगी कि बस ओ ! हो ! हो ! मरी हुई जानमें जान आई। नाउम्मेदीमें मस्तीका जोश चढ़ा। बासी कढ़ीमें उबाल आया और सच तो यों है कि शादीके वलवलोंसे फिर मुँहमें पानी भर आया। यह किताब जो कहीं मुझे पहले मिल जाती तो कसम अपनी झेंपकी अबतक 'मिसेज' के लिये मुझे हर्गिज हर्गिज तरसना न पड़ता। जहां इसमेंसे एक खत नकल करके किसी भी प्रेमिकाको देता, तहाँ वह क्या उसके फिरिश्ते मुझसे शादी करनेके लिये नाक रगड़ते। इसके खत क्या थे, जोरू फँसानेके पेटेण्ट नुसखे थे। पहले पैरामें प्रेमिकाकी खूबसूरतीकी अन्धाधुन्ध तारीफ, दूसरेमें अपने प्रेमकी छातीफाड़ गड़गड़ाहट, तीसरेमें शादीके प्रस्तावकी मिनमिनाहट और मजा यह कि हर खतमें नये ढङ्गसे। इससे बढ़कर जोरू फँसानेवालोंको और लासा ही क्या चाहिये।

यह मानी हुई बात है कि प्रेमिकाके सामने जबानका लासा

इतना बढ़ जाता है कि उसका दिल फँसानेके बदले यह कम्बख्त अपनी ही जबान तालूमें चिपका देता है। ऐसे वक्त में क्या बड़े-बड़े वक्ता लोग भी इस मुसीबतमें फँसफँसा कर अपना-सा मुँह लेकर रह जाते हैं और प्रेमिकाएँ उन्हें उल्लू बनाकर चल देती हैं। मगर अब इन बेढब नुसखोंके आगे जबान हिलानेकी जरूरत ही नहीं, तब उल्लू बननेका डर कैसा ?

अफसोस है कि इस किताबका टाइटिल फट गया था, वरना इसके लेखक और प्रकाशकके नाम जानकर उसकी एक कापी खुद मांग लेता और आप लोगोंके लिये भी उसके मिलनेका पता जरूर लिख देता। किताब लाइब्रेरीकी थी। उसे ज्यादा दिन अपने पास रख भी नहीं सकता! खैर, उसकी नकल कर लेना तो अपने वशकी बात थी। इसलिये लेटर पेपरपर ही इसका एक-एक खत लिख डालनेका इरादा किया, ताकि जरूरत पड़नेपर इन्हें लेटर-पेपरपर दुबारा नकल करनेका झंझट न रहे। इसी ख्यालसे मैंने इसका एक खत नकल करके उसके नीचे अपना दस्तखत भी कर दिया। क्योंकि मुमकिन है, बादको दस्तखत करनेसे उसकी रोशनाई खतकी रोशनाईसे न मेल खाती।

अभी मैं अपने नकल किये हुए खतको एक दफा

पढ़कर उसके मजे ले ही रहा था कि इतनेमें एकाएक पापाका एक तार मिला। लिखा था—

मिस्टर डिकेन्स तीन बजे दोपहरको डाक गाड़ीसे पहुँचेंगे।

—गाबुल।

वाह! वाह! इसके क्या मानी? मैं क्या जानूँ, मिस्टर डिकेन्स किस चिड़ियाका नाम है? उनसे मुझसे मतलब? चाहे वह दोपहरको पहुँचे चाहे सेपहरको, मेरी बलासे। इस शहरमें आने-जानेवालोंके नाम ग्राम या हुलिया लिखनेके लिये मैंने कोई रजिस्टर तो खोल ही नहीं रक्खा है। रोज हो सैकड़ों आते हैं और चले जाते हैं। फिर इसमें आखिर कौन-सी दुम लगी हुई है कि पापा इनके पहुँचनेका मुझे यह तार दे बैठे? इनकी सभी बातें ऐसी ही उटपटांग हुआ करती हैं और तारीफ यह कि कोई काम करूँ तो आफत, न करूँ तो आफत। हालमें ही एक दफ़ा और अब पापा इसी तरह बाहर गये, तो मुझसे कह गये थे कि 'खबरदार, कोई जरूरी काम रुकने न पावे।' उनका सबसे ज्यादा जरूरी काम खतकिताबोहीसे सरोकार रखता है। इसलिये उनकी गैरहाजिरीमें उनकी डाककी बड़ी फिक्र रखता था और उनके खतोंको खोलकर बड़ी मुस्तैदीसे काम करता था। यहाँ तक कि उन दिनों पापासे

दान मांगनेवालोंके दस खत आये थे। कोई नौकरी छूट जानेसे दाने दानेका मुहताज था, किसीके पास गरीबीकी वजहसे इम्तहानमें फीस देनेके लिये रुपये न थे, किसीको इलाज करानेके लिये रुपयोंकी जरूरत थी! गरज यह कि सभीने पापाको दानी और रहमदिल जानकर उनसे मददकी दरख्वास्त की थी और मैंने भी पापाका मान रखनेके लिये तुरन्त बैंकसे रुपये निकालकर सभीके पास पचास-पचास रुपये भेज दिये, जिसका इनाम शाबाशीके बदले पापाने डांट-फटकार और घुड़कियोंसे दिया। मैंने तो उनकी इज्जत बनाई और उन्होंने आते ही मेरी इज्जत उतार ली। यह कहांकी भलमनसाहत थी? इसलिये बन्दा इस दफा बहुत ही फूँक-फूँककर कदम रखता था और डाकके मामलोंमें तो दूरहीसे कानोंपर हाथ धरता था। खतोंका बण्डल डाकियेसे लेकर चुपचाप उनकी मेजपर पटक देता था और कभी भूलकर भी उनपर नजर नहीं डालता था। कहावत मशहूर है कि दूधका जला मट्ठा फूंक-फूंककर पीता है।

मगर इस तारको क्या करूँ, जो पापाने खास तौरसे मेरे ही नाम भेजा है? जीमें आया, फाड़कर फेंक दूँ! कह दूंगा, नहीं मिला! मगर तार लानेवालेने उसकी रसीद

मुझसे ले ली थी और पापा ऐसे आदमी नहीं हैं, कि बिना किसी मामलेकी जांच-पड़ताल किये उसकी जान छोड़ दें। फिर सोचा, इसके लिये परेशान होनेकी जरूरत ही क्या है। इसमें इतना ही लिखा है कि मिस्टर डिकेन्स फलाँ वक्त पहुंचेंगे। ज्यादासे ज्यादा इसका मतलब यही हो सकता है कि इस बातको उनके कारबारके रोजनामचेमें लिख दूँ। बस, झगड़ा खतम। इसलिये इसपर अमल ही भला क्या किया जा सकता है?

इस तार कम्बख्तने मेरी अक्ल ऐसी बौखला दी कि उसको दुरुस्त करनेके लिये डेढ़ घण्टेतक कमरेके भीतर टहलना पड़ा! उसके बाद अपना ध्यान बटानेकी खातिर अपने मकानके कमरोंको सजानेमें लग गया। यह भी एक जरूरी काम था! क्योंकि कलही उनमें सफेदी हुई थी। और सारा सामान—मेज, कुर्सी, चारपाई, आलमारी, पियानो वगैरह छोड़कर—भण्डारखानेमें पड़ा था। नौकर कोई था नहीं। बेरा पापाके साथ गया था। आयाको अण्टी (चची) अपने साथ अपने भाईके यहाँ ले गयी थीं। मेहतर सुबह ही झाड़ू देकर चला गया। रह गया बावर्ची। वह भी सन्नाटा देखकर शामका खाना दिनहीमें बनाकर, रातके लिये छुट्टी ले गया था। खैर, इस कामके लिये मैं अकेला ही काफी

था। क्योंकि कमरोंमें फर्श तो मजदूर कल ही बिछा गये थे !

अभी मैंने दीवारोंपर तस्वीरें, पलंगपर बिस्तरे और दरवाजोंपर लट्ट लगाये ही थे कि यकायक ख्याल आया कि पापा जब कभी बाहर जाते हैं, तो अक्सर कोई-न-कोई फसलकी चीज किसीके हाथ भेजते हैं। मुमकिन है, इस दफे मि० डिकेन्सको यहां आते हुए जानकर कुछ-न-कुछ उनके साथ रख दिया हो। बस, यही बात हो सकती है। वरना इस तारकी जरूरत ही क्या थी ? खैर, इतनी देरके बाद इसका भेद तो खुला।

अब स्टेशनपर जाना जरूरी हो गया। क्योंकि तारमें डिकेन्सके घरका ठिकाना भी नहीं दिया था, कि वक्तपर स्टेशन न पहुँच सकूँ तो अपनी चीज उनके यहांसे ले आऊँ। घड़ीमें देखा कि तीन बजनेमें अभी पन्द्रह मिनट बाकी है और स्टेशन साढ़े चार मील था। बस हाथ-पैर फूल गये, हालां कि मोटरपर बड़े मजेमें पहुँच सकता था। मगर बाप रे बाप ! मोटरके नामसे तो यहां कलेजा दहल उठता है, न जाने किस बेवकूफकी सलाहसे पापाने गाड़ी-घोड़ा अलग करके यह पाजी मोटर ली थी। इसे मेरे यहाँ आये कई महीने हो चुके हैं, फिर भी कम्बख्तोकी अबतक भड़क दूर

नहीं हुई और न इसके मिजाजका ही कोई ठीक पता चला। सामने या दाहिने-बांये जानवर, आदमी, गाड़ी वगैरह देखते ही उसपर इस जोरोंसे झपटती है कि उस वक्त लाख रोक-थाम या कतरानेकी कोशिश कीजिये, सब बेकार। भीड़ और खतरेकी जगहोंपर तो और बमक उठती है। बिना अपना शैतानी जोश दिखाये किसी तरह भी नहीं मानती। इसीसे बन्दा उसके पास नहीं फटकता था। बस, पापा ही इसकी नस पहचानते हैं और उन्हींसे ठीक रहती है। मगर इस वक्त इसको चलानेके लिये पापाको कहांसे लाता। आखिर तकदीर ठोंककर मैं स्टेशन जानेके लिये तैयार हो गया। जल्दीमें मकान बन्द करना भी भूल गया।

रास्ता निहायत सलामतीसे कट गया, क्योंकि सिर्फ दो बैल गाड़ियाँ उल्टी, एक तांगेका बम टूटा! और शायद दो या तीन—ठीक याद नहीं है—कुत्ते भी दब गये हों!

(ख)

वक्तका हाल छिपा नहीं है। जबतक इसपर नजर रखो, तभी तक ठीक चलता है। जहां जरा निगाह झपकी कि चोरकी तरह दुम दबाकर भागा। इसीसे मुझे राहियोंकी चिल्ल-पोंमें इसका ख्याल नहीं रहा और स्टेशन पहुँचते-पहुँचते चार बज गये।

स्टेशनके फाटकपर सड़कके किनारे असबाबका एक अम्बार लगा हुआ था। ट्रंक, सूटकेस, हैंडबक्स, पोटमैंटो, झाबे, असबाब बेतरतीबीसे एकके ऊपर एक लदे हुए थे। सामने दो लौंडे स्वेटर और हाफ पेन्ट पहने ढेलेसे फुटबाल खेल रहे थे। एक ट्रंकपर एक बुढ़िया सरपर ऊनी टोपी पहने और बदनको जनाने ओवर कोटसे कसे बन्दरियाकी तरह बैठी हुई थी। पास ही एक अधेड़ साहब 'निकर बोकर' डाटे, एक आँखमें ऐनक लगाये और मुंहमें सिगार दबाये मेरी आती हुई मोटरको बिज्जूकी तरह खड़े घूर रहे थे। बड़ी खैरियत हो गयी कि सौ कदम पहले ही मैंने मोटर रोक ली और एहतियातन पीछे चलनेका 'गियर' भी लगा दिया, ताकि मोटर कुनमुनाये भी तो किसी तरहसे आगे न जा सके, नहीं तो सड़कके किनारे असबाब जमाकर इस तरह अकड़नेका सारा मजा उस बेवकूफको मिल जाता।

आदमी सचमुच ही सख्त बेहूदा और बदतमीज निकला। आते ही कम्बख्त सरपर सवार हो गया और लगा एक साँसमें पूछने—"किसकी मोटर है? किसकी मोटर है? किसकी मोटर है?"

किसीकी सही, उसके बापका क्या? ऐसे वाहियात सवालका जवाब देनेके बदले मैंने खुद अपने सवालकी झड़ी

लगा दी—"मिस्टर डिकेन्स कहाँ हैं ? मिस्टर डिकेन्स कहाँ हैं ? मिस्टर डिकेन्स—"

अररररररर ! मि० डिकेन्सका नाम सुनते ही उसकी आँखें नीली-पीली हो गयीं । खौंखियाकर बोला—"इतनी देरमें मोटर क्यों लाया ? तार भिजवानेपर भी उस बेवकूफने अब मोटर भेजी ! क्या सचमुच ही मि० गाबुलका लड़का टाम इतना बड़ा गदहा है कि उसे वक़्तका ज़रा भी ख्याल नहीं ।"

इतनेमें एक छोकरा कह बैठा—"गदहा नहीं, पूरा उल्लू है उल्लू ।"

"वह भी मामूली नहीं, बल्कि एकदम विलायती । यह मैं सुन चुका हूँ' बिल्ली !" यह दूसरे लौंडेने जड़ा । जबतक बुढ़िया भी रेंगती हुई आकर बड़बड़ा उठी—"यह शोफर भी तो बड़ा बेवकूफ है । एक तो देरमें आया और मोटर भी रोकी तो इतनी दूरपर ।"

गुस्सेकी बौखलाहटमें इत्तिफाकसे मेरा हाथ "स्टियरिंग ह्वील" (मोटर घुमानेवाले चक्कर) के बीचमें पड़ गया और बिजलीका भोंपू ज़ोरसे बज उठा, जिससे इन कम्बख्तोंकी बातें और नहीं सुन सका । नहीं तो मुझे और गुस्सा चढ़ता गुस्सेकी बात ही थी, कौन भलामानुस अपनो ऐसी-

ऐसी नयाब तारीफें सुनकर खुश हो सकता था। ऐसे वक्तपर यह बताना कि मैं शोफर नहीं, मि० गाबुलका लड़का मि० टाम हूँ अपनी आबरूको और खाकमें मिलाना था, क्योंकि यह बेहूदे मिस्टर टामको यानी मुझे मेरे ही मुँहपर बेवकूफ, गदहा, विलायती उल्लू, सब कुछ तो बनाही चुके थे।

"उफ! उफ! कानके फर्दे फट गये। अरे, भोंपूकी आवाज बन्द कर।" कानोंपर हाथ धरकर बुढ़िया चिल्लाई। उसकी देखा-देखी ऐनकबाज भी डौंके "अबे, खाली भोंपू ही बजायगा, कि मोटर आगे बढ़ायेगा भी?"

मेरा हाथ भोंपूके बटनपरसे हट गया और मैं घबड़ाकर बोला —"मोटर अब आगे नहीं बढ़ सकती।"

ऐनकबाज—"नहीं बढ़ सकती तो (असबाबकी तरफ इशारा करके) उसे यहांतक लायगा कौन?"

मैं उतर पड़ा और असबाबके पास जाकर पूछा—"कहाँ है जो—"इसके आगे मैं कहने ही वाला था कि जो 'पापाने' भेजा है। मगर पापाका लफ्ज जबानपर आते-आते मैंने झटसे अपना मुँह बन्द कर लिया, ताकि भण्डा न फूटे। खैर! उस ऐनकबाजने खुद ही सबसे बड़े झाबेको दिखाकर बता दिया कि यह सब क्या है, सुझाई नहीं

पड़ता ?" मैंने झाबा हिलाकर देखा, उसमें नारंगिया भरी हुई थीं।

वाह रे पापा! इस दफे तो नारंगियाँ पहलेसे भी ज्यादा भेजीं। मगर ऐसे बेहूदोंके साथ भेजीं, बस इतनी ही बेवकूफी कर गये। जैसे ही झाबा लाकर अपने पासवाली अगली सीटपर रक्खा, वैसे ही उसने मेरा हाथ पकड़कर असबाबकी तरफ फिर इशारा किया।

मैं—"क्या अभी और है ?"

वह—"वाह बे आंखके अन्धे नाम नैनसुख! चलो उठाओ उसे। यह मोटर इतनी दूर रोकनेकी सजा है।"

दो कैनवेसके बड़े-बड़े बैग और किताबोंसे भरा एक चीड़का बक्स और लादना पड़ा। क्योंकि भारी सामान सब पापा-हीका था। बाकी औरोंपर तो मिस्टर डिकेन्सका नाम लिखा हुआ था, जिनसे मुझसे कोई सरोकार न था। इसलिये मैं अपनी चीजें लेकर चलनेकी तैयारीमें अपनी सीटपर बैठ गया। मगर आदमी निहायत चलता हुआ था। पापाकी चीजें लानेके बदले वह अपना सामान भी मेरा ही मोटरपर लदवाकर शहर तक भिजवाना चाहता था और इसके लिये मुझको कुली भी बनाना चाहता था। उसकी ऐसी तैसी गोया मोटर नहीं, छकड़ा है। मगर क्या बताऊँ, उस पाजीकी

धांधलीके आगे मेरा कुछ बस न चला। उसने और उसके दोनों लौंडोंने मिलकर आखिर सब सामान मोटरमें भर ही तो दिया। मोटरका टाप खुला हुआ था, इससे उसको और आसानी हो गयी।

मैंने, 'सेल्फ स्टार्टर, दबाकर एञ्जिन चला दिया। एञ्जिनके चलते ही मोटर पीछेकी ओर भागी। क्योंकि "गियर" —आगे—पीछे चलानेका हैण्डिल—पहलेसे ही पीछेकी चालमें लगा हुआ था, जिसका मुझे घबराहटमें कुछ ख्याल ही नहीं हुआ।

मोटरको अपनी दुमकी तरफसे ऐंड़ी-बेंड़ी चालोंसे भागते हुए देखकर एक कोहराम-सा मच गया। ऐनकबाज, जो अपनी टांग पावदानपर रक्खे हुए थे, उनकी वह टांग फैल गयी और वह सड़कपर चित्त लेट गये। बुढ़िया फुट-बोडपर खड़ी हुई दरवाजा खोलने जा रही थी। वह जमीन-पर नाक रगड़ने लगी और दोनों लौंडे, जो दूसरी तरफसे बिना दरवाजा खोले मोटरपर उचक रहे थे, गेंदकी तरह बड़ी दूरतक लुढ़कते चले गये। मुझे क्या खबर थी कि यह कम्बख्त मोटरपर असबाब भी लादेंगे और उसपर खुद भी चढ़नेकी कोशिश करेंगे। जब उसमें तिल धरनेकी जगह होती, तब तो इन लोगोंके बैठनेका ख्याल किया जा सकता

था। उसपर सबसे बुरी बात यह हुई कि इन बेवकूफोंने पिछले खानेमें सब असबाबका ढेर इस बुरी तरह जमा किया था कि मोटरके पिछड़ते ही वह सब खड़बड़ाकर मेरी खोपड़ीपर फट पड़ा। यही बड़ी खैरियत हुई कि बहुत सी चीजें मेरे सरपरसे फिसलकर सड़कपर गिरती गयीं, नहीं तो उस दिन असबाबके ढेरके नीचेसे जिन्दा निकलना मेरे लिये गैर मुमकिन था। एक तो लोगोंकी चिल्लाहटसे मेरी अकल बौखला गई थी, उसपर खोपड़ीकी चोटोंसे और भी भिन्नाई हुई थी ऐसे वक्त में अपनी खोपड़ीके दर्दका ख्याल करता या मोटर रोकनेका? और रोकता भी तो किसे, जो कम्बख्त अपनी उल्टी चालसे ऐसी जान छोड़कर भाग रही थी, मानो पूरा रास्ता वह इसी तरह तय करने-वाली है।

(ग)

मोटर साढ़ेतीन फर्लाङ्गपर जाकर रुकी। मेरे रोकनेसे रुकी या अपने आप, मुझे हल्ले-गुल्लेमें ठीक पता नहीं चला। खैर, उसके खड़े हो जानेसे जानमें जान आई। क्योंकि अव्वल तो मेरी पीठमें ईश्वरने आंखें नहीं दी थीं कि देखता रहता कि वह किधर जा रही है। दूसरे, मोटरकी टेढ़ीमेढ़ी चालसे होश उड़े हुए थे कि कहीं खाई या पेड़से न भिड़ जाय;

और तीसरे, पीछे देखनेवाला शीशा कभी पेड़, कभी आसमान, कभी लम्पका खम्भा दिखलाकर और हौलदिल पैदा किये हुए था। किसी तरह पन्द्रह-बीस मिनटकी कोशिशोंसे मोटरका मुँह सीधा किया, तब तक तमाशाई मेरे सरपर पहुँच गये। न जाने इन कम्बख्तोंका मैंने क्या बिगाड़ा था कि अपने साथ ऐनकबाजके सारे कुनबेको और उसके गिरे हुए सामानको भी बटोरते लाये ? इन बेहूदोंने आते ही मारे गालियोंके आसमान सरपर उठा लिया और बुढ़िया तो ऐसी डाइन निकली कि अगर मैं 'स्टियरिंग ह्वील' और भावेकी आड़में छिपा हुआ नहीं होता तो वह बिल्लीकी तरह झपटकर मेरा मुँह जरूर नोंच लेती। इस चुड़ैलको अपने असबाबके गिरनेका बड़ा अफसोस था और मेरी खोपड़ी फूटनेका जरा भी नहीं।

आखिर तमाशाइयोंकी मददसे फिर सामान लादा गया और असबाबके ढेरपर ऐनकबाजके खान्दानके चारों अदद बैठाये गये, क्योंकि मोटरमें और कहीं बैठनेकी जगह थी ही नहीं। साहब बहादुर मेरी खोपड़ीसे भी ऊँचे भावेपर बैठे। बुढ़िया सबसे पीछे कई ट्रङ्क और सूटकेसोंपर उकड़ूँ बैठी और दोनों बचकाने किसी तरह मोटरकी दीवारोंपर अटक गये।

"गियर" लगाते वक्त "क्लच" (एञ्जिनको चालसे जोड़नेकी कल) परसे मेरा पैर जरा जल्दी उठ गया। मोटर उचककर मेढ़ककी तरह उछल पड़ी। "अरे, बाप रे बाप!" की आवाज सरपर गूँज उठी। क्योंकि ये लोग असबाबों-पर मुझसे दो फोटकी ऊँचाईपर थे और झटकेमें किसीका आसन गड़बड़ा उठा तो किसोके पैरपर कोई भारी चीज खिसक पड़ी। खैरियत इतनी ही थी कि आगे सड़क साफ थी। सिर्फ पटरियोंपर इधर-उधर पेड़ अलबत्ता खड़े थे। मगर जहाँ 'मार डाला! मार डाला! लड़ गई, लड़ गई! हाय हाय! बाप बाप! हाँ हाँ! उधर कहाँ! उधर कहाँ!' का शोर कदम-कदमपर हो, वहाँ मेरी मोटर अपना मिजाज भला कबतक काबूमें रख सकती थी। आखिर भड़ककर दाहिनी पटरीके पेड़को गिरा देनेके लिये झपटी। किसी तरह उधरसे मोड़ा तो बाईं ओरके पेड़ोंकी ओर घूम चली। बड़ी मुश्किलमें जान पड़ गयी। इधर बुढ़ियाकी चिल्लाहटसे और नाकमें दम हो गया। आखिर चिल्लाकर ऐनकबाजसे मैंने कहा—"ईश्वरके लिये अपना मांसे कह दीजिये कि चुप रहें।"

वह उल्टा मुझीपर उबल पड़ा। घुड़ककर बोला—"बदतमीज कहींका। वह मेरी जोरू है कि माँ?"

"मैं क्या जानूँ ? मगर इतना जानता हूँ कि इतनी बुड्ढी औरत जोरू नहीं कहलाती।"

इतनेमें पीछेसे बुढ़िया बमक उठी—"इस शोफरकी दुमको गोली मार दो, गोली। अरे ! यह हरामजादा..."

हाय ! हाय ! दब गया ! दब गया ! दब गया !

उस चुड़ैलकी चिल्लाहटसे मैं कुछ ऐसा परेशान हुआ कि देख न सका कि दाहिनी पटरीपर एक गँवार एक लम्बा लट्ठ कन्धेपर रखे जा रहा है। मगर मेरी मोटरकी निगाह कब चूकनेवाली थी ? आखिर गड़गड़ाकर उससे भिड़ ही तो गयी। इस बेतुके हल्ले-गुल्लेसे वह चौंककर पीछे देखनेको घूमा। उसके साथ उसका लट्ठा भी घूमा। निशानेपर ऐनकबाजकी खोपड़ी पड़ गयी। तड़ाकसे आवाज आयी। गँवार तो बाल-बाल बच गया मगर साहबकी टोपी और ऐनक लट्ठा उड़ा ले गया।

"बाप ! बाप !" के साथ "अबे रोक ! अबे रोक !!" की चिल्लाहटसे कानोंके पर्दे फट गये। मगर सामने पुल था, जिसके फाटकके बीचसे ऐसी शैतान-मोटरको सही-सलामतीसे सीधा निकाल ले जाना खेल नहीं था। ऐसे आड़े वक्त इन लोगोंके काँय-काँयपर ध्यान देना सख्त बेवकूफी थी। इसलिये बन्दा चुपचाप अपने कान दबाये पुलके बीच-

का शिस्त लगा रहा था। फिर भी उसके पास पहुँचते-पहुँचते इन अक्लके दुश्मनोंने वह आफत मचाई कि मेरा निशाना आखिर गड़बड़ाकर ही छोड़ा। मैंने समझ लिया कि अब मोटर नालेमें बिना कलाबाजी खाये किसी तरहसे भी नहीं बच सकती। बस दुनियाकी आखिरी झलक देखकर मैंने अपनी दोनों आंखें किच-किचाकर बन्द कर लीं।

न जाने पुल कैसे पार हो गया, यह मुझे खुद ही ताज्जुब है। पुलके उस पार सड़क ढालू थी। और उसके बाद फिर ऊँची हो गयी थी। मोटरकी चाल उस वक्त ३० मील फी घण्टेकी थी। ढालू जमीन पाकर वह और भी तेज हो गयी। यहांतक कि मैं उसे धीमी करके चढ़ाईपर चढ़ानेके लिये 'गियर' बदलूं तबतक वह मारे तेजीके उसी चालसे खुद ही चढ़ावपर धचाकसे कूद पड़ी। बड़े जोरोंका झटका लगा और मोटर जमीनसे दो फुट ऊँची उछल पड़ी! बुढ़िया ऐसा गला फाड़के चिल्लाई कि हवातक थर्रा उठी। मगर शुक्र है फिर वह डरावनी आवाज सुनाईं नहीं दी; क्योंकि सामने आइनेमें देखा कि मोटरके उछलते ही वह दो सूटकेसोंके साथ पीछे टपक पड़ी।

बुढ़िया क्या गिरी कि उसके मियाँकी नानी मर गयी!

हजरत लगे छाती पीट-पीटकर हाय तोबा मचाने। ऐसी जोरूके लिये मैंने इसी बेवकूफको इस तरह रोते देखा। दोनों लौंडोंने भी उसी वक्त "हाय! मामा गिर गयी" का जो अलाप भरा तो तमाशाई न जाने कहाँसे पैदा होकर मोटर के पीछे दौड़ पड़े। ईश्वर जाने झटकेमें मेरा पैर 'ऐक्सले-टर" (चाल बढ़ानेका बटन) पर जरा जोरसे दब गया था या मोटर अपने पीछे भीड़का शोर सुनते ही खुद हो जान छोड़कर भागी कि जबतक ऐनकबाजके हवास ठिकाने हों और मोटर रोकनेके लिये मेरी जान खाएँ, तबतक तो हमलोग हवासे बातें करते हुए मील भरसे ऊपर निकल आये।

मैं मोटर रोकता किस तरह? हाथके ब्रेक (रोकनेकी कल) पर झाबा और बैग रखे थे और पैरका ब्रेक ठीक काम नहीं देता था। तो भी मैं उसे दबाता जा रहा था। मगर ऐनकबाज कम्बख्तकी ठोकरों और गालियोंसे मैं ऐसा बौखला गया कि पैर बहककर चाल बढ़ानेके बटनपर पड़ गया और मैंने उसीको ब्रेक समझकर कसके दबा दिया।

अररररर! गजब हो गया। मोटर आँधीकी तरह उड़ी और आगे जाते हुए एक ठेलेको उलटकर दनसे पटरीपर पेड़ोंके नीचे हो रही। ऐनकबाज मुझे नोचने, खसोटने और

गालियाँ देनेमें इतने मस्त थे कि उन्होंने देखा ही नहीं कि सामने एक पेड़की डाल ज़रा नीचे लटकती हुई सड़ककी ओर फैली हुई है। इसलिये मोटर तो उसके नीचेसे साफ निकल गयी, मगर ऐनकबाज़ उसमें उलझकर रह गये। एक लम्बी "ऊ-ऊ" की आवाज़के साथ उनकी दोनों टांगें झाबेपरसे मैंने एकाएक उठते ज़रूर देखी थी। मगर उसके बाद वे कहाँ गये, आस्मान या ज़मीनकी तरफ या शाख हीमें टँगे रह गये यह मुझे मालूम नहीं हो सका। खैर, इतना जानता हूँ कि अपने साथ वह बहुत-सा फालतू सामान भी ले गये; क्योंकि डाल अपनी ऊँचाईकी हदसे ज्यादा कोई भी चीज़ मोटर पर लदा रहना अपना अपमान समझती थी।

मोटरपरकी चिल्लाहट एकदम बन्द हो गयी। क्योंकि दोनों लौंडे ठेलेसे टकराते वक्त कुछ ऐसे गिर गये थे कि तबसे छिपकलीकी तरह मोटरकी दीवारोंपर चिपके ही रहे। फिर मुँह खोलनेकी हिम्मत नहीं की।

किसी तरहसे भी चाल सुस्त न पड़ी। अब जाना कि ब्रेकके धोखेमें जो मैंने चाल बढ़ानेका बटन कसके दबा दिया था; वह वहीं अटककर रह गया। शायद उसकी कोई नस बिगड़ गयी थी। इस आफतमें चौराहा भी आ गया,

जिसका मोड़ बड़ा टेढ़ा था। इतनी तेज चालमें मोटर मोड़ना अपनी जानपर खेलना था। मगर चारा क्या था? आखिर ईश्वरका नाम लेकर मैंने "स्टियरिंग" घुमा ही दिया। चौराहेका पुलिसमैन लोहेके लैम्प-पोस्टकी बगलमें खड़ा हुआ मेरी बेतहाशा चालपर बिलबिला उठा और दोनों हाथ उठाकर मुझे रुकनेके लिये बड़े जोरकी घुड़की बतायी मगर पलक मारते ही वह बजाय हाथके अपनी टांगे ऊपर उठाये लम्पके खम्मेके नीचे कलाबाजी खाने लगा।

खम्भेका सहारा पाकर मोटर उलटनेसे तो बच गयी, मगर सामनेका शीशा चूर-चूर हो गया। चालमें भचक और आवाजमें भी गड़गड़ाहट शुरू हो गयी। जिससे समझा कि पिनियनके खाली कोई दांत ही नहीं टूटे हैं, बल्कि पहियेका टायर भी फट गया है! बकरेकी माँ कबतक खैर मनाती? ४-५ फर्लाङ्ग और जाते-जाते टूटे हुए पिनियनके दांतोंने भीतर-ही-भीतर और भी पुर्जे ले डाले। फिर तो मोटर गड़गड़ाकर ऐसी अड़ी कि वहाँसे फिर उसने टसकनेका नाम ही नहीं लिया। मोटरके रुकते ही दोनों लौंडोंकी जानमें जान आयी; और दोनों कूद-कूदकर डैडी और मामा करते हुए सरपट भागे।

(घ)

शुक्र यह कि मकान अब करीब ही था। मगर आसपास कोई आदमी न था, जिससे सामान उठवाकर ले जाता या मोटर ही ठेलवाता। बड़ी देरतक खड़े रहनेके बाद आखिर उधरसे एक देहाती निकला। मैंने दो आने पैसे देकर उसे अपना असबाब ले चलनेके लिये राजी किया। हमारी सभी चीजें ऐसी भारी थीं कि एक दफेमें एक ही अदद ले जाया जा सकता था। इसलिये पहले एक बैग निकलवा कर मकानपर रखवा आया। उसके बाद दूसरा बैग, फिर नारङ्गियोंका झाबा लदवाकर ले चला। नारंगी पहुँच जानेपर मैं मकान पर ही रह गया और उससे कहा कि चीड़का बक्स भी लेता आवे, जिसको मैं उसे दिखा आया था। क्योंकि इतनी ही चीजोंको जा-जाकर लानेमें बड़ी देर हो चुकी थी और मैं डरता था कि ऐसा न हो कि कहीं ऐनकबाज उधर पहुंच जाय और मुझे देख ले। इसी ख्यालसे मैंने मोटर नहीं ठेलवाई, ताकि वह अपना सामान जिस तरह चाहे उठवाकर जहाँ जाना हो, ले जाये और उसे मेरे घरपर न आना पड़े और न उसे मेरा पता ही मिले। बदमाशोंसे दूर ही रहना अच्छा होता है।

चीड़का बक्स भी सलामतीसे पहुँच गया। इन चीजों-

को कमरोंमें रखनेके लिये एक दफा दफ्तरवाले कमरेमें भी जाना पड़ा। घबड़ाहटमें मेजपरका 'रैक' उलट गया। हफ्तोंकी जमा की हुई पापाकी डाक फर्शपर गिर पड़ी एक-एक खत उठाकर मैं फिर 'रैक' पर रखने लगा। उस वक्त देखा कि उनमें एक लिफाफा मेरे नामका है। इसकी मुझे खबर भी न थी। इन दिनों मुझसे किसीसे खतकितावत थी ही नहीं। इसलिये मैंने अपनी डाककी फिक्र करनेकी कभी जरूरत नहीं समझी और यह खत पापाके खतोंमें मिलाकर बिना पढ़े-ही रख दिया। गौरसे पतेकी लिखावट और मुहर देखी। पता चला, कि पापाका लिखा हुआ और पाँच दिन पहलेका आया हुआ है। मैं समझ गया कि पापाने मुझे क्या लिखा होगा। वही बे-सर पैरकी बातें जो हमेशा मुझसे कहा करते हैं यानी तुम ऐसे हो वैसे हो, दुनियामें किसी कामके लायक नहीं हो, वगैरह-वगैरह, ऐसे खतका पढ़ना न पढ़ना बराबर था। खैर, उसे बादको पढ़नेके ख्यालसे जेबमें डालकर दफ्तरसे निकल आया और अपने कमरेमें जाकर नारङ्गियोंके झाबेपर टूट पड़ा। क्योंकि जबसे इसे देखा था, तभीसे तबीयत इसीमें लगी हुई थी।

अभी झाबा खोलकर एकही नारंगीका छिलका उतारा था कि बाहर बरामदेमें आदमियोंकी बोलचाल सुनाई पड़ी।

"इसी मकानमें सामान रखा जा रहा है ?"

"हाँ, हजूर; दुई आनेमें चार अदद ढोय लाये हैं। अउर इयू लेके पाँच भये।"

"अच्छा-अच्छा, सब सामान उतार लाओ। इनाम इकट्ठा मिल जायगा और आदमियोंसे कहो कि मोटर ढकेल कर यहीं कर दें। खबरदार; उसे कोई ले जाने न पाये। मैं उस सुअरके बच्चेको बिना फाँसी दिलवाये नहीं मानूँगा।......ओ तांगेवाले ताँगा बढ़ाकर बिलकुल सीढ़ियोंसे मिला दे, ताकि मेम साहबको उतारनेमें आसानी हो।"

न जाने क्यों, मेरे हवास गुम हो गये और मैं जल्दीसे अपनी चारपाईके नीचे छिप गया। कम्बख्तीके मारे उसी चार-पाई पर कोई औरत भी गोदमें लाकर लिटा दी गई। मैंने अक्लसे फौरन भाँप लिया कि यह वही बुढ़िया होगी, जो मेरी मोटरसे लुढ़क पड़ी थी। उसको लाते वक्त एक निकर-बोकरवाली टाँग बुरी तरह लँगड़ा रही थी। ईश्वर जाने बुढ़ियाके बोझसे या चोट खा जानेसे।

सब कमरोंमें असबाब रखा जाने लगा, गोया मेरा मकान नहीं, उसके बापका था। लंगड़की टांग इधर-उधर भचक-भचककर बड़बड़ा रही थी—खैर, कमरे तो सभी सजे-सजाये और साफ-सुथरे हैं। मगर नौकरोंका कोई इन्तजाम

नहीं! और वह हरामजादा शोफर भी अबतक दिखाई नहीं पड़ा।

चारपाईपर बुढ़िया मिनमिनाई—अरे! उस शैतानका तो मैं खून पीऊँगी, तब मेरा कलेजा ठण्डा होगा। कम्बख्तने मुझे जरा भी जीता नहीं छोड़ा और मेरे असबाबको भी चूर-चूर कर डाला।

झूठ, झूठ, सरासर झूठ! अगर यह चुड़ैल जीती न होती तो बोलती किस तरह?

गोल कमरेमें दोनों लौंडे ऊधम मचाये हुए थे। एकने चिल्लाकर कहा—डैडो, देखो बिली पर्देसे लटक रहा है।

दूसरा बोला—नहीं डैडी, मैं झूला झूल रहा हूँ।

लंगड़ी टांग वहींसे पिनपिनाई—खबरदार! शोर न मचाओ।

हाय! हाय! वहाँ तो पर्दा फटा जा रहा था और इस बेवकूफको खाली शोर बन्द करनेकी फिक्र थी। इतनेमें पर्दा फटने और किसीके जमीनपर धम्मसे गिरनेकी आवाज आई। मैं खूनका घूंट पीकर रह गया।

"लो, और लो झूलो!"

'बेशक, झूलूंगा। अब उस पर्देसे झूलूंगा।"

"तुम्हीं बड़े झूलनेवाले हो? मैं भी झूलूंगा।"

फिर पर्दा फटने और गिरनेकी आवाज आई ।

"अरे ! ओन, यह देख बाजा ।"

वयालाके सातों स्वर एक साथ बज उठे । हाय ! अफसोस ! गोल कमरेमें तस्वीरें टाँगते वक्त मैंने पापाका वयाला भी अपनी जगहपर लटका दिया था और उसीके नीचे 'पियानो' भी था ।

"तुम नहीं बजाना जानते । लाओ मैं बजाकर बता दूँ ।"

"नहीं नहीं, रहने दो । मैं नहीं दूँगा ।"

"कैसे नहीं दोगे ?"

"नजदीक आओगे तो इसीसे मारूँगा ।"

"तुम्हारी ऐसी-तैसी ।"

वयालाकी तोमड़ी दीवारपर तड़ाकसे बोली ।

"खूब हुआ । फूट गई । मारने चले थे । ओहो ! अब क्या बजाओगे अपना सर ?"

"पियानो बजाऊँगा ।"

"जाओ जाओ, वयाला बजाओ । पियानो मैं बजाऊँगा ।"

"नहीं बजाने दूँगा ।"

"यह लो ।"

दस पर्दे एक साथ इस तरह बोल उठे, मानो किसीने उनपर घूँसा मार दिया हो। इसके बाद ऐसा जान पड़ा कि एक दूसरेको ढकेल-ढकेलकर पियानोंके पर्दों पर पटक रहा है और खूब घूँसेबाजी हो रही है।

"अब कैसे बजाओगे ? मैं अभी इसपर लेट जाता हूँ। देखता हूँ, कैसे बजाते हो।"

एकाएक सब पर्दे झनझना उठे। हाय ! हाय ! पर्दों पर मानो सचमुच ही कोई उचककर लेट गया।

न जाने इस वक्त लंगड़ी टांग कहां जाकर ऐसी बहरी हो गयी कि पापाकी चीजोंपर इतना जुल्म होनेपर भी वह कहींसे कुछ न मिनकी। बुढ़िया अलबत्ता ऊपर चीं-चीं करती रही कि "बेटा, इतना शोर न करो।" मगर नक्कारखानेमें तूतीकी आवाज कौन सुनता ?

ऐसे बेटोंको चूल्हेमें झोंक दूँ। कम्बख्तोंने इतनी ही देरमें वह आफत मचा दी कि सैकड़ों रुपयोंके वारे-न्यारे हो गये। अब तो अपना नुकसान किसी तरहसे भी सहते न बन पड़ा। जीमें आया कि निकलकर इन पाजियोंको इतना मारूँ कि वे भी याद करें। फिर चाहे जो कुछ हो। मगर बाहर निकलनेके ख्यालसे ही कलेजा कांप उठा। मैं सिमट कर अपनी जगहपर और सिकुड़ गया और ईश्वरसे दुआ माँगने लगा कि जल्दी

रात हो तो अंधेरेमें किसी तरह लुक-छिपकर यहाँसे भागूँ।

इतनेमें लँगड़ी टांग कमरेमें आकर बोली—"डारलिंग, नौकरोंका अबतक कहीं पता नहीं है। मगर बावर्चीखानेकी आलमारीमें खाना बना रखा है। काफी तो नहीं है, खैर इस वक्त किसी तरह काम चल जायगा।"

अरे! इस कम्बख्तने मेरे खानेपर भी दांत लगाया? तब क्या रातभर मुझे भूखा ही रहना पड़ेगा?

बुढ़िया—"गाबुलका लड़का कहाँ है? क्या उस बेवकूफको नहीं मालूम था कि बिना नौकरोंके किस तरह काम चलेगा?"

लंगड़ी टांग—"यही तो मुझे भी गुस्सा मालूम होता है कि उस बेवकूफने अबतक कोई खबर नहीं ली। खैर, जाता हूं, अब उसका पता लगाने।"

दिलको कुछ ढाढ़स हुआ कि यहाँसे किसी तरह उसके टलनेकी तो नौबत आयी इसी बहाने सही। मगर कम्बख्त इस दफे दरवाजेपर पहुँचते ही चौंक पड़ा और बोला—"अरे यह नारंगीका छिलका दरवाजेकी आड़में कैसे आया? क्या बिल्लीने झाबा खोल डाला?

नारंगीके छिलकेका नाम सुनते ही मेरी नाक धौंकनीसी

चलने लगी। फर्शकी कुल गर्द एकही सांसमें एकदम दिमागमें पहुँच गयी; फिर तो हजार रोकनेपर भी ठायँ ठायँ ठायँ कई ताबड़तोड़ निकल पड़ीं।

कम्बख्तीके मारे छिली हुई नारंगी भी मेरे पाससे बरामद हो गई। अब इतना ही कहना काफी है कि अगर लँगड़ी टांगका ढांचा पहलेसे ही टूटा-फूटा न होता तो उफ! उस दिन उसके चंगुलसे जीता निकल भागना किसी तरहसे मुमकिन नहीं था, फिर भी उसने और उसके अचकाने-बचकाने जोरू-जांताने अपना हौसला कुछ बाकी नहीं रखा। उसपर भी कम्बख्तोंका पेट नहीं भरा और मुझे पुलिसकी इन्तजारीमें गुसलखानेमें बन्द रखना चाहते थे। किस तरह वहाँसे जान लेकर भागा, मुझे खुद ही नहीं मालूम; बल्कि दस बजे राततक मुझे विश्वास ही नहीं हो सका कि मैं जिन्दा हूँ।

पापाने अच्छा तार भेजा। यह कम्बख्त तार था या मेरे लिये मौतका नुस्खा? मैं क्या जानता था कि इसका मतलब यह होगा कि तुम अपना घर-बार मिस्टर डिकेन्सके लिये छोड़कर इस जाड़े-पालेकी रातमें सड़कोंपर भूखों मरो। मैं समझता था कि यह कम्बख्त मुझको ढूँढनेके लिये यहाँ अटका हुआ है, कुछ देरमें चलता हो जायगा।

मगर अब तो रङ्गतसे ऐसा जान पड़ा कि शायद वह यहांसे जाना आज भूल गया।

बलाकी सर्दी और पहाड़-सी रात उसपर मारे भूखके किसी तरह चैन ही नहीं पड़ता था। एक-एक मिनट काटना मुश्किल हो गया। उस वक्त पापाके खतका ख्याल आया। चलो, वक्त काटनेका मसाला तो मिला। सड़ककी रोशनीमें मैं उसे पढ़ने लगा।

पापाने बहुत-सी बेतुकी बात लिखनेके बाद लिखा था—"इसके साथ जो दूसरा खत भेजता हूँ, वह मैडम फैटीके लिये है, जो परदेशियोंके ठहरनेके लिये किरायेपर कमरे देती है। इस खतको पाते ही तुम मैडम फैटीको दे देना और तीन सजे-सजाये कमरे, एक ड्राइङ्ग रूम, एक बावर्चीखाना और एक गुसलखाना मेरे एक मुलाकाती मिस्टर डिकेन्सके लिये, जो वहाँ हवा-पानी बदलनेकी खातिर जानेवाले हैं; महीने भरके वास्ते सुरक्षित (Reserved) करा देना। कमरोंको तुम देख-भाल लेना, ताकि बादको उन्हें कोई शिकायत न हो। इनके पहुँचनेका वक्त मैं बादको तार देकर बताऊँगा। उसकी खबर तुम मैडम फैटीके पास भेज देना। वह स्टेशनपर इनके लिये सवारीका भी इन्तजाम कर देंगी।"

दोनों लेटर-पेपर मेरे हाथसे गिर पड़े। अब इसके आगे क्या पढ़ता? अपना सर? बस, कलेजा थामकर वहीं बैठ गया और एकदम महीनेभर तकके लिये।

(ङ)

मगर पापाने अपने खतमें जिस मैडम फैटीका जिक्र किया है वह है कैसी, आप अनुमान नहीं कर सकते। उनकी हुलिया चाहे कितनी ही बढ़ाकर बतायी जाय, फिर भी वह ठीक नहीं उतरती। क्योंकि वह इतनी मोटी हैं कि उनकी मोटाई कभी कल्पनामें समा ही नहीं सकती। अगर आप उनकी चारों तरफ खाली घूमना चाहें तो सच जानिये कई घण्टे लग जायंगे और बहुत मुमकिन है कि आप बीचमें ही हाँफकर बैठ जायँ और उनकी परिक्रमा पूरी न कर सकें। तभी तो वह संसार भरकी मोटी स्त्रियोंमें दस सालसे लगातार प्रथम होती आई हैं और नुमाइशोंमें बराबर तगमें पाती रही हैं। और तारीफ यह कि इस मोटाईपर एक दो नहीं; बल्कि सात पति सिलसिलेवार बलिदान भी हो चुके हैं। एक बेचारा सोहागरातहीको इनके करवटके नीचे पिचकर ऐंठ गया। दूसरा कम्बख्तीका मारा चौखटके भीतर इनके साथ पड़ जानेसे उसमें ऐसा अड़स गया कि फिर वह जीते जी उसमेंसे निकल न सका। तीसरा

इनके साथ रेलके कोनेमें बैठा सफर कर रहा था एक दफा मैडमने जो ज़रा कसके साँस ली तो पति साहब अपनी जगहपर दबकर ठण्डे हो गये। यही गति बाकी चारोंकी भी हुई।

इनकी उमर कुछ कम नहीं, पूरे साढ़े पचपन बरसकी थी, मगर मोटाईके मारे न इनके गालोंपर झुर्रियाँ पड़ीं और न कमर ही झुकी। जब जिन्दगीमें वह कभी अपने पैरके अँगूठे देख नहीं सकी हैं तो इनकी कमरके झुकनेका ख्याल करना बेकार है। यही हाल इनके गालोंका है, जिनकी खाल तीन-तीन इञ्च मोटी होनेके कारण कभी सिकुड़नेका नाम नहीं लेती, बल्कि उसने तो अपनी मोटाईसे चेहरे भरको इस तरह छाप रखा है कि दूरसे पता नहीं चलता कि उसमें आँख, मुँह और नाकके कहीं सुराख भी हैं या नहीं! मगर हाँ, वह मुण्डो अलबत्ता हो गया है। इसका हाल मुझे बड़ी मुशकिलोंसे मालूम हुआ और बड़े अजीब ढङ्गसे।

एक दिन मैं मछलीके शिकारसे अपने कन्धेपर डगन रख घर आ रहा था। रास्तेमें मैडम फैटी अपने फाटकपर ढेरकी ढेर खड़ी थीं। मैंने इन्हें सलाम करनेके लिये अपना टोप उठाना चाहा, तब जाना कि डगनकी कटिया पीछे

मेरे कोटमें फँस गई। सलाम करना तो गया भूल और लगा दोनों हाथसे डगन पकड़कर झटका देने। मगर इससे मेरे कोटके पीछे कुछ ऐसा जोर पड़ा कि मैं अपनेको सम्भाल न सका और जमीनपर अररर धड़ामसे मुँहके बल गिरा। मैडम ताली बजाकर खिलखिला पड़ीं। मगर अभी बेचारी हँस ही रही थीं कि मेरे गिरनेसे कटिया मेरे कोटसे छूटकर तड़ाकसे उनकी खोपड़ीपर जा लगी। मैं हड़बड़ाकर उठा और जल्दीसे डगन खींचा तो उनके नकली बालोंका गुच्छा कटियामें फँसकर निकल आया। वैसे ही मैं डगन लिये भाग खड़ा हुआ; क्योंकि उस वक्त मैडम की सूरत एकाएक ऐसी बिगड़ गयी थी कि कार्टूनिस्टके फिरिश्ते भी उसका नकशा नहीं उतार सकते हैं। ईश्वर सलामत रखे मेरी चचीको कि इन्होंने उनके बालोंके गुच्छेको ले जाकर उन्हें वापस किया और किसी-किसी सूरतसे यह मामला रफा-दफा किया। उस दिनसे फिर मैंने ऊपर जानेका हिम्मत नहीं की। मगर यह बात पापासे गुपचुप रखी गयी। नहीं तो पापा मुझे मैडमके पास जाकर मि० डिकेन्सके लिये कमरे ठीक करनेके लिये हर्गिज न लिखते।

हाँ, पहले मैं मैडमके यहाँ जरूर जाया करता था; क्योंकि अव्वल तो वह मुझे दुमकटी-हथिनीके सिवाय

किसी तरफसे भी खूबी नहीं मालूम होती हैं, जिससे उनके सामने मेरे झेंपनेवाले मिजाजके भड़कनेका डर हो। दूसरे उनकी इस सूरत शकल, डीलडौल बदन और ढांचेपर भी पतियोंका काफलाका काफला लगातार इनके चंगुलमें फँसते देखकर मुझे विश्वास था कि हो न हो, यह कोई वशीकरण मन्त्र जानती है, जिसको मैं भी जोरू फँसानेके लिये कुछ-न-कुछ इनसे सीख लेना चाहता था। मगर बहुत छानबीन करनेपर पता चला कि इनका पहला पति पहले एक जालके मुकदमेमें फंसा हुआ था, जिसमें मैडम सबूतकी मुख्य गवाह थीं। उसने झटसे इनसे शादी कर ली ताकि यह उसके खिलाफ गवाही न दें। दूसरा एक मुसाफिर था, जो इनके यहां आकर ठहरा था। उसपर इन्होंने चोरीका इलजाम लगाया। उस बेचारेने भी उनसे शादी कर लेनेमें ही अपनी बचत देखी। ऐसे ही हथकंडोंसे एक न-एक इनके जालमें बराबर फँसता ही रहा। यह हर वक्त इसकी ताकमें भी रहती हैं और इस फनमें ऐसी उस्ताद हैं कि जिसपर उन्होंने निगाह डाली; फिर क्या मजाल कि वह जीतेजी इनके पंजेसे निकल सके? अगर ऐसा न करें तो इनका काम भी न चले। क्योंकि इनके यहां किरायेपर मुसाफिरोंको ठहरानेके अलावा डबल रोटी और केक बना-

नेका भी कारबार होता है, जिसकी देखरेखके लिये यह अपनी चर्बी पिघल जानेके डरसे तन्दूरके पास खुद बैठ नहीं सकतीं। एक दफा बैठी थीं, मगर नतीजा यह हुआ कि कमरे भरमें कीचड़-ही-कीचड़ हो गया। किरायेके आदमियों-पर न इतना एतबार और न उनमें ऐसी मुस्तैदी। इसलिये कम-से-कम इस कामके लिये एक पति रखना जरूरी होता है।

मगर भाड़में जाएं वह और उनका काम। यहां सड़क पर जाड़ेकी रातकी ठंडी हवासे एक ही घंटेमें मिजाज ठण्डा हो गया। न दौड़ और न बैठक लगानेसे ही चैन मिलता था। बड़ी मुश्किलमें जान पड़ गई। कहाँसे पापाने मुझे इस मुसीबतमें फँसा दिया कि न मैं घरका रहा और न घाटका। और कहीं पापा और चाची दोनों आधी रातकी गाड़ीमें आ पड़ें तो मकान डिकेन्सके खानदानसे भरा हुआ पाकर उनकी भी यही गति होगी। वह लोग भी सड़क ही पर डंड पेलेंगे। उस वक्त सारा गुस्सा मुझीपर उतारा जायेगा और बादको यह 'खबर जहां मैडम फैटीके पास पहुँची कि मैंने अपने मेहमानको अपने यहाँ ठहराकर उनके किरायेका नुकसान किया, तहाँ मैं जिन्दा न बचूँगा। इस लिये बेहतर यही मालूम हुआ कि मैं इसी वक्त मैडम फैटीके

पास जाकर उनके पैरोंपर गिर पड़ूँ और अपनी भूलकी माफी मांगता हुआ उन्हें पापाका खत देकर कहूँ कि किसी-न-किसी तरह अपने मेहमानको अपने यहाँ बुलानेकी युक्ति करके मेरा उद्धार करें।

जिस वक्त मैं मैडमके यहाँ पहुँचा, ग्यारह बज चुके थे। मगर धन्य ईश्वरकी कृपा कि उस वक्त भी वहां चहल-पहल थी। सभी जग रहे थे। गोल कमरेमें एक तरफ ग्रामोफोन बज रहा था। एक तरफ कुछ मेहमान लोग ताश खेल रहे थे और बीचमें पहाड़की तरह मैडम फैटी खड़ी थी। मैं अपनी गरजका बावला था। दनदनाता हुआ मैडमके पास जाकर अलग हट चलनेका इशारा किया; क्योंकि वह जरा ऊँचा सुनती हैं।

जब मैडम दूसरे कमरेमें आईं, मैं झट उनके पैरोंपर गिर पड़ा और इसके बाद हाथ जोड़े चिल्ला-चिल्लाकर उनसे माफी माँगने लगा—"मैडम माफ कीजिये। मेरे कसूरोंको माफ कीजिये! अगर आप माफ न करेंगी तो फिर मैं दुनियाको मुँह न दिखाऊंगा, अभी जाकर डूब मरूँगा। ईश्वरके लिये मेरे प्राण बचाइये। मेरा उद्धार आपहीके हाथमें है।"

वह तुतलाकर बोलीं, क्योंकि जीभकी मोटाईके मारे

साफ उच्चारण नहीं कर पातीं—"त्या हुआ मिस्तल ताम दावुल ?"

मैंने जल्दीसे किसी तरह जेबसे पापाका खत निकालकर दिया और कहा—"पहले इसको पढ़ लीजिये, तब आगे कुछ कहूँ।"

वह जेबसे एक आतशी शीशा निकाल कर उसे अपनी एक आंखसे पढ़ने लगीं, क्योंकि उनकी दूसरी आँख शीशेकी है और चश्मा इस डरसे नहीं लगातीं कि शायद वह बूढ़ी न समझी जाएँ।

खत पढ़ते ही वह चिंघाड़ मारके हँस पड़ीं और इस खुशीमें वह इतनी फूलीं कि मैं समझा कि शायद यह अब कमरेमें समा न सकेंगी। उनकी यह रंगत देखकर मेरी जानमें जान आई और मैं भी हँस पड़ा।

अब वह लगीं चहकने—"अले मेले प्याले ताम, तुम इतने दिनों तत तैछे छबल तलते लहे ? जान गई झेंपते माले तुम छलमाते थे। अब न छलमाओ, मेले प्याले! मैं भी तुमतो प्याल तलती हूँ। मत घबलाओ, छवेले ही तुमाले छे ब्याह तला लूँगी। आओ, प्याले तुमतो तलेदेछे लगा लूं।"

अररररर! यह क्या गजब हुआ ? यह यकायक पागल

हो गयी क्या! मेरी हक्की-बक्की बन्द हो गयी। मैं जो कुछ कहनेवाला था, सब भूल गया। बस, घबड़ाकर उसका मुँह देखने लगा। इतनेमें उसने सचमुच मुझे लोमड़ीकी तरह उठाकर अपनी गोदमें कस लिया और दनादन मेरा मुख चुम्बन करने लगी। मैं और घबड़ा गया। जितना ही मैं घबड़ाकर अपना मुंह इधर-उधर झटकता था, उतना ही उस दुमकटी हथिनीका जोश बढ़ता जाता था। यहाँतक कि एक दफा मेरी नाक उसके मुँहके निशानेपर पड़ गयी, तो वह उसी पर हमला कर बैठी। नतीजा यह हुआ कि उसके दोनों जबड़े उसीपर कचसे बैठ गये। मैं चिल्लाकर पिछड़ा और अब उसके हाथ यकायक ढीले पाकर मैं जान छुड़ाकर भागा। मगर अफसोस! भूलसे मैं गोल कमरेमें घुस पड़ा। सब लोग मुझे देखते ही चीख उठे—"अरे! यह तुम्हारी नाकपर क्या लगा है!"

अब जो नाकपर हाथ फेरा, तो जाना कि हाय! हाय! मैडमके नकली जबड़े मेरी नाकको दाबे उसके मुँहसे निकल आये हैं और कम्बख्त अबतक वैसे ही मेरी नाकपर लटक रहे हैं। उसके दोनों हिस्से टूटे हुए होनेके कारण बुढ़ियाने तारसे उन्हें न जाने किस तरह बांध रखा था कि दोनों उसीमें उलझकर इस तरह आपसमें गुथ गये थे कि उस

वक्त किसीकी हिकमतोंपर भी वह न छूटा । वहाँ तो लोगोंका हँसीसे बुरा हाल था । उसको मेरी नाकसे छुड़ानेके लिये किसीकी अक्ल क्या खाक काम करती ? आखिर मैडम फैटीने आकर मेरी नाकका उद्धार किया और बोलीं—

'यह मेले दांतता वझूल (कसूर) नहीं है । तेला नाम झंपू है । उसे चुम्वन लेना नहीं आता । इछ जोल छे इछने अपनी नात मेले मुँहमें थूछ दी ति मेले दांत निताल लाया । मगल मैं इतकी मुहब्बत छे तुछ (खुश) हूँ । यह मेले भावी पति हैं और छब पतियोंछे यह वल्हकल नितलेंगे । यह मुझे बिछवाछ है—"

मेरी समझमें खाकवला कुछ भी नहीं आया । बस, इतना जानता हूँ कि एक दफा मैंने चिल्लाकर कहा—"नहीं, नहीं, हर्गिज नहीं ।"

वह बमक उठी—"तैछे (कैसे) नहीं ? मत छलमाओ । तुम्हाला प्लेम अब छिपाने छे छिप छतता (सकता) । तुम उछे मेले पैलपल दिल तल दिथा चुते हो (पैरपर गिरकर दिखा चुके हो) । औल तुम्हारे प्लेम चुम्बनता छबूत छबने देथा [देखा] है ।"

मेहमान लोग भी ताईद करने लगे—"हां, हाँ, और इन-

का आपके पैरोंपरका गिड़गिड़ाना भी सुना है। बहुत चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे थे कि मेरा उद्धार आपके ही हाथमें है।"

मैडम फैटी—"यहीं तत नहीं। इछता यह प्लेमपत्र तो देथिये (देखिये) जो इछने हमतो दिया है।"

यह कहकर उस खतको सभोंकी हँसीके बीचमें पढ़कर सुनाने लगी, जिसे मैंने पापाका खत समझकर उसे दिया था।

अब सारा रहस्य समझमें आ गया। हाय! हाय! गजब हो गया! लुट गया! बरबाद हो बेमौत मर गया। क्योंकि वह पापाका खत नहीं था बल्कि भूलसे उसे मैं वह खत दे बैठा था, जो किसी प्रेमिकाको देनेके लिये आज मैंने प्रेमपत्रोंवाली किताबसे नकल किया था और हाय! अफसोस! उसे भी कम्बख्तोंके मारे मैंने जल्दीमें जेबमें ही रख लिया था। मैं वहीं सर पकड़ कर बैठ गया।

❀ ❀ ❀ ❀

मेरी किस्मतमें तो यह दुमकटी हथिनी लिखी हुई थी वह भी कैसी? सोलहो कला सम्पन्ना अर्थात् मोटी, बुड्ढी, बहरी, मुण्डी, कानी और बेदाँतकी, तब मैं हूर परी या कोई युवती कहांसे पाता? वाह. री तकदीर! सैकड़ों जगहें

ठोकरें खाईं और आखिर फँसा तो कहाँ ? और इस बुरी तरह कि इस हथिनीके पंजेसे मुझे दुनियामें कोई छुड़ा नहीं सकता था। पापा और अण्टी भी पहुँची कब, जब दूसरे दिन मेरी शादी हो चुकी।

पापाने झल्लाकर मुझसे कहा—"इससे तो अच्छा यह था कि तू जन्मभर झेंपू ही बना रहता—बिन ब्याहा ही रहता।"

मैंने जवाब दिया—"हाँ, तब करवटके नीचे दबकर मुझे मरनेका अन्देशा न रहता। इसलिये कृपया आप मुझे विवाहोपहारमें एक तावूत दीजिये, ताकि मेरे मरनेके बाद उसके बनवानेका झंझट न रहे। छोटा ही चाहिये, क्योंकि मेरी लाश चिपककर बहुत छोटी हो जायगी।"

❀ बस ❀